कर्मकाण्डः कक्षा ६

नेपालसर्वकारः शिक्षाविज्ञानप्रविधिमन्त्रालयः पाठ्यक्रमविकासकेन्द्रम् सानोठिमी-भक्तपुरम् प्रकाशकः

नेपालसर्वकारः

शिक्षाविज्ञानपविधिमन्त्रालयः

पाठ्यक्रमविकासकेन्द्रम्

सानोठिमी-भक्तपुरम्

प्रस्तुतपाठ्यपुस्तकसम्बन्धिनः सर्वेऽधिकाराः पाठ्यक्रमविकासकेन्द्रस्य स्वामित्वेऽन्तर्निहितास्सन्ति । लिखितां स्वीकृतिं विनाऽस्य पुस्तकस्य पूर्णभागस्य रकांशस्य वा यथावत् प्रकाशनम्, परिवर्त्य प्रकाशनं तथा केनाऽपि वैद्युतेन साधनेन अन्येन प्रविधिना वा यन्त्रप्रयोगेण प्रतिलिपिनिस्सारणञ्च सर्वथा निषिद्धं वर्तते ।

सर्वेऽधिकाराः प्रकाशकाधीनाः

प्रथमसंस्करणम् - २०७८

अस्मदीयं कथनम्

विद्यालयस्तरीयशिक्षामुद्देश्यप्रधानां व्यावहारिकीं सामयिकीं वृत्तिदायिनीं च विधातुं समये समये पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकविकास-परिमार्जनानुकूलनकार्याणि निरन्तरं सञ्चाल्यमानानि सन्ति । विद्यार्थिषु राष्ट्राष्ट्रियते सम्मानभावनामुद्रभाव्य नैतिकानशासन-स्वावलम्बनादि-सामाजिक-चारित्रिक-गुणानामाधारभृत-भाषिकशिल्पस्य विकासपूर्वकं सहयोगात्मकस्य दायित्वपूर्णस्य चाऽऽचरणस्य विकासोऽद्यत्वे आवश्यको दृश्यते । अस्या रुवावश्यकतायाः परिपूर्तये शिक्षासम्बद्धैर्महानुभावैः सिम्मिलतानां गोष्ठीनामन्तःक्रियायाश्च निष्कर्षेण निर्मितं २०७८ तमस्य वैक्रमाब्दस्य पाठ्यक्रममनुसत्य पुस्तकमिदं निर्मितं वर्तते । शिक्षा विद्यार्थिषु वर्तमानस्य ज्ञानपक्षस्यान्वेषणं विधाय शिक्षणशिल्पेन जीवनस्य सम्बन्धं स्थापयति । शिक्षया विद्यार्थिष् स्वाधिकारस्य.स्वतन्त्रतायाः.समानतायाश्च प्रवर्धनाय.स्वस्थजीवनस्याभ्यासाय,तार्किकविश्लेषणेन निर्णयाय. वैज्ञानिकविश्लेषणेन व्यक्ति-समाज-राष्ट्राणां सबलविकासाय चाग्रेसरणशीलं सामर्थ्यं विकसनीयम् । एवं व्यक्तेः नैतिकाचरणप्रदर्शनाय, सामाजिकसद्भावप्रवर्धनाय, पर्यावरणस्य समुचितप्रयोगशिक्षणाय, दृढशान्तौ पतिबद्धतायै च शिक्षायाः आवश्यकता समाजे अवलोक्यते । तेन समाजसापेक्षतया ज्ञान-शिल्प-सूचना-सञ्चार-प्रविधीनां प्रयोगसमर्थाः, स्वावलिम्बनः, व्यावसायिकशिल्पाभ्यासनिरताः, राष्ट्रं राष्ट्रियतां राष्ट्रियादर्श च प्रति सम्मानविधायकाः, समाज-स्वीकार्याः, सदाचरणशीलाः, स्वसंस्कृति-संस्कारपालनपराः, परसंस्कृत्यादिषु सिहष्णवश्च नागरिकाः शिक्षया निर्मातव्याः । रग्वं कल्पनाशीलानां रचनाशिल्पिनाम्, नैरन्तरिकपरिश्रमेणोद्यमशीलानाम्, विचारे उदात्तानाम्, व्यवहारे आदर्शमयानाम्, सामयिकसमस्यानां व्यवस्थापने साफल्याधायकानाम्, स्वावलिम्बनाम्, देशभक्तानाम्, परिवर्तनोद्यतानाम्, चिन्तनशीलानाम्, समावेशिसमाजनिर्माणे योगदानं करिष्यमाणानां च नागरिकाणां निर्माणं शिक्षया विधातव्यमिति समाजस्यापेक्षा दृश्यते । इमानेव पक्षान् विचार्य 'राष्ट्रिय-पाठ्यक्रम-प्रारूप, २०७६' इत्यनुसारेण निर्मितस्य कर्मकाण्डविषयकपाठ्यक्रमस्याधारेण षष्ठ्याः कक्षायाः पाठ्यपुस्तकमिदं विकसितं वर्तते ।

सर्वप्रथमं डा. ऋषिराम-पोखरेलः, केशवः अधिकारी, शम्भुप्रसाद-दाहालः, हरि-गौतमप्रभृतीनां महानुभावानां कार्यदलेन लिखितिमदं पुस्तकं डा. रुद्रप्रसादः मिश्र, शिवप्रसादः धिमिरे, अशोकः पौडेल, पुरुषोत्तमः धिमिरे- प्रभृतीनां महानुभावानां कार्यदलेन परिमार्जितं सम्पादितञ्चास्ति । अस्य पाठ्यपुस्तकस्य विकासे पाठ्यक्रमसिद्धान्तसंरचनयोः नवीनतमधारणामनुसृत्य परम्परागतानां शिल्पानामनुसरणं कृतमस्ति । अस्मिन् कार्ये अस्य केन्द्रस्य महानिर्देशकः अणप्रसादः न्यौपाने, डा. ऋषिरामः रेग्मी, डा. पुरुषोत्तमः भट्टराई, मनोजः धिमिरे, टुकराजः अधिकारी-प्रभृतीनां महानुभावानां विशेषसहयोगो विद्यते । अस्य चित्राङ्कनं टङ्कणं रूपसज्जा चेत्यादिकं खडोससुनुवार इत्याख्येन महानुभावेन कृतमस्ति ।

पाठ्यपुस्तकं शिक्षणप्रक्रियाया महत्त्वपूर्णसाधनं भवतीति नाविदितं शेमुषीमताम् । सानुभवाः शिक्षकाः, जिज्ञासवरुखात्राः, सविधिकर्मकराश्च पाठ्यक्रमलक्ष्यीकृतान् विषयान् नैकविधस्रोतसां साधनानाञ्चोपभोगेन अध्यापयितुमध्येतुं कर्म कर्तुं च प्रभवन्ति । अनेकैः कारणैः सर्वेष्वेव विद्यालयेषु सरलतया पाठ्योपकरणानामुपलब्धेरभावाद् अध्ययनकार्यं केवलं पाठ्यपुस्तकाश्रितं भवतीति तथ्यमात्मसात्कृत्य प्रस्तुतिमदं पाठ्यपुस्तकं यथासम्भवं स्तरयुतं विधातुं प्रयासो विहितः, तथापि पाठ्यपुस्तकेऽस्मिन् यत्र यत्र त्रुटयोऽल्पताश्च विदुषां दृष्टिपथमागच्छेयुस्तत्र तत्र परिष्कारे परिवर्धने च दृग्गोचरीभूतानां त्रुटीनां परिमार्जनादिकार्यजाताय परामर्शप्रदानविधौ शिक्षकच्छात्राभिभावकपाठकविशेषज्ञानां महती प्रभावकारिणी भूमिका भवति । अत उक्तविषयेषु रचनात्मकपरामर्शदानेनोपकर्तुं पाठ्यक्रमविकासकेन्द्रमिदं तांस्तान् सर्वनिव महानुभावान् सप्रश्रयमभ्यर्थयते ।

नेपालसर्वकारः शिक्षाविज्ञानप्रविधिमन्त्रालयः पाठ्यक्रमविकासकेन्द्रम्

विषयसूची

| खण्ड | : 9 | | पृष्ठसङ्ख्या |
|------|--------|-----------------------|--------------|
| (ক) | प्रातज | र्गिगरणम् | 9 |
| | (31) | नित्याचाराः | ٩ |
| | (आ) | प्रातरुत्थानकालः | ą |
| | (इ) | करावलोकनम् | ર |
| | (ई) | भूमिवन्दना | ą |
| | (उ) | मङ्गलवस्तुदर्शनम् | ર |
| (ख) | शौचा | चारः | Ŋ |
| | (哥) | शौचावश्यकता | มู |
| | (आ) | शौचविधिः | ď |
| | (इ) | मृत्तिकालेपनम् | Ŋ |
| | (ई) | गण्डूषविधिः | Ę |
| | (उ) | दन्तधावनविधिः | Ę |
| | (ক্ত) | मौनधारणम् | Ę |
| खण्ड | ີ: ຊ | | |
| | प्रातः | स्तुतिः | ९ |
| | (ক) | गणेशस्तुतिः | ٩ |
| | (ख) | विष्णुस्तुतिः | ٩ |
| | (ग) | शिवस्तुतिः | ९ |
| | (ঘ) | सूर्यस्तुतिः | 90 |
| | (ङ) | देवीस्तुतिः | 90 |
| | (ਹ) | नवग्रह स्तुतिः | 90 |
| | (ন্তু) | ऋषिस्तुतिः | 90 |

| | (ज) | प्रकृतिस्मरणम् | 99 |
|-------|-------|--------------------|-----|
| | (新) | पुण्यश्लोकाः | 99 |
| खण्डः | : 3 | | |
| | स्नान | म् | 98 |
| | (ক) | स्नानभेदाः | 98 |
| | (ख) | स्नानविधिः | ٩4 |
| | (ग) | तीर्थप्रार्थना | ٩4 |
| | (घ) | स्नानम् | ٩& |
| | (ङ) | हस्ततीर्थानि | 90 |
| | (च) | स्नानाङ्गतर्पणम् | 90 |
| खण्डः | 8 | | |
| | सामा | न्यसन्ध्याविधिः | ସ୍ୟ |
| | (ক) | आसनशुद्धिः | રૂઢ |
| | (ख) | भरमधारणम् | રૂર |
| | (ग) | पवित्रधारणम् | 28 |
| | (घ) | शिखाबन्धनम् | 28 |
| | (ङ) | आचमनम् | 28 |
| | (ਹ) | प्राणायामः | 28 |
| | (ত্ৰ) | पुनराचमनम् | อุม |
| | (ज) | मार्जनम् | 2& |
| | (班) | अघमर्षणम् | રફ |
| | (স) | सूर्यार्घ्यः | 20 |
| | (ट) | सूर्योपस्थानम् | 20 |
| | (ත) | गायत्रीषडङ्गन्यासः | ՉՇ |
| | (ड) | गायत्र्यावाहनम् | રૂલ |

| | (ढ) | गायञ्युपस्थानम् | રૂલ |
|-------|---|---|--|
| | (ण) | गायत्रीध्यानम् | ર૧ |
| | (त) | गायत्रीशापविमोचनम् | 30 |
| | (थ) | मुद्राप्रर्दशनम् | 39 |
| | (द) | गायत्रीजपः | રૂર |
| | (ध) | उत्तराङ्गमुद्राप्रदर्शनम् | રૂર |
| | (न) | जपसमर्पणम् | 3 8 |
| | (प) | सन्ध्याविसर्जनम् | 3 8 |
| खण्डः | ų | | |
| | भोजन | ाशयनविधिः | 30 |
| | (ক) | सङ्क्षिप्तभोजनविधिः | 30 |
| | (ख) | सङ्क्षिप्तशयनविधिः | રૂલ |
| खण्डः | & | | |
| | ПОТП | ङ्गजानम् | 83 |
| | 4341 | ું ગયા ગ મુ | ૦થ |
| | (क) | संवत्सराः | 88 |
| | (ক) | | |
| | (ক) | संवत्सराः | 88 |
| | (ক) (ख) | संवत्सराः अयने | 88 88 |
| | (ক) (ख) (ग) | संवत्सराः अयने ऋतवः | 88 88 |
| | (ক) (ख) (য) (ঘ) | संवत्सराः अयने ऋतवः मासाः | 88 88 88 |
| | (ক) (অ) (ग) (ঘ) (ङ) | संवत्सराः अयने ऋतवः मासाः पक्षौ | 84 88 88 88 |
| | (क) (ख) (ग) (घ) (ङ) (च) | संवत्सराः अयने ऋतवः मासाः पक्षो | 84 84 88 88 |
| | (क) (ख) (ग) (घ) (ङ) (च) | संवत्सराः अयने ऋतवः मासाः पक्षौ तिथयः वासराणि | 88 88 88 88 88 88 88 88 88 88 88 88 88 |
| | (क) (ख) (IJ) (B) (당) (대) (당) | संवत्सराः अयने ऋतवः मासाः पक्षौ तिथयः वासराणि | 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 |
| | (क) (ख) (ग) (घ) (ड) (च) (ਓ) (ज) (भ) | संवत्सराः अयने ऋतवः मासाः पक्षो तिथयः वासराणि नक्षत्राणि | 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 |

खण्डः ७

| | सङ्क | ल्पः यज्ञोपवीतधारणविधिः च | 8९ |
|-------|--------|---|----------------|
| | (ক) | विशेषवाक्ययोजनपूर्वकं सङ्कल्पज्ञानम् | 8९ |
| | | (अ) सङ्कल्पवाक्यम् | 8९ |
| | | (आ) प्रायश्चित्तगोदानम् | ¥0 |
| | (ग) | सङ्क्षिप्तयज्ञोपवीतधारणविधिः | สร |
| खण्डः | ζ | | |
| | देवपूर | जाविधिः | ਸ਼ 8 |
| | (ক) | पञ्चगव्यनिर्माणविधिः | 4 8 |
| | (ख) | स्वस्तिवाचनमन्त्राः | มม |
| | (ग) | कर्मपात्रनिर्माणम् | ¥0 |
| | | (अ) पवित्रच्छेदनं निर्माणञ्च | ¥0 |
| | | (आ) कर्मपात्रनिर्माणार्थमावश्यकान्युपकरणानि | Ä0 |
| | | (इ) कर्मपात्रनिर्माणम् | ¥0 |
| | (ঘ) | अर्घ्यस्थापनम् | ધ્રલ |
| | | (अ) अर्घ्यस्थापनार्थमावश्यकान्युपकरणानि | ৸৻ |
| | | (आ) अर्घ्यस्थापनम् | ધ્ર |
| खण्डः | ९ | | |
| | पञ्चा | यतनदेवतापूजाविधिः | હ્ |
| | (ক) | पञ्चायतनदेवतास्थापनक्रमः | હ્રર |
| | | (अ) विष्णुपञ्चायतनम् | હ્રર |
| | | (आ) शिवपञ्चायतनम् | & 3 |
| | | (इ) गणेशपञ्चायतनम् | & 3 |
| | | (ई) सूर्यपञ्चायतनम् | & 8 |
| | | (उ) देवीपञ्चायतनम् | &8 |
| | | | |

| (ख) | पञ्च | ायतनदेवतापूजाविधिः | ٤ų |
|-----|-------------|----------------------------|----------------|
| (ग) | तत्राव | दौ विष्णुपञ्चायतनपूजाविधिः | ٤Ą |
| | ٩. | ध्यानम् | હ્ય |
| | ૨. | आवाहनम् | હૃહ્ |
| | 3 . | आसनम् | &\o |
| | 8. | पाद्यम् | &\o |
| | ¥. | अर्घ्यम् | &\o |
| | હૃ. | आचमनम् | &\o |
| | ७. | स्नानम् | & ۲ |
| | ζ. | पञ्चामृतस्नानम् | چ ۲ |
| | ٩. | गन्धोदकस्नानम् | چ ۲ |
| | 90. | शुद्धोदकस्नानम् | 5 |
| | 99. | वस्त्रम् | ६९ |
| | ٩२. | यज्ञोपवीतम् | ६९ |
| | ૧ą. | चन्दनम् | ६९ |
| | 98. | पुष्पाणि पुष्पमाला च | ६९ |
| | ٩٤. | तुलसीदलम् | 60 |
| | ٩६. | धूपः | 60 |
| | 96. | दीप: | 60 |
| | ٩٢. | नैवेद्यम् | 60 |
| | ٩९. | ऋतुफलम् | 69 |
| | 20. | ताम्बूलम् | 69 |
| | ୬ ୩. | दक्षिणा | 69 |
| | ૨૨. | नीराजनम् | |

| | | ર ૂ. | प्रदक्षिणा | ७२ |
|-------|----------|-------------|------------------------------|------------|
| | | ર8. | मन्त्रपुष्पाञ्जलिः | ७ २ |
| | | રૂપ્ર. | नमस्कारः | ७३ |
| | | २ ६. | अर्घ्यनिवेदनम् | ७३ |
| | | २ ७. | क्षमापनम् | ७३ |
| | | ą۲. | अर्पणम् | 68 |
| | | ૨९. | ततोऽच्युतस्मरणम् | 68 |
| | | 3 0. | चरणामृतपानम् | 68 |
| खण्डः | 90 | | | |
| | रङ्ग | वल्लीर | चना | 6 |
| | (ক) | रुद्राधि | भेषेकार्था रङ्गवल्ली | (હિં |
| | | (31) | रुद्राभिषेकस्य रङ्गवल्लीरचना | ७ & |
| | | (आ) | सामान्यपूजायाः रङ्गवल्लीरचना | 00 |
| | (ख) | रुद्रीप | ाठे दिवसविचारः | 00 |
| खण्डः | 99 | | | |
| | रुद्राधि | भेषेकः | | ۲9 |
| | (ক) | रुद्राधि | भेषेकविधिः | ۲၃ |
| | | (3) | वरणम् | ۲3 |
| | | (आ) | पुण्याहवाचनम् | ۲۶ |
| | | (इ) | दीपपूजा | ٥2 |
| | | (ई) | गणेशपूजा | ۲۲ |
| | | (ড) | कलशपूजा | ζ٩ |
| | | (ক্ত) | रक्षाबन्धनपूजा | ९२ |
| | | (来) | प्रधानदेवतापूजा | ९8 |
| | | (溧) | नाममन्त्रेण सङ्क्षिप्तपूजा | ९९ |
| | | | | |

| (ख) | रुद्रा | भेषेकान्तर्गतः षडङ्गन्यासः शतरुद्रीयमन्त्रपाठक्रमश्च | 909 |
|-----|--------|--|-----|
| | (哥) | रुद्राध्यायस्य प्रथमाध्यायपाठः | 909 |
| | (आ) | द्वितीयाध्यायस्य षोडशमन्त्रपाठः | 909 |
| | (इ) | द्वितीयाध्यायस्य अवशिष्टमन्त्रपाठः | 909 |
| | (ई) | तृतीयाध्यायस्य पाठः | 909 |
| | (ড) | चतुर्थाध्यायस्य पाठः | 909 |
| | (ক্ত) | पञ्चमाध्यायस्य षोडशमन्त्रपाठः | 902 |
| | (聚) | तत्र शतरुद्रीयमन्त्रपाठक्रमः | 902 |
| | (霁) | अथ शान्तिपाठक्रमः | 902 |
| (স) | रुद्रा | भेषेक: | 903 |
| | (哥) | षडङ्गन्यासः | 903 |
| | (आ) | शतरुद्रीयमन्त्रपाठः | 908 |
| | (इ) | सद्योजातादिमन्त्रपाठः | 920 |
| (घ) | शिवर | स्य विशेषपूजा | 920 |
| (ङ) | उत्तर | ा ङ ्गकर्म | 128 |
| | (31) | अर्घ्यनिवेदनम् | 128 |
| | (आ) | पूर्णपात्रम् | 128 |
| | (इ) | दक्षिणासङ्कल्पः | ૧૨૫ |
| | (ई) | विसर्जनम् | ๆ२५ |

शिक्षकलाई निर्देशन

- रुद्राभिषेकलगायत यस पुस्तकमा उल्लेख भर्या अन्य विधिमा समेत उल्लेख भर्या अनुसार शिक्षकले विद्यार्थीलाई प्रयोगात्मक सिकाइ गर्ने अवसर दिनुहोस् ।
- ययोगात्मक सिकाइको अवसर दिँदा सम्भव भरसम्म कक्षामा नै रुद्राभिषेकादिलाई आवश्यक वस्तुहरू जम्मा गरी विद्यार्थीले आफैँ प्रयोग गर्न सक्ने गरी सारा अङ्गकर्म (पुण्याहवाचन, दीप, गणेशपूजा, कलश, रक्षाबन्धनपूजा र उत्तराङ्गकर्म) प्रधानकर्म र शिवजीको पञ्चामृतले स्नानलगायत अन्य कर्म गरेर बुक्ताइदिने अथवा शिवजीको मन्दिरमा वा अन्य कसैका घरमा रुद्राभिषेक भइरहेको ठाउँमा लगी प्रयोग गरे गरारको देखाई बुक्ताइदिनुहोस् ।
- इ. पाठ्यपुस्तकमा सिम्मिलित कर्मकाण्ड सम्बद्ध अन्य विधिमा समेत यथासम्भव कर्म हुने स्थानमा लगी अवलोकन गर्ने, सम्बन्धित कार्यमा सहयोग गर्ने र नेतृत्व लिई कार्य सम्पादन गर्ने अवसर प्रदान गर्नुहोस् ।
- 8. मन्त्र सम्बद्ध विषयवस्तु वा पाठको शिक्षण गर्दा उदात्तादि सारस्वर र ह्रस्वदीर्घप्लुतोच्चारण राम्ररी शुद्धसँग सिकाउनुहोस् । यस क्रममा विद्यार्थीलाई पाटीमा लेखाउने प्रयोगको स्लाइड देखाउने, रेकर्ड सुनाउने पनि गर्नुहोस् ।
- ध. विद्युतीय सञ्चारका साधनमा उपलब्ध सामग्री, विकसित श्रव्य, दृश्य वा श्रव्यदृश्य सामग्रीको उपयोग गरी कक्षाकोठाको सिकाइलाई जीवन्त बनाउनुहोस् ।
- ६. निर्धारित विषयवस्तुमा आधारित क्रियात्मक अभ्यास गराउँदा ब्राह्मणलाई कर्ताका रूपमा ग्रहण गर्नुहोस् र सबैलाई क्रियात्मक अभ्यास गर्ने तथा गराउने अवसर प्रदान गर्नुहोस् ।

मङ्गलाचरणम्

लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तं रक्ताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम् । उद्यद्दिवाकरिनभोज्ज्वलकान्तिकान्तं विघ्नेश्वरं सकलविघ्नहरं नमामि ॥

परिचय

कुनै पिन संस्कार निश्चित नियमभित्र बाँधिरको हुन्छ, जुन व्यक्ति नियमभित्र बर्दछ, त्यस व्यक्तिको आज अर्थात् वर्तमान अत्यन्त शान्त र सुन्दर बन्दछ । यसरी वर्तमानलाई सुन्दर बनाउने हो भने समग्र जीवन सुन्दर बन्दछ । यस किसिमले आफ्नो जीवन अत्यन्त शान्त, सुन्दर र सुव्यवस्थित बनाउन हामी निश्चित नियमभित्र बरनुपर्दछ ।

मानिसको जीवन सुन्दर बनाउनका लागि यहाँ केही शास्त्रीय नियम यहाँ बताइरका छन्। हामीले यति मात्र गर्ने सङ्कल्प गऱ्यौँ भने पनि हाम्रो जीवन अवश्य नै शान्त, सुखी र सुन्दर हुन्छ।

(अ) नित्याचाराः

सन्ध्या स्नानं जपो होमः स्वाध्यायो देवतार्चनम् । वैश्वदेवातिथेयञ्च षट्कर्माणि दिने दिने ॥

- पराशरः

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥

- गीता ३३५

(आ) प्रातरुत्थानकालः

ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्। कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च॥

- मनुस्मृतिः

(इ) करावलोकनम्

प्रातरुत्थानानन्तरं स्वकरावलोकनम् ॐ कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम् ॥
- आचारपदीपः

(ई) भूमिवन्दना

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते ।
 विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥
 मदनपारिजातः

(उ) मङ्गलवस्तुदर्शनम्⁹

रोचनं चन्दनं हेम मृदङ्गं दर्पणं मिणम् ॥ गुरुमग्निं रविं पश्येन्नमस्येत् प्रातरेव हि ॥

- कात्यायनः

॥ इति ॥

१. श्रोत्रियं सुभगां गां च अग्निमग्निचितं तथा ।प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स प्रमुच्यते ॥ – नागदेवः

शब्दार्थाः

नित्याचारः = सधैँ गर्नुपर्ने कर्म

करावलोकनम् = हात हेर्नु

भूमिवन्दना = पृथ्वीको प्रार्थना

मङ्गलवस्तुदर्शनम् = माङ्गलिक वस्तुको दर्शन गर्नु

जपः = मनमनमा कुनै मन्त्रलाई बारम्बार दोहो-याउनु

सन्ध्या = प्रातः, मध्याह्र र सायङ्कालमा गरिने गायत्रीको उपासना

रनानम् = सम्पूर्ण शरीरलाई जल आदिद्वारा विधिपूर्वक नुहाउनु

होमः = विधिपूर्वक देवतालाई आहुति दिनु

स्वाध्यायः = आआफ्नो परम्पराअनुसार वेदादि विद्या पढ्नु

देवतार्चनम् = देवताको पूजा

वैश्वदेवम् = भोजन गर्नुअघि सबै देवतालाई हवन आदि गरिने कार्य

आतिथेयम = अतिथिसत्कार

दिने दिने = प्रतिदिन

रोचनम = गोरोचन

हेम = सुन, सुवर्ण

मृदङ्गम् = वाद्यविशेष

पर्वतस्तनमण्डितं = पर्वतरूपी स्तनद्वारा सुशोभित भरकी (पृथ्वी)

समुद्रवसने = समुद्ररूपी वस्त्र लगारकी (पृथ्वी)

क्षमस्व = क्षमा गर्नुहोस्

गुरुम् = अज्ञानलाई हटारुर ज्ञान दिने व्यक्तिलाई

अभ्यासः

| ٩. | अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं वदत लिखत च | |
|------------|--|---------------|
| | (क) किं किं कर्म प्रतिदिनं क्रियते ? | |
| | (ख) स्वकरावलोकनमन्त्रः कः ? | |
| | (ग) भूमिवन्दना का ? | |
| | (घ) माङ्गलिकवस्तूनि कानि ? | |
| | (ङ) प्रातः कदा बुध्येत ? | |
| 2 . | शिक्षकसहयोगेन शब्दान् पृथक्कुरुत | |
| | उदाहरणम्- लम्बोदरम् = लम्ब + उदरम् | |
| | रक्ताम्बरम् = | |
| | देवतार्चनम् = | |
| | वैश्वदेवातिथेयञ्च = | |
| | धर्मार्थौ = | |
| | चानुचिन्तयेत् = | |
| | पश्येन्नमस्येत् = | |
| 3 . | रिक्तस्थानं पूरयत | |
| | (क) सन्ध्या स्नानं | दिने दिने। |
| | (ख) कराग्रे वसते | करदर्शनम् । |
| | (ग) रोचनं चन्दनं | प्रातरेव हि ॥ |

शौचाचारः

(अ) शौचावश्यकता

```
शौचे यत्नः सदा कार्यः शौचमूलो यतो द्विजः ।
शौचाचारिवहीनस्य समस्ता निष्फलाः क्रियाः ॥
- दक्षरमृतिः
```

(आ) शौचविधिः

```
सङ्क्षिप्तशौचविधिः

दिवा सन्ध्यासु कर्णस्थब्रह्मसूत्रमुदङ्मुखः ।

कुर्यान्मूत्रपुरीषे च रात्रौ चेद्दक्षिणामुखः ॥

- याज्ञवल्क्यरमृतिः

मूत्रे तु दक्षिणे कर्णे पुरीषे वामकर्णके ।

उपवीतं सदा धार्यं मैथुने तूपवीतिवत् ॥

- आह्निकम्

अन्तर्धाय तृणैर्भूमिं शिरः प्रावृत्य वाससा ।

वाचं नियम्य यत्नेन ष्ठीवनोच्छ्वासवर्जितः ॥

- देवीभागवतम्

इति शौचं कृत्वा
```

(इ) मृतिकालेपनम्

```
एका लिङ्गे गुदे तिसस्तथा वामकरे दश ।
उभयोः सप्त दातव्या मृदः शुद्धिमभीप्सता ॥
- मनुस्मृतिः ५.१३६
इति मृत्तिकालेपनपूर्वकं प्रक्षालनं कुर्यात् ।
```

```
(ई) गण्डूषविधिः
```

```
सङ्क्षिप्तगण्डूषविधिः
      क्यांद् द्वादश गण्डुषान् प्रीषोत्सर्जने ततः।
      म्त्रोत्सर्गे च चत्रो भोजनान्ते त् षोडश ॥
      भक्ष्यभोज्यावसाने त् गण्डुषाष्टकमाचरेत्॥
                                                     - आश्वलायनः
(उ) दन्तधावनविधिः<sup>१</sup>
      दन्तधावनावश्यकता -
      मुखे पर्युषितं नित्यं भवत्यप्रयतो नरः।
      दन्तधावनमृद्दिष्टं जिह्नोल्लेखनिका तथा ॥
                                                    - अत्रिः
      दन्तधावने वनस्पतिपार्थना
      आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापश्वस्ति च ॥
      बहमपूजां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ - विश्वामित्रकल्पः
     ततो दन्तधावनम
      🤏 अन्नाद्याय व्युहध्व ६ सोमो राजाऽयमागमत् ।
      स मे मुखं प्रमार्क्यते यशसा च भगेन च ॥
     इति मन्त्रेण यत्नेन शुद्धचर्थ दन्तान् धावयेत्॥
(ऊ) मौनधारणम
      सन्ध्ययोरुभयोर्जाप्ये भोजने दन्तधावने ।
      पित्कार्ये च दैवे च तथा मुत्रप्रीषयोः ॥
      गुरूणां सन्निधौ दाने योगे चैव विशेषतः।
      एतेषु मौनमातिष्ठन्स्वर्गं प्राप्नोति मानवः॥ - अङ्गिराः
```

॥ इति शौचाचारः ॥

चतुर्दश्यष्टमी दर्शः पूर्णिमा सङ्क्रमो रवेः ।
 श्राद्धे जन्मदिने चैव विवाहेऽजीर्णदोषतः ।
 व्रते चैवोपवासे च वर्जयेद् दन्तधावनम् ॥

शब्दार्थाः

शौचविधिः = पवित्र हुने विधि

यत्नः = प्रयत्न

निष्फलाः = फल प्राप्त नहुने

कर्णस्थः = कानमा रहेको, कानमा राखिरको

ब्रहमसूत्रम् = यजोपवीत वा जनै

उदङ्मुखः = उत्तरतिर मुख गरेर

मूत्रम् = लघुशङ्का (पिसाब)

पुरीषम् = दीर्घशङ्का (दिसा)

उपवीतम् = जनै

अन्तर्धाय = ढाकेर

तृणैः = घाँस वा पराल आदिले

प्रावृत्य = छोपेर

वाससा = कपडाले

वाचं नियम्य = नबोलीकन

ष्ठीवनम् = थुक्नु

उच्छ्वासवर्जितः = लामो सास ननिकालीकन (सास नफेरीकन)

मृत्तिकालेपनम् = माटो लगारुर (माटो लगारुर धुनु वा शुद्ध हुनु)

उभयोः = दुवै हातमा

शुद्धिमभीप्सता = पवित्र हुन चाहने व्यक्तिले

गण्डूषविधिः = कुल्ला गर्ने विधि

भक्ष्यभोज्यावसाने = अल्पाहार (खाजा/नास्ता) को अन्त्यमा

मौनधारणम् = नबोल्नु

कर्मकाण्डः, कक्षा ६

अभ्यासः

१. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं वदत लिखत च

- (क) शौचावश्यकता का ?
- (ख) शौचविधिः कः ?
- (ग) मृत्तिकालेपनप्रकारः कः ?
- (घ) गण्डूषविधिः कः ?
- (ङ) कस्यां कस्याम् अवस्थायां मौनधारणं भवति ?
- (च) दन्तधावने वनस्पतिप्रार्थनाया मन्त्रः कः ?
- (छ) भक्ष्यभोज्यावसाने कति गण्डूषमाचरेत् ?
- (ज) मौनमास्थितः मानवः कीदृशं फलं प्राप्नोति ?
- (भ) दन्तधावनमन्त्रः कः ?

२. बहुवारं पठत

चेद्दक्षिणामुखः = चेद् + दक्षिणामुखः

तूपवीतिवत् = तु + उपवीतिवत्

ष्ठीवनोच्छ्वासवर्जितः = ष्ठीवन + उछ्वासवर्जितः

पुरीषोत्सर्जने = पुरीष + उत्सर्जने

भोजनान्ते = भोजन + अन्ते

जिह्नोल्लेखनिका = जिह्ना + उल्लेखनिका

भवत्यप्रयतः = भवति + अप्रयतः

परस्परं मेलयत

मूत्रोत्सर्जने यज्ञोपवीतम्, उदङ्मुखः कार्यः । पुरीषोत्सर्जने यज्ञोपवीतम्, दक्षिणकर्णे भवति । दिवा मूत्रपुरीषोत्सर्जने दक्षिणामुखः कार्यः ।

रात्रौ मूत्रपुरीषोत्सर्जने वामकर्णे भवति ।

पश्चिममुखः कार्यः ।

प्रातः स्तुतिः

परिचय

प्रातःकालमा उठेर शौचाचार सकेपिक प्रातःस्मरणीय देवीदेवताहरूको स्तुति गर्नाले पुरै दिन उत्तम रूपले बित्छ । दुःस्वप्न, किलदोष, शत्रुताप, पाप र संसारको भय क्रमशः नाश हुन्छ । विषको भय हुँदैन । धर्मको वृद्धि हुन्छ । अज्ञानीलाई ज्ञान प्राप्त हुन्छ । रोगबाट छुटकारा पाइन्छ । दीर्घ आयु मिल्छ । विजय प्राप्त हुन्छ । निर्धन धनी हुनुका साथै सम्पूर्ण बाधाबाट छुट्कारा मिल्छ । तसर्थ यहाँ सङ्क्षेपले प्रातःस्तुति दिइरुको छ । साथै निष्कामनापूर्वक पाठ गर्नेलाई भगवान्को भिक्त प्राप्त हुन्छ । त्यसैले हामीहरूले प्रतिदिन कम्तीमा निम्नानुसारका स्तुति गर्नु ज्यादै कल्याणकारी हुन्छ ।

(क) गणेशस्तुतिः

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं, सिन्दूरपूरपरिशोभितगण्डयुग्मम् । उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्डम् आखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम् ॥

(ख) विष्णुस्तुतिः

प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिशान्त्यै, नारायणं गरुडवाहनमञ्जनाभम् । ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं, चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम् ॥

(ग) शिवस्तुतिः

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं, गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम् । खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं, संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥

(घ) सूर्यस्तुतिः

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि । सामानि यस्य किरणाः प्रभावादिहेतुं ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम् ॥

(ङ) देवीस्तुतिः

प्रातः स्मरामि शरिदन्दुकरोज्ज्वलाभां सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम् । दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम् ॥

(च) नवग्रहस्तुतिः

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसूतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥ -मार्कण्डेयस्मृतिः

(छ) ऋषिस्तुतिः

भृगुर्विसष्ठः क्रतुरिङ्गराश्च

मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।

रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः

कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥

- वामनपुराणम्

```
सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च ।
सप्त स्वराः सप्त रसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥
सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त ।
भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥
- वामनपुराणम्
```

(ज) प्रकृतिस्मरणम्

पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः
स्पर्शी च वायुर्ज्विलतं च तेजः।
नभः सशब्दं महता सहैव
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥
- वामनपुराणम्

(भ) पुण्यश्लोकाः

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको जनार्दनः॥
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः॥
अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥
- पञ्चपुराणम्
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः॥
- आचारेन्दुः
कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं किलनाशनम्॥
- मार्कण्डेयरमृतिः
प्रह्लादनारदपराशरपण्डरीकव्यासाम्बरीषश्कशौनकभीष्मदालभ्यान्,

रुक्माङ्गदार्जुनवसिष्ठिवभीषणादीन् पुण्यानिमान् परमभागवतान् नमामि ॥ धर्मो विवर्धति युधिष्ठिरकीर्तनेन पापं प्रणश्यित वृकोदरकीर्तनेन । शत्रुर्विनश्यित धनञ्जयकीर्तनेन माद्रीसुतौ कथयतां न भवन्ति रोगाः ॥ - पद्मपुराणम्

इत्थं प्रभाते परमं पवित्रं पठेत् स्मरेद्वा शृणुयाच्च भक्त्या । दुःस्वप्ननाशस्त्विह सुप्रभातं भवेच्च नित्यं भगवत्प्रसादात् ॥

- वामनपुराणम्

॥ इति ॥

शब्दार्थाः

गणेशस्तुतिः = गणेशको प्रार्थना

नवग्रहस्तुतिः = सूर्यादि नवग्रहको प्रार्थना

भानुः = सूर्य

शशी = चन्द्रमा

भूमिसुतः = मङ्गल

गुरुः = बृहस्पति

मुरारिः = विष्णु

त्रिपुरान्तकारी = त्रिपुरलाई नाश गर्ने (शिवजी)

प्रकृतिस्मरणम् = प्रकृतिस्तुति

स्मरेत् = सम्भना गरोस्

शृणुयात् = सुनोस्

भक्त्या = भक्तिपूर्वक

भगवत्प्रसादात् = भगवान्को प्रसादबाट

अभ्यासः

| ٩. | अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि वदत लिखत च |
|------------|--|
| | (क) विष्णुस्तुतिश्लोकः कः ? |
| | (ख) सूर्यस्तुतिश्लोकः कः ? |
| | (ग) नवग्रहस्तुतिः का ? |
| | (घ) नवग्रहाः के ? नामानि लिखत । |
| | (ङ) ऋषिस्तुतिश्लोकं लिखत । |
| | (च) ऋषिस्तुतौ केषां केषामृषीणां नामानि सङ्गृहीतानि सन्ति ? |
| | (छ) प्रकृतिस्मरणे के पदार्थाः समायाताः सन्ति ? |
| | (ज) के च पुण्यश्लोकाः ? |
| | (भ) प्रातःस्तुतिपठनस्मरणादिना किं फलं प्राप्यते ? |
| 2 . | पुनर्लेखनं कुरुत |
| | सनत्कुमारः, सनकः, सनन्दनः, सनातनः, आसुरिः, पिङ्गलः |
| 3 . | रिक्तस्थानं पूरयत |
| | प्रातःस्मरामि गणनाथ, |
| | सिन्दूर शोभित युग्मम् । |
| | उद्दुण्ड परिखण्डन दण्डम्, |
| | आखण्ड वृन्दवन्द्यम् ॥ |
| | प्रातः स्मरामि भव सुरेशं, |
| | वृषभ मिबकेशम् । |
| | खट्वाङ्ग, |

----- रोगहरं ----- मद्वितीयम् ।

खण्डः ३ स्नानम्

परिचय

प्रातः कालमा स्नान गर्नाले मानिस शुद्ध हुनुका साथै जप, पूजा, पाठलगायत सम्पूर्ण कर्मका लागि योग्य बन्छ । शरीरमा स्फूर्ति बढ्छ । स्नानको प्रशंसा सर्वत्र पाइन्छ । नौ ढोका भरको अत्यन्त मलिन पाञ्चभौतिक शरीरबाट दिनरात अशुद्ध वस्तु निस्किन्छन् । शुद्ध तीर्थमा प्रातः स्नान गर्नाले यो अपवित्र शरीर शुद्ध हुनुका साथै रूप, तेज, बल, पवित्रता, आयुः, आरोग्य, निर्लोभता, दुःस्वप्नको नाश, तप र मेधा आदि गुण क्रमशः प्राप्त हुँदै जान्छन् ।

(क) स्नानभेदाः

स्नानभेदाः सप्त सन्ति । ते यथा -

"मान्त्रं भौमं तथाऽऽग्नेयं वायव्यं दिव्यमेव च।

वारुणं मानसं चैव सप्त स्नानान्यनुक्रमात्॥"

- याज्ञवल्क्यः

अर्थात् (आपोहिष्ठा) इत्यादि मन्त्रले सेचन गर्नु मन्त्रस्नान, सम्पूर्ण शरीरमा माटो लगाउनु भौमस्नान, कटि (कम्मर) भन्दा माथि भस्म लगाउनु अग्निस्नान, हावामा खुला शरीर राख्नु वायुर्स्नान, घामपानी भरको बेलामा परेकै पानीले स्नान गर्नु दिव्यस्नान, पानीमा डुबुल्की मार्नु वरुणस्नान र आत्मचिन्तन गर्नु मानस स्नान आदि स्नानमध्ये पानीमा डुबुल्की मार्नु सर्वश्रेष्ठ स्नान हो।

स्नान सकेर स्नानाङ्ग तर्पण गरी बोट, बिरुवा वा लहरामाथि आफ्नो शिखा मन्त्रपूर्वक निचोर्नुपर्छ । प्रातः स्नानका अतिरिक्त मध्याह्न र सायं स्नान पनि आआफ्नो परम्पराअनुसार गर्नुपर्छ ।

(ख) स्नानविधिः

सङ्कल्पः

नद्यादौ, तडागे, कूपे वा सम्प्राप्य शुचौ देशे वस्त्रादिकं संस्थाप्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य बद्धशिखी यज्ञोपवीत्याचम्य प्रवाहाभिमुखः प्राङ्मुखो वा कुशोपग्रहः कुशादिकमादाय सङ्कल्पं कुर्यात् -

हरिः ॐ तत्सत् ३, ॐ विष्णुः ३ अद्येह श्रीमद्भगवतो महापुराणपुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य सकलजगतः सृष्टिकारिणो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे प्रहलादाधिपत्ये मनौ सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे सत्यत्रेताद्वापरान्ते बौद्धावतारे अष्टाविंशतितमे किलयुगे तस्य प्रथमचरणे भूलोंके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्ते गङ्गादेव्या उत्तरदिग्भागे हिमाचलस्य दक्षिणपार्श्वे नेपालदेशे पाशुपतक्षेत्रे पशुपतेः गुहयकाल्याश्च ... दिग्भागे ... नगरे, ग्रामे वा इह पुण्यभूमौ षष्टिसंवत्सराणां मध्ये नामिन संवत्सरे श्रीसूर्ये अयने ऋतौ मासे पक्षे तिथौ वासरे रिशिस्थिते श्रीसूर्ये राशिस्थिते देवगुरौ राशिस्थिते चन्द्रमसि, अन्येषु शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु रुवं ग्रहगणविशेषेण विशिष्टान्वितायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः प्रवरः..... अहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं नित्यकर्माङ्गत्वेन प्रातः स्नानं करिष्ये ॥

इति सङ्कल्प्य तीर्थं प्रार्थयेत् ।

(ग) तीर्थप्रार्थना

ॐ नमामि गङ्गे तव पादपङ्कजं सुरासुरैर्विन्दितिद्व्यरूपम् ।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम् ॥
त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता ।
याचितं देहि मे तीर्थं तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदाविर सरस्वित ।
नर्मदे सिन्धु काबेरि जलेऽस्मिन् सिन्निधं कुरु ॥
निन्दिनी निलनी सीता मालती च महापगा ।
विष्णुपादाब्जसम्भूता गङ्गा त्रिपथगामिनी ॥

```
भागीरथी भोगवती जाह्नवी त्रिदशेशवरी ।

द्वादशैतानि नामानि यत्र यत्र जलाशये ॥

स्नानोचतः स्मरेन्नित्यं तत्र तत्र वसाम्यहम् ॥

सर्वाणि यानि तीर्थानि पापमोचनहेतवः ।

आयान्तु स्नानकालेऽस्मिन् क्षणं कुर्वन्तु सन्निधिम् ॥
॥ इति ॥
```

(घ) स्नानम्

तत्पश्चात् नाभिपरिमाणं तीर्थजलान्तः प्रविश्य सूर्याभिमुखो निमज्जेदापोऽअस्मानित्यादि मन्त्रेण -

```
🤣 आपोऽअस्मान्मातरः शन्धयन्त् घतेन नो घतप्वः पनन्त् ।
विश्व ७ हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिराप्तऽएमि ॥
दीक्षातपसोस्तन्रसि तां त्वा शिवा ७ शग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पृष्यन् ॥
🧬 आपो हि ष्ठा मयो भ्वस्ता नऽऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥
🕉 योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः।
उशतीरिव मातरः ॥
🧬 तस्माऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ॥
आपो जनयथा च नः ॥
🕉 प्नन्तुमा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भुतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥
इति स्नात्वा दशवारं गायत्रीं जप्त्वा आचम्य च
विष्णुध्यानम्
ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसद्शं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥
इति विष्णुं ध्यायेत् ।
```

(ङ) हस्ततीर्थानि



अर्थात्

- १. सर्वाङ्गुलीनामग्रभागः देवतीर्थम्
- २. तर्जनीमूलभागः पितृतीर्थम्
- ३. मणिबन्धनिकटभागः ब्रह्मतीर्थम्
- ४. कनिष्ठिकामूलभागः कायतीर्थम्
- ध. हस्तमध्यभागः अग्नितीर्थम्

(च) स्नानाङ्गतर्पणम्

स्नानं कृत्वा स्नानाङ्गतर्पणं कुर्यात् -

तत्रादौ ऋजुकुशोपग्रहः सचन्दनाक्षततुलसीपत्रं जलमर्घ्यपात्रेण अञ्जलिना वा देवतीर्थेनैकैकवारं देवान् तर्पयेत् -

- 🕉 ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम् । 🕉 भूर्देवास्तृप्यन्ताम् ।
- 🕉 भुवर्देवास्तृप्यन्ताम् । 🕉 स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् ॥
- ॐ भूर्भुवः स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् ।

अथ निवीती (कण्ठलम्बी) सन् कुशानुदगग्रान् कृत्वाऽऽचम्य चोदङ्मुखो भूत्वा कायतीर्थेन प्रतिमन्त्रं सयवजलेन द्विर्द्विर्ऋषीं स्तर्पयेत् -

कर्मकाण्डः, कक्षा ६

```
ॐ सनकादिद्वैपायनान्ता ऋषयस्तप्यन्ताम ॥
ॐ भूर्ऋषयस्तप्यन्ताम् । ॐ भवर्ऋषयस्तप्यन्ताम् ।
ॐ स्वर्ऋषयस्तुप्यन्ताम् । ॐ भूर्भवः स्वर्ऋषयस्तुप्यन्ताम् ।
ततः पितृतीर्थेन प्रतिमन्त्रं त्रिस्त्रिवारं दक्षिणामुखः प्राचीनावीती (अपसव्यम्) भृत्वा
दक्षिणाग्रमुलान् कृशान् कृत्वा सतिलजलेन पितृन् तर्पयेत् -
ॐ कव्यवाडनलादयः पितरस्तप्यन्ताम् । ॐ भः पितरस्तप्यन्ताम् ।
🕉 भुवः पितरस्तुप्यन्ताम् । 🕉 स्वः पितरस्तुप्यन्ताम् ।
ॐ भूर्भ्वः स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् ।
ततः सव्यः सन आचामेत् ।
ततः सतिलजलाञ्जलिमादाय -
🕉 यन्मया दूषितं तोयं शारीरमलसम्भवैः।
तस्य पापस्य शृद्धचर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम् ॥
इति तीर्थतटे उत्सृजेत्।
ततः
🤏 लतागुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः।
ते सर्वे तिप्तमायान्त मयोत्सप्टैः शिखोदकैः ॥
इति वृक्षादौ दक्षिणभागे शिखां निष्पीडयेत् ।
तदनन्तरं शुद्धे वाससी परिधाय तिलकं कृत्वा परमात्मानं स्मरन् गृहमागच्छेत् ।
                            ॥ इति स्नानविधिः ॥
```

शब्दार्थाः

तडागे = तलाउमा कूपे = कुवामा

शुचौ देशे = पवित्र ठाउँमा

संस्थाप्य = राखेर

बद्धशिखी = शिखा बाँधेर

प्रवाहाभिमुखः = जलप्रवाहतिर फर्केर

कुशोपग्रहः = कुश लिसर (ब्रहमदण्ड वा पवित्र लिसर)

नाभिपरिमाणम् = आफ्नो नाभिसम्म जल भरको

ऋजुकुशः = सोभ्हो कुश

तीर्थजलान्तः = तीर्थको जलभित्र

निमज्य = डुबुल्की मारेर

विष्णुध्यानम् = विष्णुको ध्यान

देवतीर्थेन = हातको औँलाको टुप्पातिरबाट

निवीती = माला लगार भौँ जनै लगारर

कायतीर्थेन = कान्छी औंलाको मूल भागबाट

पितृतीर्थेन = तर्जनी (चोरी) औलाको फेदबाट

प्राचीनावीती = अपसव्य भरूर

तीर्थतटे = नदी आदि तीर्थको किनारमा (तीरमा)

वृक्षादौ = वृक्ष, लता र गुल्ममा

दक्षिणभागे = दक्षिण भागमा

अभ्यासः

१. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं वदत लिखत च

- (क) स्नानसङ्कल्पवाक्यं लिखत ।
- (ख) "आपोऽअस्मान्मातरः" इति मन्त्रं पूरयत ।
- (ग) विष्णोध्यनिं लिखत ।
- (घ) शिखानिष्पीडनमन्त्रः कः ?
- (ङ) स्नानभेदाः कति ? के च ते ?
- (च) स्नानकर्ता कुत्र गत्वा कथं स्नानं करोति ?

- (छ) तीर्थप्रार्थनायां पठितान् श्लोकान् कण्ठस्थं भणत् ।
- (ज) स्नानमन्त्राः के ?
- (भ) हस्ते कति तीर्थाः प्रदर्शिताः ?
- (ञ) देवतीर्थेन कस्मै तर्पणं दीयते ?
- (ट) उदङ्मुखः निवीती कर्ता केन तीर्थेन केभ्यः तर्पणं ददाति ?
- (ठ) पितृतर्पणं केन तीर्थेन कथं क्रियते ?
- (इ) निम्नचित्रे यथास्थानं तीर्थनामानि लिखत



२. रिक्तस्थाने समीचीनशब्दं प्रयुज्य वाक्यपूर्णं कुरुत

- (क) ऋषीणां तर्पणं -----विधीयते । (देवतीर्थेन, कायतीर्थेन, ब्रह्मतीर्थेन, अग्नितीर्थेन)
- (ख) कर्ता ----- सन् आचामेत् (अपसव्यः, सव्यः, निवीती, प्राचीनावीती)
- (ग) वृक्षादौ ----- भागे शिखां निष्पीडयेत् । (उत्तर, दक्षिण, पश्चिम, पूर्व)
- (घ) कायतीर्थेन ---- तर्पयेत् । (रुकैकं, त्रिस्त्रिवारं, द्विर्द्धिः चतुश्चतुर्वारम्)

परिचय

विप्रो वृक्षस्तस्य मूलं च सन्ध्या वेदः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम्। तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्।

- विश्वामित्रकल्पः

अर्थात् विप्र वृक्ष हो भने त्यस वृक्षको फेद सन्ध्या हो । वेदहरू त्यसका हाँगा हुन् । धर्मकर्महरू त्यसका पात हुन् । त्यसकारण मूलरूपी सन्ध्यालाई प्रयत्नपूर्वक रक्षा गर्नुपर्दछ किनभने मूल नभर त्यसका शाखाहरू र पातहरू पनि हुँदैनन् । तसर्थ रुख नै नभरपिछ फलको आशा कसरी गर्ने ?

बिहान, मध्याह्न र बेलुका सन्ध्याको समयमा सूर्यमण्डलमा क्रमशः ब्रह्मा, रुद्र र विष्णु स्वरूपिणी गायत्रीको ध्यान गरेर गायत्री मन्त्र विधिपूर्वक जप्नुलाई सन्ध्याविधि भनिन्छ । उपनयन संस्कार भरुका द्विजातिले अनिवार्य रूपमा शास्त्रले तोकेको समयमा सन्ध्योपासन गर्नुपर्छ । द्विजातिमा पनि ब्राह्मणको बल, पुरुषार्थ, धनसम्पत्ति, ब्राह्मणत्व जे भने पनि गायत्री नै हो । ब्राह्मण भरुर गायत्रीको महत्त्व बुभदैन, सन्ध्या गर्दैन भने त्यो ब्राह्मण हुन सक्दैन ।

सन्ध्योपासन नगर्ने द्विजातिले पूजा, पाठ, दान, यज्ञ जे गरे पिन त्यसको फल पाउँदैन। जसले गायत्रीमा श्रद्धा राखेर सन्ध्योपासन गर्ने गर्छ, त्यो द्विजाति महापापी नै भर पिन क्रमशः पापबाट मुक्त हुन्छ र फेरि पापकर्ममा प्रवृत्त हुँदैन।

वैदिक सनातन परम्परामा त्रिकाल सन्ध्या गर्ने विधान छ -

प्रातः सन्ध्यां सनक्षत्रां मध्याह्वे मध्यभास्कराम् । ससूर्यां पश्चिमां सन्ध्यां तिस्रः सन्ध्या उपासते ॥

- देवीभागवतम

अर्थात् तारा सिहतको प्रातः सन्ध्या र सूर्यको मध्याह्न समयमा मध्याह्नसन्ध्या तथा सूर्य नअस्ताउँदै सायं सन्ध्या जसले गर्दछ, त्यो अति उत्तम मानिन्छ । साथै सङ्ख्यागत दृष्टिले हेर्दा १००८ पटक जप्नुलाई उत्तम जप, १०८ पटक जप्नुलाई मध्यम जप, १० पटक जप्नुलाई सामान्य जप भनिन्छ ।

बिहान स्नान, गायत्री जप नगरी खानुहुँदैन र सूर्यलाई अर्घ्य निदई खार पाप लाग्छ । सूर्यार्घ्य र सूर्योपस्थान पनि सन्ध्योपासनका प्रमुख अङ्ग हुन् । यसकारण सन्ध्योपासन गर्दा सूर्यार्घ्य र सूर्योपस्थान लगायत यहाँ उल्लेख गरिरम्का सबै विधि गर्नुपर्छ ।



अथ सामान्यसन्ध्याविधिः

प्रतिज्ञासङ्कल्पः

पूर्वसङ्कल्पमुच्चार्य ------ शुभपुण्यतिथौ -----गोत्रः ------ प्रवरः ------ अहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं नित्यकर्माङ्गत्वेन प्रातः (मध्याहन / सायं) सन्ध्यां करिष्ये ॥

(क) आसनशुद्धिः

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः । ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां नित्यं पवित्रं करु चासनम् ॥

(ख) भस्मधारणम्

दक्षिणहस्तेन भरम गृहीत्वा वामहस्ते निधाय उदकं संमृश्य दक्षिणहस्तेन मर्दयेत् । ॐ अग्निरिति भस्म, वायुरिति भस्म, जलमिति भस्म, स्थलमिति भस्म, व्योमेति भस्म, सर्वछहवा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि ॥ इति सम्मर्ध

अभिमन्त्रणम्

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकिमव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने । सिंध्सृज्य मातृभिष्ट्वञ्ज्योतिष्मान्पुनरासदः ॥ धारणम् ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ॥ यद्देवेष् त्र्यायुषं तन्नोऽअस्त् त्र्यायुषम् ॥

(ग) पवित्रधारणम्

"अनन्तर्गर्भिणं साग्रं कौशं द्विदलमेव च । प्रादेशमात्रं विजेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित् ॥" 🧇 पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पनाम्यिच्छद्रेण पवित्रेण सुर्वस्य रिश्मिभः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपुतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

शिखाबन्धनम (घ)

स्नाने दाने जपे होमे सन्ध्यायां देवतार्चने । शिखाग्रन्थिं विना कर्म न कुर्याद् वै कदाचन ॥ - आह्निकम

गायत्र्या शिखां बध्वा

चिद्रिपिण महामाये दिव्यतेजः समन्विते । तिष्ठ देवि शिखाबन्धे तेजोवृद्धिं क्रुष्व मे ॥ 🧬 मानस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः। मानो वीरानुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥

आचमनम (ङ)

ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा । ॐ यज्वेदाय स्वाहा । ॐ सामवेदाय स्वाहा । (इति वारत्रयमाचम्य) 🤣 अथर्ववेदाय नमः । (इति हस्तप्रक्षालनम)

(च) पाणायामः

ॐ प्रणवस्य ब्रहमा ऋषिः अग्निर्देवता दैवीगायत्रीच्छन्दः सप्तानां व्याहृतीनां क्रमेण विश्वामित्रजमदिगनभरद्वाजगौतमात्रिवसिष्ठकश्यपा ऋषयः अग्निवायसर्यबहस्पति-गायञ्यूष्णिगनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तिस्त्रिष्टुब्जगत्यश्द्वन्दांसि, वरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः

प्राग्वा ब्राहमेण तीर्थेन द्विजो नित्यमपः स्पृशेत् ॥

- सुक्तिः

अन्तर्जानु शुचौ देशे उपविष्ट उदङ्मुखः । ૨.

हृत्कण्ठतालुगाभिस्तु यथासङ्ख्यं द्विजातयः ।

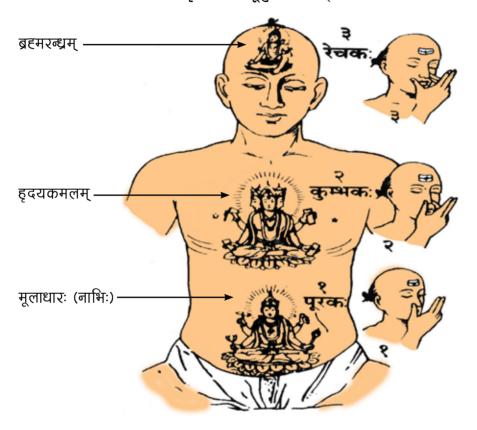
शुध्येरन्स्त्री च शुद्रश्च सकृत्स्पृष्टाभिरन्ततः ॥ - याज्ञवल्क्यस्मृतिः

तत्सिवतुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सिवतादेवता गायत्रीच्छन्दः आपोज्योतिरित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः ब्रह्माग्निवायुसूर्यदेवता यजुश्छन्दः सर्वेषां प्राणायामे विनियोगः ॥

ॐ भूः । ॐ भुवः । ॐ स्वः । ॐ महः । ॐ जनः ।

🕉 तपः । 🕉 सत्यम् । 🕉 तत्सवितुर्वरेण्यम् ० ।

🤣 आपो ज्योती रसोमृतं ब्रह्म भुर्भवः स्वरोम् ॥



(छ) पुनराचमनम् आचमनम् (प्रातः)

ॐ सूर्यश्चमेति नारायण ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः । ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षान्ताम् । यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्चिद् दुरितं मिय इदमहमापोऽमृतपानौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥

आचमनम् (मध्याह्नः)

अग्निश्च मेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोगिन-मन्युमन्युपतयोऽहश्च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यदहना पापमकार्ष मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्च दुरितं मिय इदमहं माममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥

आचमनम् (सायम्)

सूर्यश्च मेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यमन्युमन्युपतयो रात्रिश्च देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्च दुरितं मिय इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥

(ज) मार्जनम्

ॐ आपो हि ष्ठेति तिस्णां सिन्धुद्वीप ऋषिः
आपो देवता गायत्री छन्दः मार्जने विनियोगः ।
ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्जे दधातन ।
महे रणाय चक्षसे ॥
ॐ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ।
उशतीरिव मातरः ॥
ॐ तस्माऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
आपो जनयथा च नः ॥

(भ) अधमर्षणम्

ॐ द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलराजपुत्र ऋषिः आपो देवता अनुष्टुप्छन्दः अधमर्षणे विनियोगः । ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव । पूतम्पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥

(ञ) सूर्यार्घ्यः

तत आचम्य,

ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः अग्निवायुसूर्या देवताः गायत्रयुष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्रऋषिः सवितादेवता गायत्रीछन्दः अर्घ्यदाने विनियोगः।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितु०। इदमर्घ्यं समर्पयामि भगवते ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः। इति वारत्रयं अर्घ्यं दद्यात्।

(सायं- विष्णुस्वरूपिणे/मध्याह्ने-शिवस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः इति)

(ट) सूर्योपस्थानम्

ॐ उद्वयमुदुत्यिमिति द्वयोः प्रस्कण्व ऋषिः सूर्यो देवता अनुष्टुप्छन्दः, चित्रन्देवानामित्यस्य कुत्साङ्गिरस ऋषिः सूर्योदेवता त्रिष्टुप्छन्दः, तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङ्डाथर्वणऋषिः सूर्योदेवता उष्णिक्छन्दः सूर्योपस्थाने विनियोगः ।

```
ॐ उद्वयन्तमसस्पित स्वः पश्यन्तऽउत्तरम् ।

देवन्देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥

उदुत्यञ्जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः ।

दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥

चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।

आप्पाद्यावापृथिवीऽअन्तिरक्षिधसूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥

तच्चक्षुर्देविहतं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।

पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतिश्रृणुयाम शरदः शतम्प्रव्रवाम

शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥
```

(ठ) गायत्रीषडङ्गन्यासः

तत्रादौ करन्यासः -

🕉 भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः ।

🧇 स्वः मध्यमाभ्यां नमः । 🕉 तत्सवित्वरिण्यम् अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ भर्गो देवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

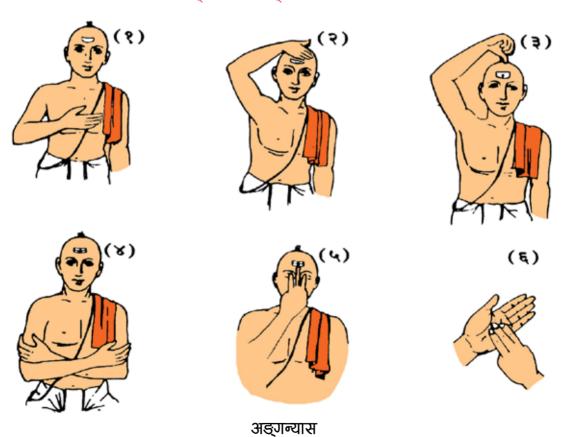
🕉 धियो योनः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ अङ्गन्यासः -

🕉 भुः हृदयाय नमः । 🕉 भुवः शिरसे स्वाहा । 🕉 स्वः शिखायै वषट् ।

🕉 तत्सिवतुर्वरेण्यं कवचाय हुम् । 🕉 भर्गो देवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट् ।

🕉 धियो योनः प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥



(ड) गायत्र्यावाहनम्

ॐ तेजोसीत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः आज्यं देवता जगती छन्दः यजुर्गायत्रयावाहने विनियोगः।

🤏 तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियन्देवानामनाधृष्टन्देवयजनमसि ॥

(ढ) गायत्र्युपस्थानम्

ॐ तुरीयपदस्य विमल ऋषिः परमात्मा देवता गायत्री छन्दः गायत्र्युपस्थाने विनियोगः । ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदिस न हि पद्यसे । नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पराय परो रजसेऽसावदोमा प्रापत् ॥

(ण) गायत्रीध्यानम्

ॐ मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै र्युक्तामिन्दुकलानिबद्धमुकुटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशा शुभ्रं कपालं गुणं,
शङ्खं चक्रमथारिवन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥
ध्यानानन्तरम् (प्रातः कालिकं ध्यानम्) ब्रह्माणी चतुराननाक्षवलयं कुम्भं करैः सुक्सुवौ
बिभ्राणारुणकान्तिरिन्दुवदना ऋग्रूपिणी बालिका ।
हंसारोहणकेलिरम्बरमणेर्बिम्बाञ्चिता भूषिता
गायत्री हृदि भाविता भवतु नः सम्पत्समृद्धचै सदा ॥
तथा (मध्याह्नकालिकं ध्यानम्) रुद्राणी नवयौवना त्रिनयना वैयाघ्रचर्माम्बरा,
खट्वाङ्गतिशिखाक्षसूत्रवलयाभीतिर्दधानाम्बिका ।
विद्युत्पुञ्जजटाकलापविलसद्बालेन्दुमौलिः सदा,
सावित्री वृषवाहना सिततनुर्ध्येया यजूरूपिणी ॥

```
तथा (सायङ्कालिकं ध्यानम्) -
वृद्धा नीलघनप्रभापरिलसत्पीताम्बरा भूषिता,
दिव्यैराभरणैरथाङ्गकमले शङ्खं गदां बिभ्रती ।
तार्क्षस्कन्धगता समस्तजगदाराध्या परा वैष्णवी,
ध्येया चैव सरस्वती भगवती सामस्वरूपा सदा ॥
```

(त) गायत्रीशापविमोचनम्

ब्रहम-शापविमोचनम् -

ॐ अस्य श्रीब्रहमशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रहमा ऋषिर्भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रहमशापविमोचनी गायत्रीशक्तिर्देवता गायत्री छन्दः ब्रहमशापविमोचने विनियोगः ।

मन्त्रः -

💞 गायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः।

तां पश्यन्ति धीराः सुमनसो वाचमग्रतः ॥

- 🧬 वेदान्तनाथाय विद्यहे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ।
- 🧬 देवि ! गायति ! त्वं ब्रह्मशापाद्विम्क्ता भव ।

वसिष्ठशापविमोचनम् -

ॐ अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठ ऋषिर्वसिष्ठानुगृहीता गायत्रीशिक्तर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठशापविमोचने विनियोगः । मन्त्रः -

सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः । आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योती रसोऽस्म्यहम् ॥ इति पठित्वा योनिमुद्रां प्रदर्श्य गायत्रीत्रयं पठेत्
ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव ।

विश्वामित्रशापविमोचनम्

ॐ अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिर्विश्वा-मित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः।

मन्त्रः -

ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवाः । देवाश्चिक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीिमष्टकरीं प्रपद्ये ॥ ॐ देवि ! गायत्रि ! त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ।

प्रार्थना -

ॐ अहो देवि महादेवि सन्ध्ये विद्ये सरस्वति !
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तु ते ॥
ॐ देवि ! गायित ! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव,
विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव, विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ।

(थ) मुद्राप्रदर्शनम्

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।

द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा॥

षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा।

शकटं यमपाशं च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम्॥

प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम्।

सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा॥

एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ सम्प्रदर्शयेत्॥



ध. द्विमुखम्



सम्पुटम्



६. त्रिमुखम्



३. विततम्



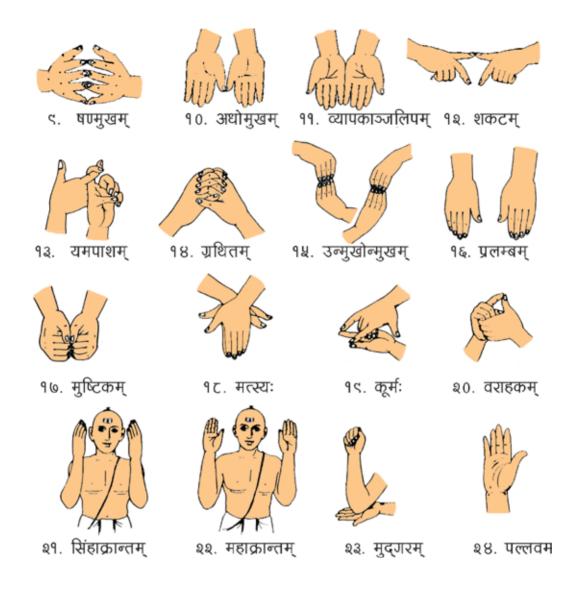
७. चतुर्मुखम्



४. विस्तृतम्



ट. पञ्चमुखम्



(द) गायत्रीजपः^१

ॐ प्रणवस्य ब्रहमा ऋषिः परमात्मा देवता गायत्री छन्दः, व्याहृतीनां प्रजापतिऋषिः अग्निवायुसूर्या देवताः गायत्री छन्दः, तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः सर्वपापक्षयार्थे गायत्रीमन्त्रजपे विनियोगः ।

गृहे जपः समः प्रोक्तो गोष्ठे शतगुणः स्मृतः ।
 आरामे च तथा/रण्ये सहस्रगुण उच्यते ॥
 अयुतः पर्वते पुण्ये नद्यां लक्षगुणस्तुः सः ॥
 कोटिर्देवालये प्राहुरनन्तः शिवसन्निधौ ॥ - आह्रिकम्

ततः आचम्य,

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितु ०।

(समग्रमन्त्रोच्चारणपूर्वकं जपः)



उत्तराङ्गमुद्राप्रदर्शनम् (ध)

"सुरभिर्ज्ञानवैराग्यं योनिः शङ्खोऽथ पङ्कजम् ।

लिङ्गं निर्वाणकं चैव जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत् ॥



२. ज्ञानम्



१. सुरभिः



३. वैराग्यम्



८. योनिः



६. पङ्कजम्



७. लिङ्गम्



ম. शङ्खः



ट. निर्वाणम्

(न) जपसमर्पणम्

ॐ देवा गातुविद इत्यस्य मनसस्पतिऋषिः

वातो देवता विराट् छन्दः जपनिवेदने विनियोगः ।

🕉 देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित ।

मनसस्पत्रद्वमन्देव यज्ञ ६ स्वाहा वातेधाः ॥

अनेन प्रातः (मध्याहः/सायम्) सन्ध्याङ्गभूतेन (अमुकसङ्ख्याकेन) गायत्रीमन्त्रजपाख्येन कर्मणा श्रीभगवान् ब्रहमस्वरूपी (शिवस्वरूपी/विष्णुस्वरूपी) श्रीसूर्यनारायणः प्रीयताम् न मम ॥

ततो गायत्रीं प्रार्थयेत्

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देवि काश्यपप्रियवादिनि ॥

(प) सन्ध्याविसर्जनम्⁹

ॐ उत्तरे शिखरे इत्यस्य कश्यप ऋषि सन्ध्या देवता अनुष्टुप् छन्दः सन्ध्याविसर्जने विनियोगः।

ॐ उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतमस्तके । ब्राह्मणेभ्यो विनिर्मुक्ता गच्छ देवि यथासुखम् ॥

ततः शिखामुक्तिः

ब्रह्मपाशसहस्रेण रुद्रशुलशतेन च ॥

विष्णुचक्रसहस्रेण शिखामुक्तिं करोम्यहम्॥

इति शिखाग्रन्थिं निर्वर्त्य पुनस्तुष्णी शिखां बध्नीयात् ॥

ततो भूमृत्तिकाबन्धनम्

ॐ तत्सवितु इति मन्त्रं पठित्वा तत्रत्यां मृदं धारयेत् ।
॥ इति सामान्यसन्ध्याविधिः ॥

पादशेषं पीतशेषं सन्ध्याशेषं तथैव च ॥
 शुनो मूत्रसमं तोयं पीत्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥

सन्ध्याको सामग्री

जौ-तिल, कुश, भरम, पञ्चपात्र-२, थाली-२, आचमनी- २, अर्घ-१, जल राख्ने ठुलो भाँडो, आसन, माला, गौमुखी, गायत्रीको फोटो, सामान्य पूजाको सामग्री आदि ।

शब्दार्थाः

आसनशुद्धिः = बर्से आसन पवित्र बनाउनु

भरमधारणम् = भरम लगाउनु

पवित्रधारणम् = कुशको औंठी लगाउनु

शिखाबन्धनम् = टुपी (शिखा) को पवित्र गाँठो बनाउनु

पूरकः = बायाँ नाकबाट सास तानेर भर्नु

कुम्भकः = सास रोक्नु

रेचकः = दायाँ नाकबाट सास छोड्नु

मार्जनम् = जल सेचन गर्नु

अधमर्षणम् = पाप पखाल्नु

सूर्यार्घ्यः = सूर्यलाई जलदान गर्नु (सूर्यलाई अर्घ्य दिनु)

सूर्योपस्थानम् = मन्त्रपूर्वक सूर्यको ध्यान गर्नु

शापविमोचनम् = ऋषिहरूले दिस्को श्रापबाट मन्त्रलाई मुक्त गराउनु

जपसमर्पणम् = आफूले गरेको जपादि कर्म देवतालाई अर्पण गर्नु

शिखामुक्तः = शिखा खोल्नु

करमाला = जप गर्दा प्रयोगमा आउने हातको माला

अभ्यासः

१. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखत

- (क) भरमधारणपवित्रधारणमन्त्रयोः प्रतीकमात्रं लेख्यम् ।
- (ख) 'पृथ्वि त्वया' अस्य मन्त्रस्य कुत्र किस्मिन् कर्मणि विनियोगः ?
- (ग) 'तेजोसि' 'गायत्र्यस्येकपदी' इमौ मन्त्रौ कुत्र विनियुज्येते ?

कर्मकाण्डः, कक्षा ६

| | (ध) ४६मशापावमाचनमन्त्रः कः ? | | | |
|------------|---|--|-------------------------|--|
| | (ङ) | जपसमर्पणमन्त्रं लिखत । | | |
| | (च) 'देवा गातुविदः' कस्मिन्कर्मणि विनियुक्तोऽयं मन्त्रः ? | | यं मन्त्रः ? | |
| | (ন্তু) | a) त्रिकालसन्ध्यायाः कालनिर्धारणं कुरुत । | | |
| | (ज) सायंसन्ध्यायाः प्रतिज्ञासङ्कल्पवाक्यस्वरूपं लिखत । | | | |
| | (원) | (भ्क) मार्जने पठनीयाः मन्त्राः के ? | | |
| | (ञ) सूर्यार्घ्यदाने प्रातर्मध्याह्रसायङ्कालिकः सूर्यः केन केन स्वरूपेण अभिधीयते १ | | | |
| | (군) | | | |
| | (ත) | | | |
| | (ड) | ड) गायत्रीजपानन्तरं प्रदर्शनीया मुद्राः काः ? हस्तक्रियाञ्च सचित्रमुट्टङ्कयत । | | |
| | (ढ) | ढ) गायत्रीमन्त्रजपसम्बद्धं विनियोगवाक्यं लिखत । | | |
| ર . | परस्प | रं मेलयत | | |
| | प्राणाः | यामे ब्रहमरन्ध्रम् | पूरकः (विष्णुस्मरणम्) | |
| | प्राणाः | प्राणायामे हृदयकमलम् रेचकः (शिवस्मरणः | | |
| | प्राणाः | यामे मूलाधारः | कुम्भकः (ब्रह्मस्मरणम्) | |
| 3 . | निम्न | नेम्नलिखितं मन्त्रं पूर्णं कुरुत | | |
| | उद्वय | न्तम | उत्तरम् । | |
| | देवन्दे | वित्रा | ज्योतिरुत्तमम् ॥ | |

भोजनशयनविधिः

(क) सङ्क्षिप्तभोजनविधिः

सोत्तरीयं धौतं वस्त्रं परिधाय हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य शुद्धासने प्राङ्मुख उपविश्याऽऽचम्य भोजनपात्रेऽन्नं परिवेष्य

```
    यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति ।
    एवं मण्डलभस्मैतत्सर्वभूतानि रक्षतु ॥
```

इति मन्त्रेणाचं परितः भरमना जलेन वा चतुष्कोणमण्डलं^१ विधाय

ॐ पितुन्नु स्तोषं महो धर्माणन्तविषीम् । यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत् ॥

इति मन्त्रेणाचं स्तुत्वा

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः। शिवाय च शिवतराय च ॥

इति मन्त्रेणाभिमन्त्रय

ॐ सत्यन्त्वर्तेन परिषिञ्चामि । (प्रातः)

🕉 ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि । (सायम्)

इति मन्त्रेण जलेन प्रोक्ष्य

🤣 तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धाम नामासि प्रियन्देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥

इत्यभिमृश्यात्मानमगिनं ध्यायेत् ।

चतुष्कोणं ब्राहमणस्य, त्रिकोणं क्षत्रियस्य, मण्डलं वैश्यस्य, अभ्युक्षणं शूद्रस्य ।
 कर्मकाण्डः, कक्षा ६

```
ततो भुमौ बलीन दद्यात
      "ॐ भूपतये स्वाहा । ॐ भूवनपतये स्वाहा ।
      🕉 भुतानां पतये स्वाहा । 🕉 चित्राय स्वाहा ।
      🕉 चित्रगुप्ताय स्वाहा । 🕉 सर्वेभ्यो भूतेभ्यः स्वाहा । इति ।
ततो हस्ते जलमादाय
      ॐ अन्तश्चरिस भूतेष् गृहायां विश्वतोम्खः।
      त्वं ब्रह्मस्त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमोङ्कारस्त्वं विष्णोः परमं पदम् ॥
      ॐ अम्तोपस्तरणमसि स्वाहा ॥
इति मन्त्रेणार्ध जलं भूमौ बल्युपरि निक्षिप्य शेषमर्ध पिबेत् ।
ततो (ज्ञममृतं ध्यायन् मौनीभूत्वा हस्तचापल्यादिरहितो मुखे पञ्च प्राणाहृतीर्जूह्यात् ।
      🕉 प्राणाय स्वाहा । 🗞 अपानाय स्वाहा । 🗞 व्यानाय स्वाहा ।
      ॐ समानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा ।
      इति पञ्चभिर्मन्त्रैः पञ्चग्रासान् जिह्नया ग्रसेद्दन्तैर्नोपस्पर्शत् ।
      प्राग्द्रवरूपमश्नीयान्मध्ये कठिनमन्ते पुनर्द्रवाशी स्यात् । पूर्वं मधुरं
      मध्ये लवणाम्लौ पश्चात्कटुतिक्तादिकान् यथासुखं भूञ्जीत ।
रखं यथारुचि भुक्तवा भुक्तशेषमद्ममादाय -
      🕉 मद्भुक्तोच्छिष्टशेषं ये भुञ्जते पितरोऽधमाः।
      तेषामन्नं मया दत्तमक्षय्यमपतिष्ठत ॥
इति पितृतीर्थेन भूमौ दत्त्वा हस्ते जलमादाय ।
      ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा ।
इत्यर्धं पीत्वा
      🕉 रौरवे प्यनिलये पद्मार्ब्दनिवासिनाम् ।
      अर्थिनां सर्वभ्तानामक्षय्यम्पतिष्ठत् ॥
```

```
इत्यर्धं भूमौ निक्षिपेत्
ततस्तस्माद्वेशादपसृत्य गण्डूषशलाकादिभिर्मुखं शोधयेत् ।
घृतपायसदिधसक्तुपलमधुभ्योधन्यद् भोज्यमन्नं किञ्चित्परिशेषयेन्न सर्वभोजी स्यात् ।
ततः
```

ॐ अगस्त्यं वैनतेयं च शिनं च वडवानलम् । आहारपरिपाकार्थं स्मरेद्भीमं च पञ्चमम् ॥

इत्युदरमालभ्य

रुष्ण शर्याति च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमिश्वनौ ।
भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न हीयते ॥
इति स्मृत्वा नेत्रे सम्प्रोक्ष्य मुखशुद्धिं कुर्यात् ।
॥ इति सङ्क्षिप्तभोजनविधिः ॥

(ख) सङ्क्षिप्तशयनविधिः

शयनकालः

उपास्य पश्चिमां सन्ध्यां हुत्वाऽग्नींस्तानुपास्य च । भृत्यैः परिवृतो भुक्त्वा नातितृप्याथ संविशेत् ॥ - याज्ञवल्क्यः

शयने दिगिवचारः

प्राक्शिरा शयने विद्या धनमायुश्च दक्षिणे ।

पश्चिमे प्रबला चिन्ता हानिर्मृत्युरथोत्तरे ॥

- मार्कण्डेयः
स्वगृहे प्राक्शिराः शेते श्वाशुर्ये दक्षिणा शिरा ।

प्रत्यक्शिरा प्रवासे तु न कदाचिदुदक्शिरा ॥

- गार्ग्यः

कर्मकाण्डः, कक्षा ६

कुम्भकर्णञ्च इति पाठभेदः

```
शरानातश्राककमाणि
      रात्रिस्क्तं जपन्स्मत्वा देवाँश्च सुखशायिनः ॥
      नमस्कृत्याव्ययं विष्णुं समाधिस्थं स्वपेन्निशि ॥
                                          - मार्काहिराः
शयनविधिः
हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य शिरःस्थाने पूर्णकुम्भं संस्थाप्य रात्रिस्मरणसूक्तं पठेत् -
      🤏 जले रक्षत् वाराहः स्थले रक्षत् वामनः।
      अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पात् केशवः ॥
      जले रक्षत् नन्दीशः स्थले रक्षत् भैरवः।
      अटव्यां वीरभद्रश्च सर्वतः पात् शङ्करः ॥
      अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णः किरीटी श्वेतवाहनः ॥
      बीभत्सुर्विजय कृष्णः सव्यसाची धनञ्जयः ॥
      तिस्रो भार्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती।
      तासां स्मरणमात्रेण चोरो गच्छति निष्फलः ॥
      कफल्लकः । कफल्लकः ॥ कफल्लकः ॥।
                                          - आह्निकम
      अगस्तिर्माधवश्चैव मुच्कुन्दो महाबलः।
      कपिलो मुनिरास्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः ।
                                          - गोभिलः
ततो रात्रिस्मरणसूक्तम् -
      हरिः 🕉 आरात्रिपार्थिव धरजः पित्रप्प्रायिधामभिः ॥
      दिवः सदा ७ सि बृहती व्वितिष्ठ्ठसऽ आत्त्वेषं व्वर्त्तते तमः ॥
      🕉 उषस्तिच्चित्रमाभरास्मब्भ्यं व्वाजिनीवित ॥
      येन तोकञ्च तनयञ्च धामहे ॥
इति रात्रिस्मरणसूक्तमुक्त्वा समाधिस्थं स्वपेत् ।
                              ॥ इति सङ्क्षिप्तशयनविधिः ॥
```

शब्दार्थाः

सोत्तरीयम् = उत्तरीय (उपर्ना)ले सहित

धौतम् = धोती

परिविष्य = पस्केर

परितः = चारैतिर

जलेन प्रोक्ष्य = पानीले सेचन गरेर

बल्युपरि = मन्त्रद्वारा देवतालाई दिइरुको बलिमाथि

निक्षिप्य = राखेर

शेषमर्धम् = बाँकी रहेको आधा भाग

मौनीभूत्वा = नबोलीकन

हस्तचापल्यादिरहितः = हात नचलाईकन, चञ्चल नभईकन

प्राणाहुतिः = प्राणलाई आहुति

जिह्नया = जिब्राले

लवणम् = नुन

अम्लः = अमिलो

कटुः = पिरो

तिक्तम् = तितो

मधुरम् = मिठो

शयने दिग्विचारः = सुत्दा शिर कुन दिशामा गर्ने भन्ने बारेको विचार

पूर्णकुम्भम् = जलले भरिरुको घडा

रात्रिसूक्तम् = रातमा सुत्ने बेलामा पढ्ने मन्त्रहरू

समाधिस्थम् = समाधिमा रहेको वा भरको

स्वपेत् = सुतोस्

कर्मकाण्डः, कक्षा ६

अभ्यासः

१. निम्नाङ्कितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखत

- (क) भोजनारम्भे किं कर्तव्यम् ?
- (ख) भोजनं परितः जलेन भरमना वा क्षत्रियः कीदृशं मण्डलं लिखति ?
- (ग) भोजनकाले बलिदानमन्त्राः लेखनीयाः ।
- (घ) शयनात् पूर्वं कर्तव्यानि कर्माणि कानि ?
- (ङ) रात्रिस्मरणसूक्तं किम् ?
- (च) शयने दिग्विचारपद्यं लिखत ।
- (छ) भोजनान्ते उदरमालभ्य पठनीयः श्लोकः कः ?
- (ज) प्राक्शिरा शयने किं फलम् ?
- (भ्र) याज्ञवल्क्योक्तः शयनकालः कः ?
- (ञ) अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबलः । कपिलो मुनिरास्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः ॥ अस्य श्लोकस्यार्थं लिखत ।
- (ट) "पञ्चिभर्मन्त्रैः पञ्चग्रासान् जिह्नया ग्रसेत्, दन्तैर्नोपस्पृशेत्" इत्यस्याशयं विवृणुत ।

पञ्चाङ्गज्ञानम्

परिचय

तिथि, वार, नक्षत्र, योग र करण यी पाँचलाई ज्योतिषशास्त्रमा पञ्चाङ्ग भनिरको छ । तिथि, वार आदि यिनै पाँच कुराको प्राधान्य भरकाले पात्रोलाई पञ्चाङ्ग भन्ने गरेको हो । हामीले पञ्चाङ्ग शब्दबाट गौणरूपमा पात्रोलाई र प्रधानरूपले त्यसमा उल्लेख गरिरका तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करणहरूलाई सङ्केत गरिरको कुरा बुभनुपर्छ । यद्यपि पात्रोमा हाम्रा व्यवहारोपयोगी धेरै कुराहरू सङ्ग्रह गरेर राखिरका हुन्छन्, तापनि तिथि, वार, नक्षत्र आदि पञ्चाङ्गसँग कर्मकाण्डको घनिष्ठ सम्बन्ध भरकाले अरू विषयको अपेक्षामा यसलाई प्रधानता दिइरको हो ।

वैदिक सनातन (हिन्दु) धर्म अन्तर्गत हाम्रो कर्मकाण्डमा प्रचलित जित पिन यज्ञ, दान, पूजा, व्रत, चाड, पर्व, जन्मिदवस, पितृकार्य आदि छन्, ती सबै प्रायः चान्द्रमानका आधारमा (अर्थात् यिनै तिथि, वार आदि पञ्चाङ्गअनुसार) चलेका छन्। त्यसैले प्रत्येक कर्ममा गरिने सङ्कल्पवाक्यहरूमा अरू मृहूर्त लग्नहरूको अपेक्षा पञ्चाङ्गको विशेष उल्लेख गरिने शास्त्र तथा शिष्टपरम्परा दुवै देखिरुकाले कर्मकाण्डको र पञ्चाङ्गको विशेष सम्बन्ध भरुको बुिभन्छ। तर यसको अर्थ छात्रले पात्रो हेर्दा केवल पञ्चाङ्ग मात्र जाने पुग्छ, अरू अंश जाच्च पर्दैन भन्ने होइन, किन्तु पात्रोमा उल्लेख भरुका व्यवहारमा चाहिने सबै कुरा उसले जाच्च, बुभन सक्ने हुनुपर्दछ। जुनसुकै कर्म गर्दा पिन कर्मको आदिमा सङ्कल्पवाक्य प्रयोग गरिन्छ। सङ्कल्पवाक्यको प्रयोग गर्दा संवत्सर, अयन, ऋतु, मिहना, पक्ष, वार, तिथि र नक्षत्र आदिको पिन उल्लेख गर्नुपर्दछ। यसको निमित्त संवत्सर कित छन् ? अयन, ऋतु आदि कित छन् ? तिनका नाम के के हुन् ? यी कित कित समयमा परिवर्तन हुन्छन् ? भन्ने कुराको ज्ञान हुनु अत्यावश्यक हुन्छ। यसकारण ती संवत्सर आदिका नाम र सङ्ख्याहरू यहाँ उल्लेख गरिन्छन्। यहाँ उल्लेख नभरका अन्य कुराहरू छात्रले पञ्चाङ्ग (पात्रो) को अध्ययन गरेर जाच्चपर्दछ।

कर्मकाण्डअन्तर्गतका यज्ञ, पूजा, दान, व्रत, विवाह, व्रतबन्ध आदि संस्कार जे गरिन्छन् ती प्रत्येक कर्मसँग कर्मफल जोडिसको हुन्छ । कर्म गरेपिछ राम्रो या नराम्रो सानो वा ठुलो जेजस्तो होला केही न केही कर्मफल अवश्य मिल्छ । यद्यपि कर्मको शुद्धाशुद्धिबाट पनि कर्मफलमा भिन्नता अर्थात् राम्रो/नराम्रो हुन सक्छ । तर तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, मुहूर्त, लग्न आदि समयको शुद्धाशुद्धि त्यसभन्दा पनि बढी महत्त्व राख्ने हुँदा त्यसमा विशेष विचार गर्नुपर्दछ । कर्मकाण्डअन्तर्गतका अरू कर्मसँग पञ्चाङ्गको सम्बन्ध जोडिरको छ । त्यसैले हरेक कर्म गर्दा पञ्चाङ्गमा विचार पुऱ्यार्र गर्नुपर्छ, जसले गर्दा सो कर्मले निर्दिष्ट गरेको फल प्राप्त होस् ।

(क) संवत्सराः

प्रभवादयः षष्टिसंवत्सराः सन्ति । तेषां नामानि यथा

प्रभवः, विभवः, शुक्लः, प्रमोदः, प्रजापितः, अङ्गिराः, श्रीमुखः, भावः, युवा, धाता, ईश्वरः, बहुधान्यः, प्रमाथी, विक्रमः, वृषः, चित्रभानुः, सुभानुः, तारणः, पार्थिवः, व्ययः, सर्वजित्, सर्वधारी, विरोधी, विकृतिः, खरः, नन्दनः, विजयः, जयः, मन्मथः, दुर्मुखः, हेमलम्बी, विलम्बी, विकारी, शर्वरी, प्लवः, शुभकृत्, शोभनः, क्रोधी, विश्वावसुः, पराभवः, प्लवङ्गः, कीलकः, सौम्यः, साधारणः, विरोधकृत्, परिधावी, प्रमादी, आनन्दः, राक्षसः, नलः, पिङ्गलः, कालयुक्तः, सिद्धार्थी, रौद्रः, दुर्मितः, दुन्दुभिः, रुधिरोद्गारी, रक्ताक्षी, क्रोधनः, क्षयः इति ।

रगते संवत्सराः प्रतिवत्सरं चैत्रशुक्लप्रतिपद आरभ्य परिवर्तन्ते ।

(ख) अयने

अयने द्वे भवतः, उत्तरायणं दक्षिणायनञ्चेति ।

माघमासादारभ्य आषाढमासपर्यन्तं षण्मासाः उत्तरायणम्, श्रावणमासादारभ्य पौषमासपर्यन्तं षण्मासा दक्षिणायनमिति ।

(ग) ऋतवः

वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरद्, हेमन्तः, शिशिरश्चेति षड् ऋतवः सन्ति । स्कस्मिन्नेकस्मिन् ऋतौ द्वौ द्वौ मासौ भवतः, यथा -

चैत्रवैशाखौ द्वौ मासौ वसन्तर्तुः, ज्येष्ठः आषाढश्च मासौ ग्रीष्मः, श्रावणभाद्रमासौ वर्षा, आश्विनकार्तिकमासौ शरद्, मार्गशीर्षपौषमासौ हेमन्तः, माघः फाल्गुनश्च शिशिरर्तुरिति ।

(घ) मासाः

वैशाखमासादारभ्य चैत्रमासपर्यन्तं द्वादशमासाः भवन्ति । तेषां नामानि यथा - वैशाखः, ज्येष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः, पौषः, माघः, फाल्गुनः, चैत्रश्चेति ।

(ङ) पक्षौ

शुक्लपक्षः कृष्णपक्षश्चेति द्वौ पक्षौ स्तः ।

अमावास्यायाः परतः प्रतिपद आरभ्य पूर्णिमापर्यन्तं शुक्लपक्षः । पर्णिमायाः परतः प्रतिपद आरभ्य अमावास्यापर्यन्तं कृष्णपक्ष इति ।

(च) तिथयः

तिथयः षोडश भवन्ति । तेषां नामानि यथा - प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, रुकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावास्या चेति ।

(छ) वासराणि

सप्त वासराणि भवन्ति । तेषां नामानि यथा -

आदित्यवासरः, सोमवासरः, भौमवासरः, बुधवासरः, बृहस्पतिवासरः, शुक्रवासरः, शिनवासरश्चेति ।

(ज) नक्षत्राणि

अधिवन्यादीनि सप्तविंशति-नक्षत्राणि भवन्ति । तेषां नामानि यथा -

अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिराः, आर्द्रा, पुनर्वसू, तिष्यः, अश्लेषा, मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्ता, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूलम्, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा (अभिजित्), श्रवणः, धनिष्ठा, शतिभषा, पूर्वभाद्रपदाः, उत्तरभाद्रपदा, रेवतीति ।

(भ्र) योगाः

विष्कम्भादयो योगाः सप्तविंशतिः । तेषां नामानि यथा -

विष्कम्भः, प्रीतिः, आयुष्मान्, सौभाग्यः, शोभनः, अतिगण्डः, सुकर्मा, धृतिः, शूलम्, कर्मकाण्डः, कक्षा ६

गण्डः, वृद्धिः, ध्रुवः, व्याघातः, हर्षणः, वज्रः, सिप्रः (सिद्धः), व्यतीपातः, वरीयान् (वर्याणः), परिघः, शिवः, सिद्धः, साध्यः, शुभः, शुक्लः, ब्रहमा, रेन्द्रः, वैधृतिः इति ।

(ञ) करणानि

बवादीनि सप्तचलकरणानि भवन्ति । तेषां नामानि यथा -

बवः, बालवः, कौलवः, तैतिलः, गरः, वणिक्, विष्टिः (भद्रा) इति ।

स्थिरकरणानि चत्वारि सन्ति यथा -

शकुनिः, चतुष्पादः, नागः, किंस्तुघनः ।

(ट) सूर्यचन्द्रबृहस्पतीनां तात्कालिकराशिज्ञानम्

१. तत्र सूर्यस्य राशिज्ञानम्

सूर्य रकिसन् राशौ रकमासपर्यन्तं तिष्ठति । वैशाखमासादारभ्य चैत्रमासपर्यन्तं द्वादशमासेषु मेषराशेरारभ्य मीनराशिपर्यन्तं क्रमेण द्वादश राशयो भवन्ति । तेषामुदाहरणानि यथा -

वैशाखे मेषः, ज्येष्ठे वृषः, आषाढे मिथुनः, श्रावणे कर्कटः, भाद्रे सिंहः, आश्विने कन्या, कार्त्तिके तुला, मार्गशीर्षे वृश्चिकः, पौषे धनुः, माघे मकरः, फाल्गुने कुम्भः, चैत्रे मीनः । (अर्थात् वैशाखमासे सूर्यः मेषराशौ तिष्ठति) । इति क्रमानुसारेण बोद्धव्यम् ।

२. चन्द्रस्य राशिज्ञानम्

चन्द्रः सार्धद्विदिनपर्यन्तमेकराशौ तिष्ठति ।

पञ्चाङ्गमवलोक्य चन्द्रस्य राशिज्ञानं कर्तव्यम् ।

३. बृहस्पतेः राशिज्ञानम्

सामान्यतया **बृहस्पतिरेकसंवत्सरपर्यन्तमेकराशौ** तिष्ठति । तच्च पञ्चाङ्गमवलोक्य बोद्धव्यम् ।

॥ इति ॥

शब्दार्थाः

संवत्सराः = संवत्सरहरू

अयने = दुई अयन (उत्तरायण, दक्षिणायन)

ऋतवः = ऋतुहरू

मासाः = महिनाहरू

पक्षौ = पक्षहरू

तिथयः = तिथिहरू

वासराणि = बारहरू

नक्षत्राणि = नक्षत्रहरू

योगाः = योगहरू

करणानि = करणहरू

तात्कालिक = तत्कालको (त्यसबेलाको)

सूर्यस्य राशिज्ञानम् = सूर्यको राशिज्ञान

मेषराशौ तिष्ठति = मेषराशिमा रहन्छ

पञ्चाङ्गमवलोक्य = पात्रो हेरेर

बोद्धव्यम् = जान्नुपर्छ

अभ्यासः

- १. निम्नाङ्कितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखत
 - (क) किं नाम पञ्चाङ्गम् ?
 - (ख) कति नक्षत्राणि सन्ति ? तेषां नामानि कानि ?
 - (ग) बृहस्पतिः कियत्कालपर्यन्तमेकराशौ तिष्ठति ?
 - (घ) सूर्य रकराशौ कियत्कालं तिष्ठति ?

- (ङ) चलकरणनामानि लिखत ।
- (च) कृति संवत्सरा भवन्ति ?
- (छ) प्रतिवर्षं कदा संवत्सरपरिवर्तनं जायते ?
- (ज) माघमासे सूर्यस्यायनं किम् ?
- (क) श्रावणभाद्रमासौ केन ऋतुनाभिधीयेते ?
- (ञ) तिथयः कति सन्ति ? तेषां नामानि लिखत ।
- (ट) कियत्कालपर्यन्तं चन्द्रः रकराशौ तिष्ठति ?
- (ठ) सूर्यस्य राशिपरिवर्तनाधारः कः ?
- (ड) अयनपरिवर्तनकालः कः ?
- (ढ) स्थिरकरणानि कानि ? तेषां नामानि लिखत ।

२. शुद्धं कृत्वा पुनर्लेखनं कुरुत

गृष्मः, सरद्, सिसिर, पुर्णिमा, अश्लेसा, धनीष्ठा, किङ्स्तूध्नः, विस्चिकः मिनः

सङ्कल्पः यज्ञोपवीतधारणविधिः च

(क) विशेषवाक्ययोजनपूर्वकं सङ्कल्पज्ञानम्

परिचय

वैदिक सनातन (हिन्दु) धर्म अनुसार गरिने हरेक कर्मकाण्ड अर्थात् धार्मिक कृत्यहरू यज्ञ, पूजा, दान, संस्कार, श्राद्ध आदि जेजित छन् ती सबै कृत्यहरू सङ्कल्पपूर्वक आरम्भ गरिन्छन्। सङ्कल्प पढ्नुको तात्पर्य - 'आज म यस दिनमा यस स्थानमा बसेर यो कामना लिस्र यसरी यस्तो काम गर्दे छु' भनेर मनको भाव व्यक्त गर्नु हो। यहाँ कर्म भन्नाले नित्य, नैमित्तिक, काम्य गरी तीन प्रकारका कर्महरू आउँछन्। "सङ्कल्पः कर्ममानसम्" अर्थात् मनको कर्म नै सङ्कल्प हो भने "सङ्कल्पिकल्पात्मकं मनः" अर्थात् कार्यको सङ्कल्प र विकल्प गर्नु मनका धर्म हुन्। त्यसैले सङ्कल्प किन पढिरहनु ? मनमा सङ्कल्प गरेको छँदैछ, फेरि सङ्कल्पवाक्य पढिरहनुपर्ने किन ? तर जुनसुकै कर्ममा पनि सङ्कल्पवाक्य पढ्नै पर्दछ। नबोली हैन बोलेर दिस्कै राम्रो हुन्छ।

सङ्कल्पवाक्य प्रयोग गर्दा हामीलाई धेरै कुराको जानकारी हुनुपर्छ, अर्थात् यो सृष्टि कसको आज्ञाले वा कहिलेदेखि कसले चलायो, आज कुन कल्प चिलरहेको छ, कुन इन्द्र र मनुको पालो छ, कुन युग छ, हामी कुन लोकमा छौँ, द्वीप कुन हो, यो स्थान कुन हो, कुन देश, पर्वत र नदीदेखि कतापिट्ट पर्छ, संवत्सर, अयन, ऋतु, पक्ष, मिहना कुन हो र आजको बार, तिथि के हो, ग्रहहरू कुन कुन राशिमा बसेका छन् ? इत्यादि धेरै कुराको बोध हुनु आवश्यक छ । ईश्वरीय कानुनमा पनि तिथि, मिति, मुकाम आदि उल्लेख हुनु आवश्यक छ ।

नित्य, नैमित्तिक, काम्य जुनसुकै यज्ञ, पूजा, दान, संस्कार पितृकार्य जे कर्म गर्न लागिरको हो, त्यस कर्मको सुरुमा प्रतिज्ञासङ्कल्प गरिन्छ । त्यसरी प्रयोग गरिने सङ्कल्पको सामान्य उदाहरण यहाँ प्रस्तुत छ -

(अ) सङ्कल्पवाक्यम्

हरिः ॐ तत्सत् ३, ॐ विष्णुः ३, अद्येह श्रीमद्भगवतो महापुराणपुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य सकलजगतः सृष्टिकारिणो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे

प्रहलादाधिपत्ये मनौ सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे सत्यत्रेताद्वापरान्ते बौद्धावतारे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तस्य प्रथमचरणे भूलोंके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्ते गङ्गादेव्या उत्तरदिग्भागे हिमाचलस्य दिक्षणपार्थे नेपालदेशे पाशुपतक्षेत्रे पशुपतेः गुहयकाल्याश्च (अमुक) दिग्भागे (अमुक) नगरे, ग्रामे वा इह पुण्यभूमौ षिटसंवत्सराणां मध्ये (अमुक) नाम्नि संवत्सरे श्रीसूर्ये (अमुक) अयने (अमुक) ऋतौ (अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे (अमुक) राशिस्थिते श्रीसूर्ये (अमुक) राशिस्थिते देवगुरौ (अमुक) राशिस्थिते चन्द्रमिस अन्येषु शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानिस्थितेषु सत्सु रुवं ग्रहगणविशेषेण विशिष्टान्वितायां शुभपुण्यतिथौ (अमुक) गोत्रः (अमुक) प्रवरः सपत्नीकः पुत्रादिपरिवारसिहतः (अमुक) शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं सकलपापक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीतये (अमुक) कर्म करिष्ये।

(आ) प्रायश्चित्तगोदानम्

१. गोपूजनम्

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्यः एव च ।
 नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पिवत्राभ्यो नमो नमः ।
 इरावती धेनुमतीहि भूतिध्सूयविसनीमनवेदशस्या ।
 व्यस्कब्भना रोदसीविष्णवेतेदाधर्त्थपृथिवीमभितोमयूखैः स्वाहा ॥
 इति मन्त्रद्वयेन गां त्रिः सम्पूज्य ।

२. ब्राह्मणपूजनम्

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानिपश्यन् ॥ इति मन्त्रेणं ब्राह्मणं सम्पूजयेत् ॥

३. तर्पणम/अभिषेकञ्च

ततः कुशलजेन गामभ्युक्ष्य गोपुच्छं, पवित्रमूलं गृहीत्वा पूर्वं तर्पयित्वा पश्चात् स्विशरिस अभिषिञ्चेदनेन मन्त्रेण-

ॐ मनौ मे तुर्प्यत व्वाचेम्मे तर्प्यत प्राणम्मे तर्प्यत चक्क्षुम्में तर्प्यत श्रीत्रंम्मे तर्प्यतात्मानम्मे तर्प्यत प्रज्ञाम्मे तर्प्यत पश्चमे तर्प्यत गणाञ्मे तर्प्यत गणा मे मा व्वितृषन् ॥

८. सङ्कल्पः

ततः कुशादिसहितं गोपुच्छमादाय

हरिः ॐ तत्सत् ३, ॐ विष्णुः ३, अद्येह श्रीमद्भगवतो महापुराणपुरुषस्य विष्णोराजया प्रवर्तमानस्य सकलजगतः सिष्टकारिणो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे पहलादाधिपत्ये मनौ सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे सत्यत्रेतादापरान्ते बौद्धावतारे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तस्य प्रथमचरणे भूलींके जम्बुद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्ते गङ्गादेव्या उत्तरदिग्भागे हिमाचलस्य दक्षिणपार्थे नेपालदेशे पाशपतक्षेत्रे पशुपतेः गुहयकाल्याश्च (अमुक) दिग्भागे (अमुक) नगरे, ग्रामे वा इह पुण्यभूमौ षष्टिसंवत्सराणां मध्ये (अमुक) नाम्नि संवत्सरे श्रीसूर्ये (अमुक) अयने (अमुक) ऋतौ (अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे (अमुक) राशिरिथते श्रीसूर्ये (अमुक) राशिस्थिते देवगुरौ (अमुक) राशिस्थिते चन्द्रमसि अन्येषु शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु रखं ग्रहगणविशेषेण विशिष्टान्वितायां शुभपण्यतिथौ अद्येह गोत्रस्य प्रवरस्य मम अस्मिन कर्मणि कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विध-पापक्षयपूर्वकम् आध्यात्मिक-आधिदैविक-आधिभौतिक-त्रिविधतापोपशान्ति-सकलदुःखाशेष-निवृत्तिपूर्वकं सर्वविधकल्याणार्थ भक्ष्याभक्ष्य-स्पृश्यास्पृश्य-चोष्याचोष्यादि-सकलप्रत्यवायपरिहारपूर्वकं कर्माधिकारार्थं देहशुद्धयर्थञ्च इमां गां तत्प्रत्याम्नायीभृतं व्यवहारोपकल्पितं द्रव्यं लोष्टादिकं वा रूद्रदैवतं (विष्णुदैवतं वा) अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राहमणाय प्रायश्चित्तगोदानत्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे । (ब्राह्मणश्च ॐ स्वस्तीत्यक्त्वा)

५. प्रार्थना

हस्ते पृष्पादीन्यादाय

ॐ किपले सर्वदेवानां पूजनीयासि रोहिणी। तीर्थदेवमयी यस्मात् तस्माच्छान्तिं प्रयच्छ मे॥ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥ पूजितासि विशष्ठेन विश्वामित्रेण धीमता। सुरिभ हर मे पापं यन्मया दुष्कतं कृतम्॥ इत्यादिभिर्गा प्रार्थयेत्। ६. ततो दानप्रतिष्ठा

गोदानदशांशद्रव्यम् रकस्मिन् पात्रे संस्थाप्य पूजयेत्

🕉 स्वर्णघर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्णशुक्रः स्वाहा

स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सुर्यः स्वाहा ॥

दानप्रतिष्ठाद्रव्याय नमः इति मन्त्रेण सम्पूज्य कुशादिसहितं दानप्रतिष्ठाद्रव्यमादाय

ॐ अद्य कृतैतत् सर्वप्रायश्चित्तनिमित्तकगोदानकर्मणः (गोप्रत्याम्नायीभूतद्रव्यदानकर्मणः) प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं इदं दानप्रतिष्ठाद्रव्यं रौप्यखण्डं चन्द्रदैवतं सुपूजिताय अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दानप्रतिष्ठात्वेन तुभ्यमहं संप्रददे।

७. ततः प्रदक्षिणा

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिणं पदे पदे॥ इति मन्त्रेण गां त्रिः प्रदक्षिणां कृत्वा।

ततो ब्राहमणः स्वस्तीत्युक्त्वा अनेन मन्त्रेण यजमानमभिषिञ्चेत्तत्र मन्त्रः

रूँ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा । इति ।
रूँ द्यौः शान्तिरन्तिरक्षम्... । इति च पठेत्
॥ इति प्रायश्चित्तगोदानम ॥

(ख) सङ्क्षिप्तयज्ञोपवीतधारणविधिः

आचम्य प्राणानायम्य यज्ञोपवीतं प्रक्षाल्य सङ्कल्पं कुर्यात् -

ॐ अद्येत्यादि-मम श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठानसिद्धचर्थ (अमुक) कर्माङ्गत्वेन नूतनयज्ञोपवीतधारणमहं करिष्ये । इति सङ्कल्प्य यज्ञोपवीतानि करसम्पुटे धारियत्वा दशवारं गायत्रीमन्त्रैरभिमन्त्रयेत् ।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्रचं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥ इति मन्त्रेणैकं यज्ञोपवीतं दक्षिणहस्तेन धारियत्वा पुनराचम्य अनेनैव मन्त्रेण द्वितीयं यज्ञोपवीतं धारयेत् । प्रतियज्ञोपवीतधारणान्ते आचमनं कुर्यात् ।

ॐ एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया । जीर्णत्वात्तत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ॥

इति मन्त्रेण जीर्णं यज्ञोपवीतं शिरोमार्जेण निष्कास्य क्वचित्पवित्रस्थले भूमौ त्यजेत् । यज्ञोपवीतधारणानन्तरं यथाशक्ति गायत्रीं जपेत् (दशवारं तु अवश्यं जपेत्) ।

'अर्पणम्- अनेन नूतनयज्ञोपवीतधारणार्थे कृतेन यथाशक्ति गायत्रीजपाख्येन कर्मणा श्रीसूर्यनारायणः प्रीयतां न मम । ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ।

॥ इति सङ्क्षिप्तयज्ञोपवीतधारणविधिः ॥

शब्दार्थाः

यज्ञोपवीतधारणविधिः = जनै लगाउने विधि

नूतनम् = नयाँ

जीर्णः = पुरानो

अभ्यासः

अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखत

- (क) प्रतिज्ञासङ्कल्पवाक्यस्वरूपं लिखत ।
- (ख) सङ्कल्पवाक्ये संयोजनीयाः विषयाः के ?
- (ग) ⁻⁻⁻गोत्रः प्रवरः सपत्नीकः ⁻⁻⁻ शर्मा/वर्मा गुप्तः/अहं सकलपापक्षयपूर्वकं ⁻⁻⁻ कर्म करिष्ये । इत्यत्र आत्मन स्व परिचयं प्रपूर्य पूर्ण सङ्कल्पवाक्यं रचयत ।
- (घ) सङ्कल्पः कदा क्रियते ?
- (ङ) माघशुक्लपञ्चमीं तिथिमनुसृत्य प्रायश्चित्तसङ्कल्पः लेखनीयः ।
- (च) यज्ञोपवीतधारणविधिं सङ्क्षिप्तरूपेणोल्लिखत ।
- (छ) यज्ञोपवीतधारणस्य प्रतिज्ञासङ्कल्पवाक्यं लिखत ।
- (ज) यज्ञोपवीतधारणमन्त्रः कः ?
- (भ्रः) जीर्णयजोपवीतनिष्कासनविधिं समन्त्रं लिखत ।

देवपूजाविधिः

(क) पञ्चगव्यनिर्माणविधिः⁹

```
रुकं पवित्रं तामपात्रमादाय तत्रैव
ॐ तत्सवितु । इति मन्त्रेण गोमूत्रं क्षिपेत् ।
🤣 गन्धद्वारान्द्राधर्षान्नित्यपृष्टाङ्करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभृतानां तामिहोपह्रये श्रियम् ॥
इति मन्त्रेण गोमयं क्षिपेत् ।
🤣 आप्यायस्व समेत् ते विश्वतः सोम वष्ण्यम् ।
भवा वाजस्य सङ्गथे ॥
इति मन्त्रेण दुग्धं क्षिपेत् ।
🦚 दधिकाव्यो(अकारिषञ्जिष्योरश्वस्य वाजिनः ।
स्रभिनो म्खाकरत्प्रणऽआय् ७ वि तारिषत् ॥
इति मन्त्रेण दधि क्षिपेत ।
🤏 तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधुष्टन्देवयजनमसि ॥
इति मन्त्रेण घृतं क्षिपेत् ।
🕉 देवस्य त्वा सवित्ःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
अग्नये जुष्टं गृहणाम्यग्नीषोमाभ्याञ्जुष्टं गृहणामि ॥
इति मन्त्रेण कुशोदकं प्रक्षिप्य कुशदूर्वादिभिः सर्वमेकत्र सम्मेल्य ।
'ॐ' इति प्रणवेन सप्तवारमभिमन्त्रय तेनैव मन्त्रेण पिबेत
अथवा
🕉 यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ।
प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम् । इत्यनेन प्राशयेत् ।
```

१. गहुँत मन्त्रने विधि ।

(ख) स्वस्तिवाचनमन्त्राः

```
श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः । वणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । श्वीपुरन्दराभ्यां नमः । मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । कुल् सुमुखश्चैकदन्तश्च किपलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणाधिपः ॥ धूमुकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छुणुयादिप ॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवणं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ अभीप्सितार्थसिद्धचर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥
```

शुक्लयजुर्वेदीयस्वस्तिवाचनमन्त्राः

ॐ आनो भुद्द्रा?क्कतिवो यन्तुि व्यासे प्रधासोऽअपरीतासऽउदिभदे ।।
देवानो यथा सदिमद्दृष्ठेऽअसुन्नप्प्रायुवोरिक्क्षितारोदिवेदिवे ॥१॥
देवानो मभुद्द्रासु मृतिऋण्यतान्देवानो ७ रातिरिभनो निवर्त्तताम् ॥
देवानो ७ सुक्ख्यमुप से दिमा व्ययन्देवानऽआयु ट्प्यति रन्तु जीवसे ॥२॥
तान्नपूर्व्ययानि विदाहू महे व्ययम्भगमिम त्रमदिति न्दक्क्षं मुसिधं म् ॥
अर्ध्यमणं व्यर्णे ७ सो ममि १ श्वना सर स्वती न ट सुभगा मयं स्क्करत् ॥३॥
तन्नो व्यातो मयो भुव्यति भेषु जन्तन्नमातापृष्ठि वीतृ त्तिपताद् शै ।।

तद्द्ग्रावाणढंसोमसुतोमयोभुवस्तदिश्वनाश्रृणुतन्धिष्ण्यायुवम् ॥४॥ तमीशान्जगतस्तस्त्थुषस्प्पतिनिधयञ्जिन्त्वमवसहमहेव्वयम् ॥ पूषानोषथाव्वेदंसामसंद्द्वृधेरिक्क्षतापायुरदंब्ध ६ स्वस्तये ॥ ॥ स्वस्तिन्ऽइन्द्रोव्वृद्धशश्रवाद्धस्वस्तिनं÷पूषाव्विशश्ववेदादं ॥ स्वस्तिनस्ताक्क्ष्योऽअरिष्ट्टनेमिद्धस्वस्तिनोब्हस्प्पतिदुर्दधात् ॥६॥ पृषेदश्श्वामुरुत्दंपृश्निन्नंमातरदंशुभँख्यावानोव्विद्येषुजग्मंयदं ॥ अग्गिनजिह्न्वामनविद्सूरचिक्क्षसोव्विश्श्वेनोदेवाऽअवसागमिन्निह ॥७॥ भुद्द्रङ्कर्णेभि ७% गुयामदेवाभुद्द्रम्प ११येमा क्क्षभि धर्यजत्रा ७॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्ट्टुवा७ंसंस्तुनूभिव्व्यृशेमहिदेवहित्ं अवदायुं÷ ॥८॥ शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवायत्रानश्च्चक्क्राजरसन्तनूनीम् ॥ पुत्रासोयत्रपितरोभवन्तिमानोमध्द्यारीरिषतायुर्गन्तो । ॥ ॥ अदितिद्चौरिदितिरन्तिरिक्क्षमिदितिम्मातासिपतासपुत्र ॥ व्विश्श्वेदिवाऽअदितिद्धपञ्चजनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्त्वम् ॥ १० ॥ द्यौ २शान्तिरन्तरिक्क ६ शान्ति ÷ पृथिवीशान्तिरापु ६ शान्ति रोक्षेधय ६ शान्ति ÷ ॥ व्यनस्प्पतंयदंशान्तिविं १२ वेदेवा २ शान्ति ब्र्बंहम्मशान्ति दंसर्वि ६ शान्ति दं शान्तिरेवशान्ति दंसामाशान्तिरेधि ॥ ११ ॥ यतोयतदंसमीहं सेततो नोऽअभयङ्कर ॥ शन्न'÷क्रप्प्रजाब्भ्योभ्यन्नढ्पशुब्भ्यं÷ ॥ १२ ॥ ॥ स्शान्तिर्भवत् ॥

(ग) कर्मपात्रनिर्माणम्

परिचय

हाम्रो कर्मकाण्डमा नित्य, नैमित्तिक, काम्य जे-जित कर्म गरिन्छन्, ती हरेक कर्ममा रउटा कर्मपात्र बनाउनुपर्दछ । अर्थात् तामाको थाली आदि कुनै पवित्र पात्रमा मन्त्रपूर्वक कुशका पवित्र र कुशका टुक्राहरू जल, चन्दन, अक्षता, जौ, तिल, फूलहरू हालेर जो बनाइन्छ, त्यसलाई कर्मपात्र भनिन्छ । त्यस कर्ममा सङ्कल्प गर्नुपर्दा त्यसबाट कुश, जल लिस्र गरिन्छ र त्यो कर्ममा कतै जलको आवश्यकता पर्दा पनि त्यसैबाट जल लिइन्छ ।

(अ) पवित्रच्छेदनं निर्माणञ्च

अप्रशीर्णाग्रौ द्वौ कुशौ गृहीत्वा प्रादेशमात्रं परिमाय तयोरुपरि त्रीणि कुशतरुणानि तिर्यङ् निधाय पवित्रमूलेन पवित्रमावेष्ट्य द्वयोर्मूलाग्रे पवित्रमूलं च दक्षिणहस्तेनादाय पवित्रं च वामहस्तेन गृहीत्वा प्रच्छिद्य पवित्रं च प्रदक्षिणं वारद्वयमावेष्ट्य ग्रन्थिं कुर्यात्।

(आ) कर्मपात्रनिर्माणार्थमावश्यकान्युपकरणानि

कर्मपात्रकरणार्था ताम्स्थाली रुका । कुशपवित्रम् । कुशखण्डाः । जलम् । चन्दनम् । सिन्दूरम् । अक्षताः। खवाः । तिलाः । पुष्पाणि चेति ।

(इ) कर्मपात्रनिर्माणम

स्वस्य दक्षिणे ताम्रपात्रं निधाय तत्र -

```
ॐ यद्देवा देवहेडनन्देवासश्चकृमा वयम् ।
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वध्वतः ॥
यदि दिवा यदि नक्तमेना छिंस चकृमा वयम् ।
वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वध्वतः ॥
यदिजाग्रचदिस्वप्नऽएना छिंस चकृमा वयम् ।
सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वध्वतः ॥
इति देवानावाहय ।
```

```
तत्र पवित्रेस्थ इति मन्त्रेण पवित्रं क्षिपेत -
ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्प्नाम्यिच्छद्रेण
पवित्रेण सूर्वस्य रश्मिभः॥
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपुतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥
शन्नो देवीरिति जलं क्षिपेत -
ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्त पीतये।
शं योरभि स्रवन्त् नः॥
गन्धद्वारामिति चन्दनं क्षिपेत -
🕉 गन्धद्वारान्दुराधर्षान्नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभुतानां तामिहोपहृये श्रियम् ॥
अक्षन्नमीमदन्तेत्यक्षतान् क्षिपेत -
🤏 अक्षन्नमीमदन्तह्यव प्रियाऽअध्षत ॥
अस्तोषत स्वभानवो विपा नविष्ठयामती योजान्विद ते हरी ॥
यवोसीति यवान् क्षिपेत् -
🤣 यवोसि यवयास्मदद्वेषो यवयारातीर्दिवे त्वान्तरिक्षाय त्वा
पृथिव्यै त्वा शुन्धन्ताँ ल्लोकाः पितुषदनाः पितुषदनमसि ॥
तिलोसीति तिलान क्षिपेत -
तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः ॥
प्रत्वनमद्भः पृक्तः स्वधया पितृल्लोंकान् प्रिणाहि नः ॥
श्रीश्चते इति पृष्पं क्षिपेत् -
🧇 श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणाम्ममऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥
ततः कुशत्रयसहितं कर्मपात्रोदकमादाय -
🕉 अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाहचाभ्यन्तरः श्चिः ॥
🕉 पुण्डरीकाक्षः पुनात् -३।
इति पूजाद्रव्याणि आत्मानं च सिञ्चेत् । इति
```

(घ) अर्घ्यस्थापनम्

परिचय

जुनसुकै देवताको पूजा गर्दा पिन प्रायः अर्घ्यस्थापना गरिन्छ । अर्घ्यिबनाको पूजा अङ्गहीन मानिस्को छ । अर्घ्यस्थापनाको क्रममा अर्घ्यपात्रमा जल, दूध, दही, कुशका टुक्रा, अक्षता, जौ, तिल, सर्स्यूँ यित आठ वस्तु र केरा दूवोसमेत हालेर पूजा गर्ने विधान छ । यसरी पूजा गरेको अर्घ्यको पूजाविधानमा ठूलो महिमा छ । यसैलाई अष्टाङ्गयुक्त अर्घ्य भनिन्छ । देवपूजाको स्नान कर्ममा यही प्रयोग गरिन्छ र कर्मको अन्त्यमा कामनापूर्तिको रूपमा शेष अर्घ्य समर्पण गरिन्छ ।

(अ) अर्घ्यस्थापनार्थमावश्यकान्युपकरणानि

अर्घ्यपात्रम् । त्रिपादिका । जलम् । क्षीरम् । दधि । कुशाग्राणि । अक्षताः । ववाः । तिलाः । सर्षपाः । दूर्वाङ्कुराणि । चन्दनम् । पुष्पाणि । सिन्दूरम् । आभीरकम् ॥

(आ) अर्घ्यस्थापनम्

आपः क्षीरकुशाग्राणि दध्यक्षतितलास्तथा । यवसिद्धार्थकश्चैव अष्टाङ्गो ह्यर्घ उच्यते ।

स्वस्य दक्षिणे भागे पिष्टातकेन त्रिकोणं षट्कोणं वा विलिख्य तत्र त्रिपादिकां निधाय तस्योपरि अर्घ्यपात्रं संस्थाप्य तस्मिन् पात्रे-जलम्, क्षीरम्, दिध, कुशाग्राणि, अक्षताः, तिलान्, यवान्, सर्षपान्, दूर्वाङ्कुराणि च प्रक्षिप्य गन्धपुष्पादिभिः सम्पूजयेत्

- १. द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः।
- २. षोडशकलात्मने चन्द्रमण्डलाय नमः।
- ३. दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः।
- ४. ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

इति संपूज्य

तत्रैवाङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलाद् गङ्गादिनदीरावाहय धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य तत्रस्थजलेन पूजासामग्रीम् आत्मानं च प्रोक्षेत् ।

। इति ।

शब्दार्थाः

पञ्चगव्यनिर्माणविधिः = पञ्चगव्य बनाउने विधि

गोमूत्रम् = गाईको गहुँत (मूत्र)

गोमयम् = गाईको गोबर

दुग्धम् = दुध

दधि = दहि

प्राशनम् = खानु

पवित्रनिमाणीम् = पवित्र बनाउने विधि

द्रव्याणि = पूजाका सामानहरू

आत्मानम् = आफूलाई

पिष्टातकेन = पिठो आदिले

पञ्चगव्यम् = गाईको गहुँत, गोबर, दुध, दही र घिउबाट बनेको

आवश्यक सामग्रीहरू

कर्मपात्र- जौ, तिल, कुश, चन्दन, अक्षता, फूल, जल, तामाको भाँडो आदि । अर्घ्य - जल, जौ, तिल, कुश (चन्दन र फूल), अक्षता दुबो, सर्स्यूं, दही, दुध आदि ।

अभ्यासः

१. अधोलिखितानां प्रश्नामुत्तराणि विलिखत

- (क) समन्त्रप्रतीकं कर्मपात्रनिर्माणविधिं लिखत ।
- (ख) अर्घ्यपात्रे कानि द्रव्याणि आवश्यकानि भवन्ति ?
- (ग) समन्त्रप्रतीकं पञ्चगव्यनिर्माणविधिं लिखित ।
- (ख) कर्मपात्रे यवतिलस्थापनमन्त्रौ समग्रौ लिखत ।

- (ग) पञ्चगव्यनिर्माणार्थम् आवश्यकानि वस्तुनि कानि ?
- (घ) पञ्चगव्यपाशनमन्त्रः कः ?
- (ङ) पञ्चगव्यं 'ॐ' इति प्रणवेन कतिवारमभिमन्त्रयते ?
- (च) गणेशस्य द्वादशनामानि कानि ? श्लोकानुसारेण उत्तरयत ।
- (छ) स्वस्तिवाचनस्य वैदिकमन्त्राः कति सन्ति ? प्रतीकमात्रं लिखत ।
- (ज) कर्मपात्रनिर्माणान्ते सेचनमन्त्रः कः ?
- (भ्रः) अर्घ्यपात्रनिर्माणान्ते प्रदर्शनीयानां मुद्राणां नामानि लिखत ।

प्रयोगः

पवित्रच्छेदनं तन्निर्माणप्रकारञ्च प्रदर्श्य तिद्विधं स्वकीयया भाषया प्रदर्शयत ।

२. परस्परं मेलयत

(क) द्वादशकलात्मने वहिनमण्डलाय नमः ।

(ख) षोडशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः ।

(ग) दशकलात्मने चन्द्रमण्डलाय नमः ।

भौममण्डलाय नमः।

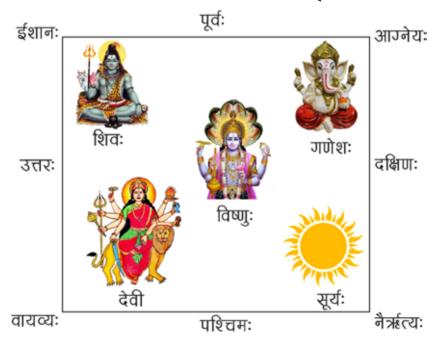
पञ्चायतनदेवतापूजाविधिः

परिचय

सनातन हिन्दु समाजले सबैलाई सम्मान गर्ने भरकाले प्रत्येक दिन विहान पञ्चायतन देवता अर्थात् गणेश, सूर्य, देवी, शिव र विष्णुलाई पूजन गर्ने परम्परा अनादिकालदेखि चिलआरको छ । सो कार्य शास्त्रीय रूपले अगाडि बढोस् भनेर यहाँ पञ्चायतन देवताको स्थान र पूजन प्रकार बताइरको छ । आफूले जुन पञ्चायतन देवता पूजा गर्ने हो, सो देवता प्रधान मानी शास्त्रीय नियमानुसार राख्नुपर्छ । अन्यथा हानि हुन सक्छ । यहाँ प्रत्येक पञ्चायतन देवताको स्थापनाक्रम र विष्णुपञ्चायतन देवता पूजाविधि बताइरको छ । यसैलाई आधार मानेर अन्य पञ्चायतन देवताको पूजा गर्नुपर्छ ।

- (क) पञ्चायतनदेवतास्थापनक्रमः
- (अ) विष्णुपञ्चायतनम्

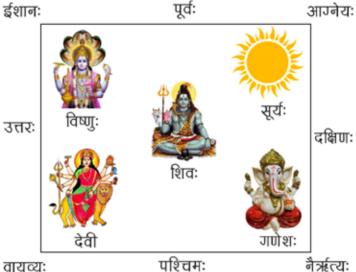
यदा तु मध्ये गोविन्दमैशान्यां शङ्करं यजेत् आग्नेय्यां गणनाथं च नैर्ऋत्यां तपनं तथा ॥ वायव्यामम्बिकाञ्चैव यजेन्नित्यं समाहितः ॥ - आह्निकम्



कर्मकाण्डः, कक्षा ६

(खा) शिवपञ्चायतनम्

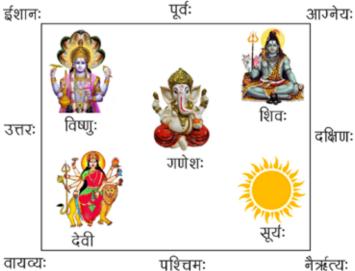
यदा तु शङ्करं मध्ये रेशान्यां श्रीपतिं यजेत् । आग्नेय्यां च तथा हंसं नैर्ऋत्यां पार्वतीसुतम् ॥ वायव्यां च सदा पूज्या भवानी भक्तवत्सला ॥ - आह्निकम्



(इ) गणेशपञ्चायतनम्

हेरम्बं तु यदा मध्ये रेशान्यामच्युतं यजेत् । आग्नेय्यां पञ्चवकां तु नैर्ऋत्यां द्युमणिं यजेत् ॥

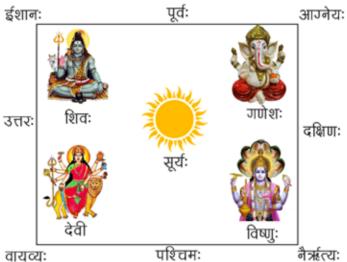
वायव्यामम्बकाञ्चैव यजेन्नित्यमतन्द्रितः ॥ - आह्निकम्



कर्मकाण्डः, कक्षा ६

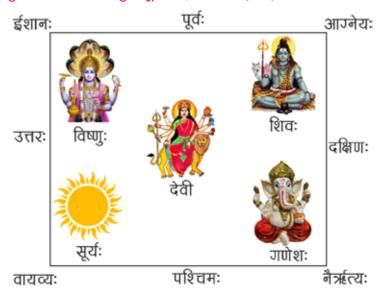
(ई) सूर्यपञ्चायतनम्

सहस्रांशुर्यदा मध्ये रेशान्यां पार्वतीपतिम् । आग्नेय्यामेकदन्तं च नैर्ऋत्यामच्युतं तथा ॥ वायव्यां पूजयेद्वेवीं भोगमोक्षैकभूमिकाम् ॥ - आह्निकम्



(उ) देवीपञ्चायतनम्

भवानीं तु यदा मध्ये रेशान्यां माधवं यजेत् । आग्नेय्यां पार्वतीनाथं नैर्ऋत्यां गणनायकम् ॥ प्रद्योतनं तु वायव्यामाचार्यस्तु प्रपूजयेत् ॥ - आह्निकम्



(ख) पञ्चायतनदेवतापूजाविधिः

तत्रादौ शौचरनानसन्ध्यादिकं समाप्य शुद्धवस्त्रं परिधाय पूजास्थानमागत्य पवित्राऽसन उपविश्य पवित्रधारणं कृत्वा दीपं प्रज्वाल्य, आचम्य, कर्मपात्रं निर्माय, अर्ध्यस्थापनं कृत्वा गन्धाक्षतपुष्पादिभिः दीपं, कलशं च यथाविधि सम्पूज्य पश्चात् स्वपञ्चायतनं क्रमानुसारेण पूजयेत् । यथा -

- (ग) तत्रादौ विष्णुपञ्चायतनपूजाविधिः
- १. आदौ ध्यानम् -

विष्णोध्यनिम -

उद्यत्कोटिदिवाकराभमिनशं शङ्खं गदां पङ्कजं, चक्रं बिभ्रतिमिन्दिरावसुमतीसंशोभिपार्श्वद्वयम् । कोटीराङ्गदहारकुण्डलधरं पीताम्बरं कौस्तुभै-दीप्तं विश्वधरं स्ववक्षसि लसच्छीवत्सिचह्नं भजे ॥ ध्यानं समर्पयामि ॐ विष्णवे नमः॥

शिवस्य ध्यानम् -

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतिगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं, रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् । पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं, विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥ ध्यानं समर्पयामि ॐ शिवाय नमः ।

गणेशस्य ध्यानम् -

खर्वः स्थूलतन् गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं, प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम् । दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं, वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम् ॥ ध्यानं समर्पयामि ॐ श्रीगणपतये नमः ।

सूर्यस्य ध्यानम् -

रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धुं, भानुं समस्तजगतामिधपं भजामि । पद्मद्वयाभयवरान् दधतं कराब्जै-माणिक्यमौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम् ॥ ध्यानं समर्पयामि ॐ श्रीसूर्याय नमः । दुर्जाया ध्यानम् -

> सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः शङ्खं चक्रधनुःशराँश्च दधती नेत्रैस्त्रिभः शोभिता । आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ॥ ध्यानं समर्पयामि ॐ श्रीदुर्गायै नमः ।

२. आवाहनम्

आगच्छन्तु सुरश्रेष्ठा भवन्त्वत्र स्थिरासने ।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् तिष्ठन्तु सन्निधौ ॥
ॐ सहस्रंशीर्षापुरुषढंसहस्राक्क्ष?सहस्रंपात् ॥
सभूमिं सुर्व्वतं स्पृत्त्वात्त्यंतिष्ठदृशाङ्गुलम् ॥
ॐ विष्णवे नमः, आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।
ॐ शिवाय नमः, आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।
ॐ गणेशाय नमः, आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।
ॐ सूर्याय नमः, आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।
ॐ दुर्गायै नमः, आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।

३. आसनम्

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् । कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ पुरुषऽणृवेदिः सर्व्वृष्यद्दभूतं व्यच्चभाव्व्यृम् ॥ उतामृत्तत्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहित ॥ ॐ विष्णवे नमः । आसनार्थे तुलसीदलं समर्पयामि । एवं क्रमेण ॐ शिवाय नमः । इति पुजयेत् ।

८. पाद्यम्

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम् ।
पाद्यार्थं सम्प्रदास्यामि गृहन्तु परमेश्वराः ॥
ॐ एतावीनस्यमिहमातोज्ज्यायाँशैच्चपूरुषि ॥
पादोस्यिव्विश्श्वीभूतानित्रिपादंस्यामृतिन्दिवि ॥
ॐ विष्णवे नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि । एवं ॐ शिवा० ।

५. अर्घ्यम्

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमध्यं सम्पादितं मया ।
गृहणन्त्वध्यं महादेवाः प्रसन्नाश्च भवन्तु मे ॥
ॐ त्रिपादूद्ध्वंऽउदैन्पुरुषः पादोस्येहाभवन्तुनं ॥
ततोिव्वष्व्वङ्क्य्कामत्त्साशनानशनेऽअभि ॥
ॐ विष्णवे नमः, हस्तयोरध्यं समर्पयामि । एवं ॐ शिवा ० ।

६. आचमनम्

कपूरिण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम् । तोयमाचमनीयार्थं गृहन्तु परमेश्वराः ॥ ॐ ततोव्विराडंजायतिव्विराजोऽअधिपूरुंषढं ॥ सजातोऽअत्त्यंरिच्च्यतपुश्च्चाद्द्भूमिमथोपुर्? ॥ ॐ विष्णवे नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि । एवं ॐ शिवा ० ।

```
७. स्नानम्
```

```
मन्दािकन्याः समानीतैः कर्पूरागरुवासितैः ।
स्नानं कुर्वन्तु देवेशा जलैरेिभः सुगन्धिभः ॥
ॐ तस्म्माद्द्युज्ज्ञात्त्सर्व्वहुतुढ्सम्भृतम्पृषद्युज्ज्यम् ॥
पृश्र्ँस्ताँ च्च ककेव्वायुव्व्यानार्ण्याग्ग्राम्म्या च्च थे ॥
ॐ विष्णवे नमः, स्नानीयं जलं समर्पयािम । एवं ॐ शिवा ० ।
```

आचमनम् -

स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

पञ्चामृतस्नानम्

```
पयो दिध घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमिप यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सिरित्॥
ॐ विष्णवे नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। एवं ॐ शिवा ०।
```

९. गन्धोदकस्नानम्

```
मलयाचलसम्भूतं चन्दनेन विमिश्रितम् । इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्गुमाक्तं तु गृह्यताम् ॥ ॐ विष्णवे नमः, गन्धोदकं समर्पयामि । एवं ॐ शिवा ० ।
```

१०. शुद्धोदकरनानम्

```
मलयाचलसम्भूतं चन्दनाऽगरुमिश्रितम् ।
सिललं देवदेवेश ! शुद्धस्नानाय गृह्यताम् ॥
ॐ विष्णवे नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । एवं ॐ शिवा ० ।
```

आचमनम् -

शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

```
११. वस्त्रम्
```

```
शीतवातोष्णसंत्राणे लोकलज्जानिवारणे ।
देहालङ्करणे वस्त्रे भवद्भ्यो वाससी शुभे ॥
ॐ तस्म्माद् बुज्ज्ञात्त्सर्व्वहुतुऽऋचु दंसामानिजिज्ज्ञरे ॥
छन्दा छंसिजिज्ज्ञिरेतस्म्माद् बज्रुस्तस्म्मादजायत ॥
ॐ विष्णवे नमः, वस्त्रम्पवस्त्रं च समर्पयामि । एवं ॐ शिवा ० ।
```

आचमनम् -

वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

१२. यज्ञोपवीतम्

```
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृह्वन्तु परमेश्वराः ॥
ॐ तस्ममाद्रश्श्वीऽअजायन्तुषेकेचोभ्यादत्तं ॥
गावोहजिज्जरेतस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयं÷ ॥
ॐ विष्णवे नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि । एवं ॐ शिवा ० ।
```

आचमनम् -

यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

१३. चन्दनम्

```
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ तँ व्याप्त्रम्बिष्टिष्प्रौक्क्षुन्नपुरुषञ्जातऽमंग्ग्रतः ॥
तेनदेवाऽअयजन्तसाद्ध्याऽऋषयश्च्यये ॥
ॐ विष्णवे नमः, चन्दनान्लेपनं समर्पयामि । एवं ॐ शिवा ० ।
```

१८. पुष्पाणि पुष्पमाला च -

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तितः।

```
मयाऽऽहृतानि पृष्पाणि पृजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
      ॐ यत्त्परुषंच्यदंधंकतिधाच्यंकल्पयन् ॥
      मुखिइमस्यासीत्त्विम्बाह्विमुरूपादार्रउच्च्येते ॥
               श्रीश्च्चतेलक्ष्मीश्च्चपत्क्न्यावहोरात्रेपाश्श्वेनक्क्षेत्राणिरूपमिश्वनौळ्यात्तम्
      इष्णन्निषाणाम्मम्। इषाणसर्व्वलोकम्म ।
      🕉 विष्णवे नमः, पृष्पाणि (पृष्पमालाम्) समर्पयामि । एवं 🕉 शिवाय ० ।
१५. तुलसीदलम्
      त्लसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।
      भवमोक्षप्रदां रम्यामर्पयामि हरिप्रियाम् ॥
      🕉 विष्णवे नमः. तलसीदलं मञ्जरीं च समर्पयामि । एवं 🕉 शिवा०।
१६. ध्रुपः
      वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढचो गन्ध उत्तमः।
      आघ्रेयः सर्वदेवानां धुपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
      🕉 ब्राह्म्मणोस्यम्खमासीद्द्बाहुराजन्त्य्÷कृत्र ॥
      ऊरूतदस्ययद्द्वैशश्यं÷पद्भ्या ७शूद्द्रोऽअंजायत ॥
      🥳 विष्णवे नमः, धुपमाघ्रापयामि । एवं 🕉 शिवा०।
१७. दीप:
      साज्यं च वर्तिसंयुक्तं विह्नना योजितं मया।
      दीपं गृहणन्तु देवेशास्त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
      🕉 चन्द्रमामन'सोजातश्च्चक्क्षोंसुरबेर्पेऽअजायत ॥
      श्रोत्राद्द्वाय्श्च्चेप्प्राणश्च्चम्खोदग्ग्निरंजायत ॥
      🕉 विष्णवे नमः, दीपं दर्शयामि । एवं 🕉 शिवा०।
१८. नैवेद्यम
      शर्कराखण्डखाद्यानि दिधक्षीरघुतानि च।
```

```
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ नाब्भ्योऽआसीदन्तिरंक्क्षिंधशीष्णोंद्द्यौ?समंवर्तत ॥
पुद्द्भ्याम्भूमिर्द्दिशुंदेश्रोत्रात्तथांलोकां २॥ऽअंकल्प्पयन् ॥
ॐ विष्णवे नमः, नैवेद्यं निवेदयामि । एवं ॐ शिवा०।
```

नैवेद्यान्ते ध्यानं समर्पयामि ।

उत्तरापोऽशनार्थं हस्तप्रक्षालनार्थं मुखप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि ।

आचमनीयम् -

```
ॐ यत्तपुरुषं क्वयदं धुं किति धाव्यं कल्पयन् ॥

मुखि इमंस्यासी त्विम्बाह् किमूरूपादां उच्च्येते ॥

ॐ विष्णावे नमः, आचमनीयम् समर्पयामि । स्वं ॐ शिवा०।
```

१९. ऋतुफलम्

```
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मिन जन्मिन ॥
ॐ विष्णवे नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि । एवं ॐ शिवा०।
```

२०. ताम्बुलम्

```
पूगीफलं महद् दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलालवङ्गसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ यत्त्पुरुषिणह्विषादेवायुज्ज्ञमत्नेन्त्वत ॥
व्वसुन्त्गेऽस्यासीदाज्ज्यंङ्ग्रीष्म्मऽइद्ध्म?शुरद्धवि? ॥
ॐ विष्णवे नमः, मुखवासार्थे ताम्बुलं समर्पयामि । एवं ॐ शिवा०।
```

२१. दक्षिणा

```
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
ॐ यत्तपुरुषिणहिवषदिवायज्ज्ञमतन्त्वत ॥
```

```
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यंङ्ग्रीष्म्मऽइद्ध्म?शरद्धवि?॥
      ॐ विष्णवे नमः. दक्षिणां समर्पयामि । स्वं ॐ शिवा०।
२२. नीराजनम
      कदलीगर्भसम्भृतं कर्प्रं तु प्रदीपितम् ।
      आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥
      ॐ सप्प्तास्यांसन्त्परिधयस्त्रि?सप्प्तसमिधं÷कृता? ॥
      देवायद्वज्ज्ञन्तंन्न्वानाऽअबंद्ध्नन्न्प्रंषम्पश्म् ॥
      ॐ अग्निज्ज्योतिज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सुर्ध्योज्ज्योतिज्ज्योतिः सुर्धः स्वाहा ।
      अग्निर्वर्चोज्ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सुर्ध्योवर्चोज्ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥
      ज्ज्योतिः सुर्ध्वः सुर्ध्वा ज्ज्योतिः स्वाहा ॥
      ॐ विष्णवे नमः, आरार्तिक्यं समर्पयामि । स्वं ॐ शिवा०।
     पदक्षिणा
23.
      यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
      तानि सर्वाणि नश्यन्त प्रदक्षिणपदे पदे ॥
      ॐ सप्प्तास्यांसन्त्परिधयस्त्रि?सप्प्तसमिधं÷कृता? ॥
      देवायद्द्यज्ज्ञन्तंन्न्वानाऽअबंद्ध्नुन्नपुरुषम्पुशुम् ॥
      ॐ विष्णवे नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि । स्वं ॐ शिवा०।
२८. मन्त्रपुष्पाञ्जलिः
      श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः ।
      मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम् ॥
      नानास्गन्धिपृष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
      पृष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरः॥
      🤏 यज्ज्ञेन'यज्ज्ञम'यजन्तदेवास्तानिधम्माणिप्प्रथमान्न्यांसन् ॥
      तेहनाकंम्महिमानं रसचन्तयत्रपूर्व्वेसाद्ध्या ?सन्तिदेवा ?॥
      ॐ विष्णवे नमः, मन्त्रपृष्पाञ्जलिं समर्पयामि । रखं ॐ शिवा०।
```

```
२५. नमस्कारः
```

```
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥
ॐ युज्ज्ञेन'युज्ज्ञम'यजन्तदेवास्तानिधम्माणिप्प्रथुमान्न्यांसन् ॥
तेहनाक'म्महिमान'÷सचन्तुयत्रपूर्व्वेसाद्ध्या?सिन्तदेवा? ॥
ॐ विष्णवे नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि । एवं ॐ शिवा०।
```

२६. अर्घ्यनिवेदनम्

```
गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया ।
गृह्णन्त्वर्घ्यं महादेवाः प्रसन्नाश्च भवन्तु मे ॥
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ॥
ॐ विष्णवे नमः अर्घ्यजलं समर्पयामि । एवं ॐ शिवा०।
```

शङ्खभ्रामणम् -

शङ्घमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि । अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ ॐ विष्णवे नमः शङ्घजलं समर्पयामि । एवं ॐ शिवा०।

२७. क्षमापनम्

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भिक्तिहीनं जनार्दन ।

यत्पूजितं मया देव पिरपूर्णं तदस्तु मे ॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।

पूजां चैव न जानामि क्षमस्य परमेश्वर ॥

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।

तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष मां परमेश्वर ॥ इति ।

ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु ।

ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः।

२८. अर्पणम्

हस्ते जलं गृहीत्वा ।

अनेनाऽऽवाहनाऽऽसनपाद्यार्घाचमनीयस्नानवस्त्रोपवीतगन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूल-दक्षिणारार्तिक्यप्रदक्षिणामन्त्रपुष्पाञ्जलिरूपैः षोडशोपचारैरन्योपचारैश्च यथाज्ञानेन (यथामिलितोपचारद्रव्यैर्वा) कृतेनानेन पूजनकर्मणा विष्णुपञ्चायतनदेवाः प्रीयन्तां न मम । ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

२९. ततोऽच्युतस्मरणम्

ॐ चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चिभिरेव च ।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां स मे विष्णुः प्रसीदतु ॥
ॐ अच्युताय नमः ॥ ॐ अच्युताय नमः ॥ ॐ अच्युताय नमः ॥

३२. चरणामृतपानम्

ॐ अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् । विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥ ततो देवनिर्माल्येन शिरिस मार्जनम् - ॐ देवनिर्माल्यतोयेन योऽङ्गानि परिमार्जयेत् । आधयस्तस्य नश्यन्ति व्याधीनां त् कथैव का ॥

॥ इति श्रीविष्णुपञ्चायतनपूजाप्रयोगः ॥

शब्दार्थाः

पञ्चायतनदेवताः = गणेश, सूर्य, देवी, शिव र विष्णु गरी पाँच देवता

स्थापनाक्रमः = राख्ने क्रम

विष्णुपञ्चायतनम् = विष्णुप्रधान भरको पाञ्चायन देवता

शिवपञ्चायतनम् = शिवप्रधान भरको पाञ्चायन देवता

गणेशपञ्चायतनम् = गणेशप्रधान भरको पाञ्चायन देवता

सूर्यपञ्चायतनम् = सूर्यप्रधान भरको पाञ्चायन देवता

देवीपञ्चायतनम् = देवीप्रधान भरको पाञ्चायन देवता

स्वपञ्चायतनम् = आफूले प्रधान मानेर पुजिने पाञ्चायन देवता

गन्धोदकस्नानम् = चन्दन मिसारको जलले नुहाउनु

ऋतुफलम् = ऋतुअनुसारको फल

पञ्चायतन देवता पूजा सामग्री

पूजाको भाँडा, चोखो जल, जौ, तिल, अक्षता, चन्दन, अबिर, केसरी, फूलमाला, पञ्चामृत, बेलपत्र, तुलसीपत्र, धूप, दीप, नैवेद्य, भेटी, कपूर, कुश, दुबो, दीयो, कलश, गणेश, सुपारी आदि ।

अभ्यासः

| | 20 | ` | | | | |
|----|----------|-----------|-------|------|-----|---|
| ٩. | अधोलिखता | न श्रत्वा | उत्तर | दत्त | लखत | ਹ |

- (क) विष्णुपञ्चायतनदेवतास्थापनप्रकारः कः ?
- (ख) गणेशपञ्चायतनदेवतास्थापनप्रकारं विलिखत ।
- (ग) विष्णोध्यनिमन्त्रं समग्रं लिखत ।
- (घ) शङ्खजलनिवेदनमन्त्रः कः ?
- (ङ) चरणामृत-पानमन्त्रं लिखत ।
- (च) पञ्चायतनदेवानां नामानि लिखत ।
- (छ) भवतः परम्परागत इष्टो वा पञ्चायतनदेवः कः ?
- (ज) विष्णुपञ्चायतनपूजाविधौ के के पदार्थाः आवश्यका भवन्ति ?
- (भ्र) विष्णुपञ्चायतनपूजाप्रकारं पठित्वा स्वकीयपञ्चायतनदेवपूजाविधिं रचयत ।

२. रिक्तस्थानं पूरयत

- (क) शिवपञ्चायतनपूजायां वायव्यकोणे स्थाप्यते (गणेशः, देवी, विष्णुः, सूर्यः)
- (ख) सूर्यपञ्चायतनस्थापनक्रमे नैर्ऋत्यकोणे भवति । (विष्णुः, गणेशः, शिवः, देवी)
- (ग) देवीपञ्चायतनपूजने मध्ये स्थाप्यते । (विष्णुः, शिवः, गणेशः, सूर्यः, देवी)
- (घ) नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं देवतामयम् । उपवीतं गृह्णन्तु॥
- (ङ) श्रीखण्डं चन्दनं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ!॥

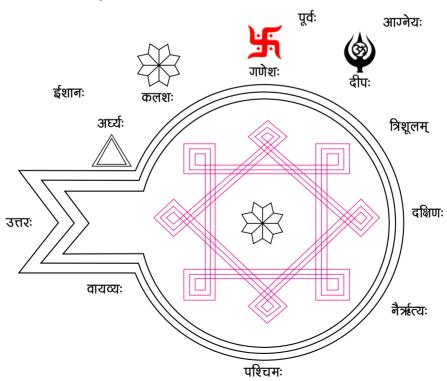
रङ्गवल्लीरचना

(क) रुद्राभिषेकार्था रङ्गवल्ली

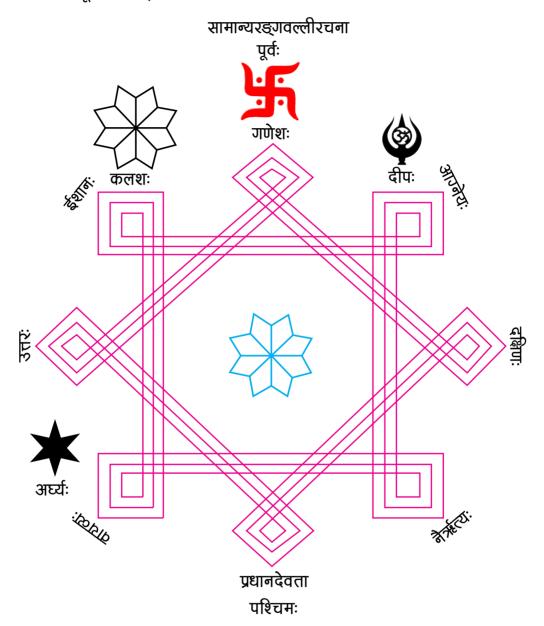
परिचय

रेखी हाल्ने विधिलाई रङ्गवल्ली रचना भनिन्छ । रङ्गवल्ली रचना गर्नु अर्थात् रेखी हाल्नु एक प्रकारले आसनविशेषको कल्पना गर्नु हो । देवताको पूजाक्रममा शास्त्रमा बतारअनुसार आसनको ठुलो महत्त्व देखिन्छ । विशेष अथवा सामान्य जेजस्तो कर्म गरिन्छ, रेखी पनि सोहीअनुसारको हुन्छ । यसैले हाम्रो याज्ञिक परम्परामा विशेष अनुष्ठानहरूमा विशेष रूपको र सामान्य अनुष्ठानहरूमा सामान्य रेखी हाल्ने प्रचलन पाइन्छ । शिवजीको विशेष अनुष्ठान गरिँदा चतुर्लिङ्गतोभद्र, द्वादशलिङ्गतोभद्र रचना गर्ने (रेखीभित्र चार लिङ्ग अथवा बाह लिङ्ग लेखिन्छन्) तथा विष्णुको विशेष अनुष्ठानमा सर्वतोभद्र रचना गर्ने गरिन्छ । सोहीअनुसार रुद्राभिषेकलाई सामान्य कर्मको रूपमा लिई सामान्य रूपबाट नै यहाँ रङ्गवल्ली (रेखी) को स्वरूप दिइरको छ ।

(अ) रुद्राभिषेकस्य रङ्गवल्लीरचना



(आ) सामान्यपूजायाः रङ्गवल्लीरचना



(ख) रुद्रीपाठे दिवसविचारः

रुद्रीपाठे शुभाशुभफलज्ञानाय तिथ्यनुसारेण गणनाक्रमो यथा-शुक्लप्रतिपदा १, शुक्लद्वितीया २, रुवं क्रमेण पूर्णिमा १४, कृष्णप्रतिपदा १६, कृष्णद्वितीया १७, रुवं क्रमेण अमावास्या ३०, तिथिगणनाक्रमो बोध्यः ।

कर्मकाण्डः, कक्षा ६

शिववासफलम् (मेरुतन्त्रे) -

शतिथिं च द्विगुणीकृत्य पञ्चिभश्च समन्वितम्। सप्तिभश्च हरेद्भागं शिववासफलं लभेत्॥ एके कैलासवासः स्यात्र(क) द्वितीये गौरिसिन्नधौ। तृतीये वृषभारूढः सभायां च चतुर्थके॥ पञ्चमे भोजने चैव षष्ठे क्रीडारतस्तथा। श्मशानेऽद्रौ तथा शेषे (ख) शिववासफलं भवेत् (ग)॥ कैलासे तु भवेत्सौख्यं गौर्यङ्के च सुखप्रदम् (घ)। वृषारूढे च श्रीप्राप्तिः (छ) सभा सन्तापकारिणी (च)॥ भोजने भोजनप्राप्तिः (छ) क्रीडा सन्तानहारिणी (ज)। श्मशाने मृत्युमाप्नोति शिववासफलं लभेत्॥

मेरुतन्त्रे शिववास फलसारिणी

| शुक्लपक्षः | शिववासः | फलम् | कृष्णपक्षः |
|------------|------------|---------------|-------------|
| 9 | श्मशाने | मृत्युः | 6 |
| ર | गौरीसिबधौ | शुभम् | ٩ |
| રૂ | सभायाम् | सन्तापकारणम् | ą |
| 8 | क्रीडायाम् | सन्तानहानिः | રૂ |
| ų | कैलाशे | सुखम् | 8 |
| Ę | वृषे | श्रीप्राप्तिः | کھ |
| 0 | भोजने | भोजनप्राप्तिः | હ્ |
| ζ | श्मशाने | मृत्युः | 0 |
| ९ | गौरीसिबधौ | शुभम् | て 段0 |
| 90 | सभायाम् | सन्तापकारणम् | ९ |

१ यथा गणनासूत्रम्

तिथि \times २ + $+ \div =$ शिववासः । कृष्णपक्षे तु - तिथि + १५ \times २ + $+ \div =$ शिववासो ज्ञेयः ।

२ (क) कैलासवासं च, इति पाठान्तरम् । (ख) सप्तमे प्रोक्तः, इति पा. । (ग) तथा, इति पा. ।

⁽घ) गौर्यान्तु सुखसम्पदः, इति पा. । (ङ) वृषभे च श्रियः प्राप्तिः, इति पा. । (च) सभायां तापकारिणी, इति पा. ।

⁽छ) भोजनं चैव, इति पा. । (ज) सन्तापहारिणी, इति पाठभेदः ।

| 99 | क्रीडायाम् | सन्तानहानिः | 90 |
|----|------------|---------------|----|
| 12 | कैलाशे | सुखम् | 99 |
| 93 | वृषे | श्रीप्राप्तिः | 92 |
| 98 | भोजने | भोजनप्राप्तिः | 93 |
| 94 | श्मशाने | मृत्युः | 98 |

शब्दार्थाः

रङ्गवल्लीरचना = रेखी हाल्ने तरिका

आग्नेयः = पूर्व र दक्षिण बिचको कुनो

नैर्ऋत्यः = दक्षिण र पश्चिम बिचको कुनो

वायव्यः = पश्चिम र उत्तर बिचको कुनो

ईशानः = उत्तर र पूर्व बिचको कुनो

अभ्यासः

१. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं वदत लिखत च

- (क) रुद्राभिषेके रङ्गवल्लीरचना कथं क्रियते ? विलिख्य प्रदर्शयत ।
- (ख) 'रङ्गवल्लीरचना' इति शब्देन किं जायते ?
- (ग) तिथयः कति ? तासां गणनाक्रमः कः ? इति द्वयं समाधत्त ।
- (घ) शिववासज्ञानाय कः श्लोकः पठ्यते ?
- (ङ) कित शेषे प्राप्ते शिववासः सभायां भवति ? तत्फलञ्च किम् ?
- (च) शुक्लपक्षस्य पञ्चम्यां तिथौ शिववासः कुत्र भवति ?
- (छ) कैलासे शिववासे सित रुद्रीपाठः कर्तुं भवति न वा ?
- (ज) कृष्णपक्षस्य चतुर्दश्यां शिववासः कुत्र ? फलञ्च किम् ?
- (भ्र) सामान्यपूजायां कीदृशी रङ्गवल्ली रच्यते ?

२. परस्परं सम्मेलयत

रकशेषे शिववासः कैलासे

द्विशेषे शिववासः गौरिसन्निधौ

त्रिशेषे शिववासः वृषभारुढः

चतुश्शेषे शिववासः सभायां

पञ्चशेषे शिववासः भोजने

षद्शेषे शिववासः क्रीडारतः

शून्यशेषे शिववासः श्मशाने

श्रीप्राप्तिः ।

सन्तापकारिणी ।

भोजनपाप्तिः ।

सन्तानहारिणी ।

सौख्यम् ।

मृत्युः ।

सुखप्रदम् ।

कीर्तिः ।

३. पृथक्कुरुत

गौर्यङ्के =

श्मशानेऽद्रौ =

तिथ्यनुसारेण =

परिचय

हाम्रो वैदिक हिन्दु समाजमा चलेका कर्मकाण्ड अन्तर्गतको अतिप्रचलित र उत्कृष्ट कर्म हो रुद्राभिषेक । रुद्राभिषेक शान्तिक तथा पौष्टिक कर्म दुवैमा गर्ने गरिएको छ । शान्तिक कर्म भनेको ग्रहशान्ति वा दुःस्वप्नादि निवारणार्थ गरिने कार्य हो भने पौष्टिक धनधान्य, सन्तित वृद्धिविषयक कार्य हो । विशिष्ट धनधान्यसम्पन्न व्यक्तिले जुन भावनाले रुद्राभिषेक गर्दछ, एक सामान्य व्यक्तिले पनि उस्तै भावनाले गर्दछ । आर्थिक दृष्टिमा धनी र गरिबमा भिन्नता भए पनि भावनात्मक दृष्टिमा दुवै बराबरीमा आउन सक्छन् ।

भगवान् रुद्रको आराधना गर्ने क्रममा रुद्रीपाठका तीन रूप बताइरका छन् । अभिषेकात्मक, हवनात्मक र जपात्मक । जलधारापूर्वक रुद्रीपाठ गरिनेलाई अभिषेकात्मक, रुद्रीका मन्त्रपाठपूर्वक होम गर्दै गर्नेलाई हवनात्मक (यसलाई रुद्रहोम पनि भनिन्छ) र जलधारा पनि होम पनि नगरी केवल रुद्रीपाठ मात्र गरिनेलाई जपात्मक भनिन्छ । श्रद्धानुसार तीनै थरी कर्म रुकै दिन गर्न सिकन्छ तर रुद्रीसँगै होम पनि जुराउनुपर्दछ ।

रुद्रीका पाँच भेद छन्- रुद्र, रुद्री, लघुरुद्री, महारुद्री र अतिरुद्री । रुकावृत्ति रुद्रीपाठ गरिनेलाई रुद्र, त्यसको ११ गुणा अर्थात् ११ आवृत्तिलाई रुद्री अथवा रुद्रैकादिशनी, त्यसको ११ गुणा अर्थात् १२१ आवृत्तिलाई लघुरुद्री, त्यसको ११ गुणा अर्थात् १३३१ आवृत्तिलाई महारुद्री र त्यसको पनि ११ गुणा अर्थात् १४६४१ आवृत्तिलाई अतिरुद्री भनिन्छ ।

धर्म, अर्थ (धन), काम (सुख र सन्तान) र मोक्ष यी चारै पुरुषार्थको इच्छा गर्नेहरूले रुद्रीपाठद्वारा आशुतोष भगवान् रुद्रलाई प्रसन्न गरारुर आफ्नो इच्छा पूर्ण गर्दछन् । अभिषेकात्मक रुद्रीपाठमा कामना विशेषले अभिषेक द्रव्य पनि भिन्नभिन्न बताइरुको छ । वृष्टि कामना गर्ने र ज्वरोको प्रकोप शान्त गराउन इच्छा गर्नेहरूले जलधाराद्वारा, पशुधनको

इच्छा गर्नेले दहीको धाराद्वारा, पत्रको इच्छा र प्रमेह रोग शान्ति गर्ने तथा दीर्घाय बनौँ भन्ने इच्छा हुनेहरूले दुधको धाराद्वारा, पापनाश गर्ने र निरोगी बनौँ भन्ने इच्छा गर्नेहरूले क्रमैले मह र घिउको धाराद्वारा, मोक्षको इच्छा हुनेले तीर्थजलको धाराद्वारा, शत्रुनाश गर्न इच्छुकले सर्स्युंको तेलको धारा गरेर रुद्रीपाठपूर्वक रुद्राभिषेक गर्नु वा गराउन् भनिस्को छ । जलधारा क्रममा तामा वा चाँदी वा पित्तलको जलहरीद्वारा गरिन्छ र अर्को गौरीगाईको सिङले जलधारा गर्नू भन्ने पनि छ र सोही अनुसार सिङले पनि जलधारा गरिन्छ । जुनसुकै कर्ममा पनि रंउटा मुख्य वा प्रधान कर्म हुन्छ । अरू त्यसमा सहयोगीका रूपमा गरिने अङ्गकर्म हुन्छन् । यहाँ रुद्राभिषेक जलधारापूर्वक रुद्रीपाठ गर्नु मुख्य कर्म हुन्छ । अरू वरण, पुण्याहवाचन, दीप, कलश, गणेश पुजाहरू सबै अङ्ग कर्मका रूपमा हुन्छन् । सबै अङ्गकर्मले प्रधान कर्म रुद्धाभिषेकलाई सहयोग गर्दछन । रुद्रीपाठद्वारा तमोमूर्ति महारुद्र प्रसन्न हुनुहुन्छ । रुद्रकोप शान्त हुन्छ । जब रुद्र कृपित हुनुहुन्छ । त्यसबेला उहाँबाट रंउटा कुनै त्यस्तो भयङ्कर कोपज्वाला निस्कन्छ र त्यो कोपज्वाला परमाणु रूप लिसर यसरी सर्वत्र व्याप्त भरूर फैलिन्छ कि जो गगनमण्डल, वायुमण्डल, जल, स्थल, अन्न आदिमा सर्वत्र छरिस्टर रहन्छ । यसै गरी उहाँले प्रहार गर्नुभरका बाणहरू पनि सर्वत्र छरिरका हुन्छन् । यस्तो रुद्रको कोपज्वाला वा बाणको प्रचण्ड प्रहारमा तब मनुष्य वा पशुपक्षी कुनै पर्दछ भने त्यो कहिल्यै पनि कुशल, मङ्गलमय र स्वस्थ रहन सक्दैन । यस्तो प्रहारबाट बच्न भगवान् रुद्रलाई प्रसन्न गराउनुपर्दछ । रुद्रलाई प्रसन्न तुल्याउने सबैभन्दा उत्तम साधन रुद्रीपाठ नै हो । रुद्रीपाठद्वारा भगवान् रुद्र ज्यादै

अभिषेकात्मक रुद्रीलाई रुद्राभिषेक भनिन्छ । यसमा जलको धारा दिस्र रुद्रीपाठ गरिन्छ । रुद्राभिषेक गर्दा यसै क्रमले प्रधान कर्म र अङ्ग कर्महरू गरिन्छन् ।

(क) रुद्राभिषेकविधिः

चाँडो प्रसन्न हुनुहुन्छ ।

श्रीगणेशाय नमः । श्रीमङ्गलमूर्तये नमः ।

तत्रादौ मङ्गलाचरणम् -

यजमानः पूर्वाभिमुखः स्वासन उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देवान्नमेत् ।

```
ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।
ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।
ॐ सर्वभ्यो देवभ्यो नमः। ॐ सर्वभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
ॐ स्मुखश्चैकदन्तश्च किपलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणाधिपः।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छुणुयादिप ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवणं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥
अभीप्सितार्थसिद्धचर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥
```

॥ इति मङ्गलाचरणम् ॥

(अ) वरणम्⁹

कर्मपात्रं कृत्वा - गन्धपुष्पाक्षतफलवस्त्रद्रव्यादियुतां वरणसामग्रीं सम्पाद्य यवकुशजलान्यादाय वरणसामग्रीं च हस्तेनादाय वरणसङ्कल्पं कुर्यात् ।

हिरः ॐ तत्सत् ३, ॐ विष्णुः ३, अद्येह श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य सकल जगतः सृष्टिकारिणो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे प्रल्हादाधिपत्ये मनौ सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे सत्यत्रेताद्वापरान्ते बौद्धावतारे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तस्य प्रथमचरणे भूलोंके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गते गङ्गादेव्या उत्तरदिग्भागे

^{9.} वरणको अर्थ हो - जुनसुकै आफूले गर्न लागेको कर्म छ, त्यस कर्मको सञ्चालनका निम्ति ब्राह्मणलाई कुनै पदमा राखी कर्म गर्ने अधिकार दिन्न । (रुद्राभिषेकमा पाठकको पदमा राखी रुद्रीपाठको अधिकार दिइन्छ) । यसरी वरण गर्दा - धोती, उपर्ना, गन्जी वा भोटो, पञ्चपात्र, आसनी, औठी आदि आफूले जेजस्तो ब्राह्मणलाई दिन सिकन्छ, ती सबै कुरा राखी 'यस काममा म तपाईंलाई यस पदमा राखी वरण गर्दछु' भनी सङ्कल्प पढिन्छ । पिछ टीका लगारुर ती वस्तुहरू दिइन्छन् ।

हिमाचलस्य दक्षिणपार्श्वे नेपालदेशे पाशुपतक्षेत्रे पशुपतेः गृहयकाल्याश्च (अमुक) दिग्भागे (अमुक) ग्रामे वा नगरे इह पुण्यभूमौ षष्टिसंवत्सराणां मध्ये (अमुक) नाम्नि संवत्सरे श्रीसूर्ये (अमुक) अयने (अमुक) ऋतौ (अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे (अमुक) राशिस्थिते श्रीसूर्ये (अमुक) राशिस्थिते देवगुरौ (अमुक) राशिस्थिते चन्द्रमसि अन्येषु शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु रुवं ग्रहगणविशेषेण विशिष्टान्वितायां शुभपण्यतिथौ (अमुक) गोत्रस्य (अमुक) प्रवरस्य (अमुक) शर्मणो मम (अमुकनाम्नो मम) सभार्यस्य सपुत्रपौत्रस्य सक्ट्रम्बस्यायुरारोग्यैश्वर्योत्तरोत्तरहर्षविजयोदयपूर्वकं दारिद्रयदुःखदुर्भिक्ष्य-दौर्मनस्य दौर्भाग्योपसर्ग-महामारी-त्रासोल्कापात-निर्धातभूकम्पादि-सूचित-सकल-दोषोपशान्त्यर्थ दुः स्वप्न-सुस्वप्नता-वाप्तिपूर्वक-बालग्रहदशान्तर्दशागो चरदशादिसकलदो षोपशमनार्थः बाह्याभ्यन्तरज्वरातिसारापरमारश्वासकासादिसमस्तरोगाणां भटितिनिवृत्तिपूर्वकमारोग्यतावाप्तये विशेषतः आध्यात्मिकाधिदैविकाधिभौतिकादितापत्रयोपशमनपूर्वकधर्मार्थकाममोक्षादिचतुर्विध-फलप्राप्तये श्रीपरमेश्वरसाम्बसदाशिवप्रीतये दीपगणेशकलशपुजनपूर्वकं श्रीसाम्बसदाशिवोपरि अविच्छिन्नजलधारया (दुग्धादि धारया वा) (अमुक) सङ्ख्याकब्राहमणद्वारा (अमुक) रुद्राभिषेकं कर्तुं तथा श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीतये मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत "सप्तशती" स्तोत्रस्य साङ्गोपाङ्ग (संपृटित) पाठं कर्तु (अमुक) गोत्रम् (गोत्रान् वा) (अमुक) शर्माणं (शर्मणो वा) ब्राहमणम् (ब्राहमणान् वा) रंभिश्चन्दनपुष्पाक्षतफलवस्त्रद्रव्यादिभिरहं वृणे ।

```
ॐ वृतोऽस्मि (वृताः स्मः वा) इति प्रतिवचनम् ।
यथाविहितं कर्म कुरु (कुरुत वा) । करवाणि (करवामः वा) इति प्रतिवचनम् ।
॥ इति ब्राह्मणवरणम् ॥
```

ततो हस्ते सर्षपाक्षतान् गृहीत्वा -

```
ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिमाश्रिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामिवरोधेन शिवकर्म समारभे॥
```

इति पठन् देवयजनभूमौ सर्वत्र विकिरेत् । तत ईश्वरवन्दनेनात्मरक्षां कुर्यात् ।

```
तत्र क्रमः -
```

```
ॐ ईश्वराय नमः इति पूर्वे । ॐ आग्नेयेश्वराय नमः आग्नेये ।
ॐ यमेश्वराय नमः दक्षिणे । ॐ निर्ऋतीश्वराय नमः नैर्ऋत्ये ।
ॐ वरुणेश्वराय नमः पश्चिमे । ॐ वायव्येश्वराय नमः वायव्ये ।
ॐ सोमेश्वराय नमः उत्तरे । ॐ ईशानेश्वराय नमः ईशाने ।
ॐ व्योमेश्वराय नमः ऊर्ध्वायाम् । ॐ अनन्तेश्वराय नमः भूमौ ।
ॐ सर्वेश्वराय नमः सर्वतः ।
"ॐ नमो भगवते रुद्राय" ।
इति मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यात् ।
```

(आ) पृण्याहवाचनम्⁹

पुण्याहवाचनार्थं अविधुराँस्त्रिचतुरः पञ्च वा ब्राह्मणान् वृत्वा प्राङ्मुखो यजमानः कृताञ्जलिः-हरि ॐ तत्सत् ३, ॐ विष्णुः ३, पूर्वसङ्कल्पसिद्धिरस्तु (अमुक) गोत्रस्य (अमुक) प्रवरस्य (अमुक) शर्मणो मम अभीष्टफलावाप्तये करिष्यमाण (अमुक) रुद्राभिषेककर्मणि मम गृहे भो ब्राह्मणाः ! ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ३ । इति त्रिवारं पठेत् । ब्राह्मणाश्च ॐ पुण्याहम् ३ । इति त्रिः पठेयुः ।

ततो ब्राहमणाः -

```
पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ।
```

तत्र पुरके ३६, कुम्भके १२, रेचके १२ इति मन्त्रसङ्ख्या ॥

ततो यजमानः पूर्ववत्सङ्कल्पमुच्चार्य - (अमुक) रुद्राभिषेककर्मणि मम गृहे भो ब्राहमणाः ! उँ स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ३ । (ब्राहमणाश्च) उँ स्वस्ति ३ ।

र् स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

¹⁼ यजमानको अभ्युदय र समृद्धिका निमित्त पुण्याहवाचन कर्म गरिन्छ । यस कर्ममा ब्राह्मणलाई वस्त्र, द्रव्य, सुपारी, फल, दुबो आदि जो दिन सिकन्छ, त्यो दिइन्छ र ब्राह्मणहरूद्वारा मङ्गलमय अभ्युदयकारक मन्त्रहरू पिढन्छन् ।

```
यजमानः - पूर्ववत्सङ्कल्पमृच्चार्य- (अमुक) रुद्राभिषेककर्मणि मम गृहे भो ब्राह्मणाः ! 🕉
ऋद्धिं भवन्तो बुवन्तु ३ । (ब्राह्मणाश्च) ॐ ऋद्धिः ३ ।
     ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरम्ताऽअभ्म ।
      दिवं पथिव्याऽअध्यारुहामा विदाम देवान्त्स्वज्ज्यीतिः ॥
यजमानः - पूर्ववत्सङ्कल्पमुच्चार्य - (अमुक) रुद्राभिषेककर्मणि मम गृहे भो ब्राहमणाः !
ॐ वृद्धिं भवन्तो बुवन्तु ३ । (ब्राह्मणाश्च) ॐ वृद्धिः ३ ।
     ॐ ज्यैष्ठचं च मऽआधिपत्यं च मे मन्यश्च मे भामश्च मे मश्च मेम्भश्च मे जेमा च मे
      महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च
     मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥
यजमानः - पूर्ववत्सङ्कल्पमुच्चार्य - (अमुक) रुद्राभिषेककर्मणि मम गृहे भो ब्राह्मणाः !
ॐ कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ३। (ब्राह्मणाश्च) ॐ कल्याणम् ३।
     ख्रें यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
      ब्रह्मराजन्याभ्या ७ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ॥
      प्रियो देवानां दक्षिणायै दात्रिह भ्यासमयम्मे कामः समृद्धचताम्पमादो नमत् ॥
यजमानः - पूर्वसङ्कल्पमृच्चार्य - (अमुक) रुद्राभिषेककर्मणि मम गृहे भो ब्राह्मणाः ।
ॐ शान्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु ३ । (ब्राह्मणाश्च) ॐ शान्तिः ३ ।
     🧇 द्यौः शान्तिरन्तिरक्ष 🞖 शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः
      शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्बह्म शान्तिः सर्वेद्धशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥
यजमानः - पूर्ववत्सङ्कल्पमृच्चार्यः - (अमुक) रुद्राभिषेककर्मणि मम गृहे भो ब्राह्मणाः ! 🕉
श्रियं भवन्तो ब्रुवन्तु ३। (ब्राहमणाश्च) 🕉 श्रीः ३।
     🧇 मनसः काममाकृतिं वाचः सत्यमशीय ।
     पश्ना ७ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयताम् ।
इति मन्त्रान पठित्वा -
      श्रीर्वर्चस्वमाय्ष्यमारोग्यमाभिधात् पवमानं महीयते ।
      धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥
      मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
```

शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयोऽस्तु वः ॥ अव्याधिना शरीरेण मनसा च निराधिना । पूरयन्नर्थिनामाशास्त्वं जीव शरदां शतम् ॥ इति पठन्तः पूजीफलादीनि यजमानाय समर्पयेयुः । ॥ इति पुण्याहवाचनम् ॥

(इ) दीपपूजा⁹

ततो यजमान आचार्यो वा यथाविधिमध्यं संस्थाप्य दीपगणेशकलशादीन् पूजयेत् ।

ॐ पृष्टो दिवि पृष्टोऽअग्निः पृथिव्यां पृष्टो विश्वाऽओषधीराविवेश । वैश्वानरः सहसा पृष्टोऽअग्निः स नो दिवा सरिषस्पातु नक्तम् ॥

इति मन्त्रेण दीपं प्रज्ज्वाल्य

भो दीपनारायण ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, मम पूजां गृहाण । यावत्कर्म करोमि तावत्त्वं सुस्थिरो भव, वरदो भव । इत्यावाह्य,

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे
 सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ॥
 कर्मसाक्षणे दीपनारायणाय नमः । इति पूजयेत् ।

ततो हस्ते पुष्पादीन्यादाय -

ॐ नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने । नमस्ते केशवानन्त वासदेव नमोऽस्तते ॥

इाम्रा वैदिक कर्ममा जुनसुकै कर्म गर्दा पिन पिशाच, राक्षस आदि विघ्नकारक तत्त्वहरूदेखि सावधान भरर कर्म गर्ने गरिन्छ । यान्निक परम्परामा विघ्नकारक तत्त्वहरूका साथै तिनका निराकरणका उपायहरू पिन पत्ता लगाइरका छन् । जसमध्ये दीपपूजा पिन रक हो । कर्मस्थानमा बत्ती बालेर राखेपिछ कुनै पिन विघ्नकारक तत्त्वहरू त्यहाँ आउन र विघ्न गर्न समर्थ हुँदैनन् । यसकारण बत्ती बालेर राखिन्छ । दियो बाल्दा देवकार्यमा पूर्व फर्काउनु ज्यादै उत्तम कुरा हो र धेरै पूर्वितर फर्कारर राख्छन् पिन । कर्मैकर्मैको भनाइमा जतातिर देवता रहन्छन् त्यतैतिर फर्काउनुपर्छ भन्ने छ । यसलाई पिन नराम्रो भन्न सिकँदैन र कारण-बत्ती जतातिर फर्के पिन त्यसको प्रकाश त सबैतिर फैलिरको हुन्छ र त्यसले आफुले गर्ने काम पिन गरिहाल्दछ । रुद्राभिषेकमा पूर्वितरको त्रिशूल रेखीमा टपरीमा चामल राखेर त्यसमाथि दियो राखेर पूजा गरिन्छ ।

^{8.} केही शास्त्रकारले सुरुमा दियो, कलश, गणेश र कसैले दियो, गणेश, कलशको पूजा गर्नू भनेका छन् । उत्तरोत्तर क्रमलाई ध्यानमा राखेर यहाँ दियो, गणेश र कलश पूजा बताइरुको छ ।

वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भ्वनत्रयम् । सर्वभृतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तृते ॥ शुभं भवत् कल्याणमारोग्यं सुखसम्पदः । सर्वशत्रविनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्त ते ॥ ॥ इति प्रार्थयेत ॥

(ई) गणेशपूजा⁹

पूर्वसङ्कल्पमृट्यार्य, मम (अम्क) कर्म निर्विघ्नपरिसमाप्त्यर्थं यथा सम्पादितोपचारै-र्गणपतिप्जनमहं करिष्ये इति सङ्कल्प्य गणानान्त्वेति गणेशमावाहयेत् -

🤣 गणानान्त्वा गणपति ६ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ६ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति & हवामहे वसोमम । आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥

"ॐ भूर्भ्वः स्वः सिद्धिबुद्धिसहित साङ्ग सायुध सवाहन सपरिवार श्रीमन् महागणाधिपते ! इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण यावत्पूजां करोमि तावत्त्वं सुस्थिरो भव । सुवरदो भव ।"

इत्यावाहच -

ॐ नमः सिद्धिबुद्धिसहिताय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्रीमते महागणाधिपतये-इदमासनम्, पाद्यम्, अर्घ्यम्, आचमनीयम्, पञ्चामृतम् स्नानीयम्, पुनराचमनीयम्, वस्त्रम्, यजोपवीतम्, चन्दनम्, अक्षतान्, पुष्पाणि, दूर्वाङ्कुराणि, धूपम्, दीपम्, नैवेद्यम्, पूजीफलम्, फलम्, दक्षिणाम्, पादवन्दनम्, प्रदक्षिणाञ्च समर्पयामि । इति संपूज्य

हस्ते अर्घ्यसिहतं फलादिकमादाय स्तुतिं कुर्यात् -

🥉 रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक । भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥ द्वैमात्र कृपासिन्धो षाण्मात्राग्रज प्रभो ॥ वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्चितं वाञ्चितार्थद । अनेन फलदानेन सफलोऽस्त सदा मम ॥

इति अर्घ्यसिहतं फलं समर्पयेत ।

[&]quot;श्रेयांसि बहुविघ्नानि" अर्थात् शुभ कार्यमा धेरै विघ्न आउँछन् । मङ्गलस्वरूप गणेशको पूजा गरे सबै विघ्न शान्त हुन्छन् । शास्त्रको भनाइ पनि यही छ । व्यवहारमा पनि यस्तै देखिन्छ । यसकारण गणेशको पूजा गरेर कर्मको पारम्भ गरिन्छ ।

```
ततः प्रार्थना -
```

```
ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरिप्रयाय लम्बोदराय सकलाय जगिद्धताय ।

नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

अविरलमदजलिनवहं भ्रमरकुलानेकसेवितकपोलम् ।

अभिमतफलदातारं कामेशं गणपितं वन्दे ॥

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ

अविघ्नं क्र मे देव सर्वकार्येष् सर्वदा ॥ इति
```

(**उ**) কলগঘুনা^৭

ईशानदिग्भागे प्र्रणं ताम्रं मृण्मयं वा कलशं धान्योपिर संस्थाप्य भूरसीति भूमिशोधनम् - ॐ भूरिस भूमिरस्यदितिरिस विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्ती । पिथवीं यच्छ पिथवीन्द छ ह पिथवीं मा हि छसीः ॥

धान्यमसीति धान्यं स्थापयेत् -

ॐ धान्यमिस धिनुहि देवान् प्राणायत्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामन् प्रसितिमायुषे धान्देवो वः सिवता हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णात्विच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ॥

आजिघ्रेति कलशं स्थापयेत् -

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूजी निवर्तस्व सा नः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः॥

इमम्मे वरुणेति तीर्थादिजलं प्रक्षिपेत् -

ॐ इमम्मे वरुणश्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥

्व. यज्ञहरूमा सर्वत्र उदक्संस्थको प्राशस्त्य देखिरुको र हाम्रो चलनमा पूर्वमा दियो राख्ने, त्यसभन्दा उत्तरमा गणेश राख्ने र त्यसको पनि उत्तरमा अर्थात् ईशानमा कलश राख्ने गरिन्छ । त्यसकारण दियो, गणेश र कलश पूजा गर्दा हुन्छ । कलश वेदीको ईशानतर्फ राखिन्छ । यसैले यसलाई ईशानकलश भन्दछन् र यसै कलशको जलले कर्मसमाप्तिमा शान्ति अभिषेक गरिन्छ, यस कारण यसलाई शान्तिकलश पनि भनिन्छ । यस कलशमा वरुण देवताको पूजा गरिन्छ । गणपत्यादि देवताहरूको पनि यसैमा पूजा हुन्छ ।

```
या (ओषधीरिति सर्वोषधीः प्रक्षिपेत् -
      🕉 याऽओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।
      मनैन् बभ्रुणामह & शतं धामानि सप्त च ॥
हिरण्यगर्भ इति पञ्चरत्नानि -
      ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भृतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् ।
      स दाधार पृथिवीं चाम्ते माङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
याः फलिनीरिति फलानि -
      ॐ याः फलीनीर्याऽअफलाऽअपूष्पा याश्च पूप्पिणीः।
      बृहस्पतिप्रस्तास्ता नो मृञ्चन्त्व ७ हसः ॥
यवोसीति यवान -
      🧬 यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीर्दिवेत्वान्तरिक्षाय त्वा पृथिव्ये त्वा शुन्धन्ताँल्लोकाः
      पितुषदनाः पितुषदनमसि ॥
गन्धद्वारामिति गन्धम् -
      🕉 गन्धद्वारां द्राधर्षां नित्यपृष्टां करीषिणीम् ।
      ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
काण्डात्काण्डादिति दूर्वाः -
      🕉 काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
      एवानो दर्वे प्रतन् सहस्रेण शतेन च ॥
स्योनापृथिवीति सप्तमृदः -
      ॐ स्योना पृथिवि नो भवा नुक्षरा निवेशनी ।
      यच्छा नः शर्म सप्रथाः।
अश्वत्थेव इति पञ्चपल्लवैस्तन्मुखमाच्छाद्य -
      🤣 अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कता ।
      गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पुरुषम् ॥
```

```
बहस्पत इति वस्त्रयुग्मेन कलशं वेष्टयेत -
     ॐ बहस्पतेऽअति यदर्थोऽअर्हादुद्यमद्विभाति क्रत्मज्जनेष्।
      यद्दीदयच्छ वसऽऋतप्प्रजात तदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥
      उपयामगृहीतोसि बहस्पतये त्वैषते योनिर्बहस्पतये त्वा ।
अम्बेऽअम्बिक इति आम्रपल्लवादिभिस्तन्म्खमाच्छादयेत् -
     ॐ अम्बेऽअम्बिकेम्बालिके न मानयति कश्चन।
      ससस्त्यश्वकः सभद्रिकाङकाम्पीलवासिनीम ।
तत्त्ववायामीति वरुणमावाहय षोडशोपचारैः पूजयेत् -
      🕉 तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविभिः।
      अहेडमानो वरुणेह बोद्धयुरुश ६ समान । अायः प्रमोषीः ॥
      भो वरुण ! इहागच्छ, इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण । यावत्पूजां करोमि तावत्त्वं सुस्थिरो
      भव । सुवरदो भव ।
तत्रैव सर्वे समुद्रा इति तीर्थान्यावाहयेत् -
     🕉 सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
      आयान्त् यजमानस्य द्रितक्षयकारकाः ।
ततः कलशं स्पृष्ट्वाभिमन्त्रयेत -
     🤣 कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
      मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
      क्क्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वस्न्धरा ।
      ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः ॥
      अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
ततः कलशं प्रार्थयेत् -
     ॐ देवदानवसंवादे मध्यमाने महोदधौ।
      उत्पन्नोऽसि तदा क्म्भ विध्तो विष्णुना स्वयम् ॥
कर्मकाण्डः, कक्षा ६
                                                                                 99
```

त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्विय स्थिताः।
त्विय तिष्ठिन्ति भूतानि त्विय प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापितः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
त्विय तिष्ठिन्ति सर्वेऽिप यतः कामफलप्रदाः॥
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु देवेश प्रसन्नो भव सर्वदा॥
॥ इति ॥

(ऊ) रक्षाबन्धनपूजा⁹

ततः यवदूर्वासर्षपचन्दनगोमयदिधसिहतां रक्षां ताम्रपात्रे स्थापयेत् । तत्रैव यवदूर्वासर्षपचन्दनगोमयदिधसिहतां निर्मितां पोटलिकां स्पृशन्नारायणकवचं पठेत् -

ॐ पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेय्यां धरणीधरः। याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैर्ऋते ॥ वारुण्यां केशवो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः। उत्तरे श्रीधरो रक्षेदैशान्यान्तु गदाधरः॥ उद्यार्वं गोवर्धनो रक्षेद्रधस्तात्तु महीधरः। एवं दशदिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः। तत आचार्यो यजमानस्य दक्षिणकरे पोटलिकां बध्नीयात्। तदनन्तरम् अधोलिखितैः मन्त्रैः रक्षासूत्रं पूजयेत् -

ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तं वलगमुित्करामि यम्मेनिष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहन्तं वलगमुित्करामि यम्मे समानो यमसमानो निचखानेदमहन्तं वलगमुित्करामि यम्मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहन्तं वलगमुित्करामि यम्मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहन्तं वलगमुित्करामि यम्मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्याङ्करामि ॥

७. रक्षाबन्धनका निमित्त त्रिसूत्री धागो पहेँलो चन्दन (बेसार) ले रङ्गाई जौ, दुबो, सर्स्यूँ, चन्दन, गोबर, दहीसमेत ताम्रपात्रमा राखेर नारायणकवचको पाठ गरिन्छ र रक्षादेवीको पूजा गरिन्छ । यसरी पूजा गरेको रक्षासूत्र कर्म समाप्ति भरुपिछ यजमानको हातमा बाँधिन्छ । यसबाट यजमानको कल्याण हुन्छ । भूतप्रेतादि अनिष्टकारक तत्त्वहरूले छुन सक्दैनन् ।

```
🧇 स्वराडिस सपत्नहा सत्रराडस्यभिमातिहा जनराडिस रक्षोहा सर्वराडस्य मित्रहा ॥
```

ॐरक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्त्रक्षोहणो वो वलगहनोवनयामि वैष्णवान्त्रक्षोहणो

वो वलगहनोवस्तृणामि वैष्णवान्त्रक्षोहणौ वां वलगहनाऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां

वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमिस वैष्णवाःस्थ ॥

ॐ सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम् ।

सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतोऽअस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ ॥

🕉 त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄः पाहि शृणुधी गिरः।

रक्षा तोकम्तत्क्मना ॥

ततो रक्षासूत्रं कलशस्कन्धप्रदेशे स्थापयेत्।

॥ इति ॥

ततः कलशस्कन्धप्रदेशे -

- 🧬 गणपत्यादिपञ्चायतनेभ्यो नमः, 🧬 विनायकादिपञ्चलोकपालेभ्यो नमः,
- ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः, ॐ ईश्वराद्यधिदेवेभ्यो नमः,
- ॐ अग्न्यादिप्रत्यधिदेवेभ्यो नमः, ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः,
- ॐ ध्वाचष्टवस्भ्यो नमः, ॐ धात्रादिद्वादशादित्येभ्यो नमः,
- 🕉 वीरभद्राचेकादशरुद्रेभ्यो नमः, 🕉 गौर्यादिषोडशमातृभ्यो नमः,
- 🧇 आवहादिसप्तमरुद्भ्यो नमः, 🤣 विनायकब्रह्मविष्ण्रुद्रार्कवनस्पतिभ्यो नमः।
- 🕉 इष्टदेवताभ्यो नमः । 🕉 कुलदेवताभ्यो नमः । 🕉 स्थानदेवताभ्यो नमः ।
- ॐ सर्वाभ्यः देवीदेवताभ्यो नमः।

इति नाममन्त्रेण यथासम्पादितपाद्यादिधूपदीपनैवद्यान्तैरुपचारैः पूजयेत् ।

ततः प्रार्थयेत् -

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरिन्द्रपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः ।

सद्बृद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।

राह्बाह्बलं करोत् सततं केतुः क्लस्योन्नति ।

नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकुला ग्रहाः ॥

॥ इति ॥

(ऋ) प्रधानदेवतापूजा

आदौ ध्यानम् -

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतिगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं, रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् । पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

आवाहनम् -

एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे शशाङ्कमौले वृषभाधिरूढ । देवाधिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥ ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोतऽइषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ आवाहनं समर्पयामि श्री साम्बसदाशिवाय नमः ।

आसनम् -

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीिह ॥ रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम् । आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ आसनं समर्पयामि श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः ॥

पाद्यम् -

श्रवामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे ।
शिवाङ्गिरत्रताङ्कुरु मा हि छसीः पुरुषञ्जगत् ॥
उष्णोदकं निर्मलञ्च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ॥ पाद्यम् सम्।

```
अर्घ्यम -
     🕉 शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।
      यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ७ समनाऽअसत्॥
      अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपृष्पाक्षतैर्युतम् ।
      करुणाकर में देव प्रसन्नो भव शङ्कर ॥ अर्ध्यम् सम्।
आचमनीयम -
     ॐ अध्यवोचदिधवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
      अहीँश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यात्धान्योधराचीः परास्व ॥
      सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि विमलं जलम्।
      आचम्यतां मया दत्तं चन्द्रशेखर शङ्कर ॥ आचमनीयम् सम०।
स्नानीयम -
     🤏 असौ यस्ताम्रोऽअरुणऽउत बब्भः सुमङ्गलः।
      ये चैन धरुद्राऽअभितो दिक्ष श्रिताः सहस्रशो वैषा छ हेडऽईमहे ॥
      गङ्गा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी-नर्मदाजलैः।
      स्नापितोऽसि मया देव ततः शान्तिं क्रुष्व मे ॥ स्नानीयं सम०।
ऊर्ध्ववकाध्यानम् -
      व्यक्ताव्यक्तगुणोत्तरं सुवदनं षड्विंशतत्त्वाधिकं
      तस्माद्त्तरतत्त्वमक्षयमिति ध्येयं सदा योगिभिः।
      वन्दे तामसवर्जितेन मनसा सुक्ष्मातिस्क्ष्मं परं
      शान्तं पञ्चममीश्वरस्य वदनं खंव्यापि तेजोमयम् ॥
इति ध्यात्वा
पञ्चामृतरनानम् - तत्रादौ क्षीररनानम् -
ॐ आप्यायस्वेति गौतम ऋषिः परोदेवता गायत्री छन्दः ऊर्ध्ववक्ते ईशानाय क्षीरस्नाने
विनियोगः ।
```

९५

```
🤣 आप्यायस्व समेत ते विश्वतः सोम वष्ण्यम ।
      भवा वाजस्य सङ्गथे ॥
      गोक्षीरधाम देवेश गोक्षीरेण मया कृतम्।
      स्नपनं देवदेवेश गृहाण परमेश्वरः ॥ पयःस्नानं सम ।।
शुद्धोदकस्नानम् -
     🧬 आपोऽअस्मान् मातरः शुन्धयन्त् घृतेन नो घृतप्वः पुनन्त् ।
      विश्व & हिरिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापुतऽएमि ।
      दीक्षातपसोस्तन्रसि तां त्वा शिवा धंशग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पृष्यन् ॥
                                                      [शद्धोदकरनानं समर्पयामि साम्ब...]
ततः -
     🕉 भूर्भुवः स्वः तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
     तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥
ॐ ईशानाय नमः । इति मन्त्रेण गन्धपृष्पादिभिः पूजयेत् ।
(रुवं सर्वत्र)
तत्र पूर्ववक्त्रध्यानम् -
      संवर्ताग्नितडित्प्रतप्तकनकप्रस्पर्द्धितेजोऽरुणं
      गम्भीरस्मृतिनिःसृतोग्रदशनप्रोद्भासिताम्राधरम् ।
      बालेन्द्चतिलोलपिङ्गलजटाभारप्रबद्धोरगं
      वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनिमतं पूर्वं मुखं शूलिनः ॥
                                       इति ध्यात्वा
दधिस्नानम् -
ॐ दधिक्राब्ण इति वामदेवऋषिर्दधिदेवता अनुष्टुप्छन्द पूर्ववक्त्रे तत्पुरुषाय दधिस्नाने
विनियोगः ।
```

```
त्ॐ दधिकाव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
      सरभि नो मखाकरत्प्रणऽआय ७ षि तारिषत ।
      दध्ना चैव महादेव स्नपनं क्रियते मया।
      गृहाणैव मया दत्तं सुप्रसन्नो भवाद्य वै ॥ [दिधिरनानं समर्पयामि...]
शद्धोदकस्नानम् -
      ॐ आपोऽअस्मान् ०। [शृद्धोदकरनानं समर्पयामि ...]
     पुनः 🕉 तत्पुरुषाय नमः, इति पूर्ववत् गन्धादिभिः संपूजयेत् ।
तत्र पश्चिमवक्त्रध्यानम् -
      प्रालेयामलबिन्दकन्दधवलं गोक्षीरफेनप्रभं
      भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहनं ज्वालावलीलोचनम् ।
      ब्रह्मेन्द्रादिमरुद्गणैःस्तृतिपरैरभ्यर्चितं योगिभि-
      र्वन्देहं सकलं कलङ्करितं स्थाणोर्म्खं पश्चिमम् ॥ इति ध्यात्वा
घृतस्नानम् -
ॐ घृतं मिमिक्ष इति गृत्समद ऋषिः घृतो देवता त्रिष्टुप्छन्दः पश्चिमवक्त्रे सद्योजाताय
घतस्नाने विनियोगः ।
     🤣 घतं मिमिक्षे घतमस्य योनिर्घतेश्रितो घतम्वस्य धाम ।
      अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥
      सर्पिषा च महादेव स्नपनं कियते मया।
      गृहाण श्रद्धया दत्तं तव प्रीत्यर्थमेव च ॥ [घृतस्नानं समर्पयामि साम्ब...]
शुद्धोदकस्नानम् -
      🕉 आपोऽअस्मान् ०। [शुद्धोदकरनानं समर्पयामि ...]
     पुनः 🕉 सद्योजाताय नमः । इति पूर्ववत् पूजयेत् ।
तत्र दक्षिणवक्त्रध्यानम -
      कालाभ्रभ्रमराञ्जनाचलनिभं व्यावृत्तपिङ्गेक्षणं
      खण्डेन्द्द्वयमिश्रितांश्दशनप्रोद्भिन्नदंष्ट्राङ्क्रम् ।
```

99

```
सर्पप्रोतकपालशक्तिसकलव्याकीर्णसच्छेखरं
      वन्दे दक्षिणमी वरस्य कृटिलं भ्रभङ्गरौद्रं मुखम् ॥ इति ध्यात्वा
मधुरनानम् -
     🕉 मध्वाताऽऋतायते मध् क्षरन्ति सिन्धवः।
      माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥
      मध् नक्तम्तोषसो मध्मत्पार्थव धरजः।
      मध् चौरस्तु नः पिता ॥
      मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽअस्तु सुर्यः ।
      माध्वीर्गावो भवन्तु नः।
      तरुप्ष्पसम्द्भृतं स्स्वाद् मध्रं मध्।
      तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् । [मधुरनानं समर्पयामि...]
शुद्धोदकस्नानम् -
      🕉 आपोऽअस्मान्०। [शुद्धोदकरनानं समर्पयामि...]
      पुनः ॐ अघोराय नमः इति पूर्ववत् पुजयेत्।
तत्र उत्तरवक्त्रध्यानम् -
      गौरं क्ङ्क्मिपिङ्गलं स्तिलकं व्यापाण्ड्गण्डस्थलं
      भ्रविक्षेपकटाक्षवीक्षणलसत्संसक्तकर्णोत्पलम् ।
      स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतं
      वन्दे पूर्णशशाङ्कमण्डलनिभं वक्त्रं हरस्योत्तरम् ॥ इति ध्यात्वा
शर्करास्नानम् -
ॐ अपा ७ रसमित्यस्य इन्द्रबृहस्पतिऋषिरनृष्ट्रप्छन्दः सदाशिवो देवता उत्तरवक्त्रे वामदेवाय
शर्करास्नाने विनियोगः ।
     🧇 अपा ७ रसमुद्रयस ६ सूर्वे सन्त ६ समाहितम् ।
      अपा ंरसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा
      ज्ष्टङ्गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा ज्ष्टतमम्॥
```

```
इक्षसारसमदभता शर्करा पष्टिकारिका ।
      मलापहारिणी दिव्या स्नानाय प्रतिगृहयताम् ॥ [शर्करास्नानं समर्पयामि...]
शद्धोदकस्नानम् -
      🕉 आपोऽअस्मान् ०। [शृद्धोदकस्नानं समर्पयामि ...]
      पुनः 🕉 वामदेवाय नमः इति पूर्ववत् पुजयेत्।
गन्धोदकस्नानम -
      मलयाचलसम्भृतं चन्दनागरुवासितम्।
      सलिलं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
      🕉 गन्धद्वारां द्राधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
      ईश्वरीं सर्वभृतानां तामिहोपह्रये श्रियम् ॥
      नानास्गन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयतम्।
      उद्वर्तनं मया दत्तं गृहाण शशिशेखर ॥
      🕉 अ ६शनाते अ६शः पुच्यताम्परुषा परुः।
      गन्धस्ते सोममवत् मदाय रसोऽअच्यतः ॥ [गन्धोदकस्कनानं समर्पयामि...]
पुनः शुद्धोदकस्नानम् -
      🕉 आपोऽस्मान्० । [शृद्धोदकस्नानं समर्पयामि...]
(ऋ) ततो नाममन्त्रेण सङ्क्षिप्तपूजा
      "ॐ साम्बसदाशिवाय नमः" ।
इति मन्त्रेण गन्धाक्षतिबल्वपत्रधूपदीपनैवेद्यानि समर्प्य -
"ॐ गणानान्त्वा" इत्यादिभिर्मन्त्रैः संकल्पितावृत्तिभी रुद्राध्यायं पठन् जलधारया (दुग्धादिधारया
वा) अभिषेकं कुर्यात्। ।
      रनपनद्रव्यभेदेन फलभेदाः -
τ.
      जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशान्त्यै कुशोदकैः ।
      दध्ना च पशुकामाय श्रिया इक्षुरसेन च ॥
      मध्वाज्येन धनार्थी स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा ।
      पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसा चाभिषेचनात् ॥
      वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना ।
      सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसा चाभिषेचनात् ॥
```

अन्यच्च -

ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थं जलधारा शिवप्रिया । घतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्रकम् ॥ तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः । प्रमेहरोगशान्त्यर्थं प्राप्नयान्मानसेप्सितम् ॥ केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः । शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत् ॥ श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शङ्करस्य च ॥ सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह ॥ मधुना यक्ष्मराजोऽपि गच्छेद्वै शिवपूजनात् । पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा ॥ जीवनार्थी तु पयसा श्रीकामीक्षरसेन वै। पुत्रार्थी शर्करायास्तु रसेनार्चेटिछवं तथा ॥ महालिङ्गाभिषेकेण सुप्रीतः शङ्करो मुदा । अन्यदपि (आवृत्तिभेदेन फलविशेषः) बालग्रहोपशान्त्यर्थमेकावृत्तिमृदीरयेत् । उपसर्गादिशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तिः पठेन्नरः ॥ ग्रहोपशान्त्यै कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वरानने । महाभये समृत्पन्ने सप्तावृत्तिमृदीरयेत् ॥ नवावृत्या भवेच्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत्। राजवश्ये विभृत्यै च रुद्रावृत्तिमदीरयेत् ॥ रुद्दैस्त्रिभः कामसिद्धिवैरिहानिश्च जायते । रुद्रैः पञ्चभिः शत्रुश्च तथा स्त्रीवश्यतामियात् ॥ रुद्रैः सप्तभिः सङ्ख्याभिः श्रियमाप्नोति मानवः । नवरुद्रैः पत्रपौत्रधनधान्यसमन्वितः ॥ राजभीतिविनाशाय वैरस्योच्चाटनाय च । धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनाय ततः परम ॥ अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्ययशः श्रियै । राज्यवृद्धिप्रदानार्थं महारुद्रैकसङ्ख्यया ॥ त्रिभिश्चैव महारुदैरसाध्यसाधनाय च । पञ्चिभश्च महारुदैः राज्यलाभः प्रसाध्यते ॥ सप्तभिश्च महारुद्धैः सप्तलोकः प्रसाध्यते । नवभिश्च महारुद्रैः पुनर्जन्म न विद्यते ॥ अतिरुद्रैकसङ्ख्येन देवत्वं प्राप्नुयाद्मरः । डाकिन्यादिभये प्राप्ते रुकावृत्तिं जपेन्नरः ॥ भृतप्रेतपिशाचानां भये च गुणवृत्तिभिः। ग्रहदोषदशायाश्च पञ्चावृत्तिर्न संशयः ॥ ज्वरातिसारदोषादौ वातिपत्तकफादिषु । सर्वरोगोपशान्त्यर्थं सप्तावृत्तीः पठेन्नरः ॥

- (ख) रुद्राभिषेकान्तर्गतः षडङ्गन्यासः शतरुद्रीयमन्त्रपाठक्रमश्च तत्र कमः
- (अ) रुद्राध्यायस्य प्रथमाध्यायपाठः

हृदयन्यासः

(गणानान्त्वा. इत्यारभ्य सुषारिथरश्वान्.)

इति रुद्राध्यायस्य दशमन्त्रात्मकं प्रथमाध्यायं पठित्वा- "ॐ हृदयाय नमः" इति हृदयन्यासं कुर्यात् ।

(आ) द्वितीयाध्यायस्य षोडशमन्त्रपाठः

शिरोन्यासः

'सहस्रशीर्षा पुरुषः.' इत्यारभ्य 'यज्ञेन यज्ञम्.' इत्यन्तान् द्वितीयाध्यायस्य षोडश मन्त्रान् पठित्वा-"ॐ शिरसे स्वाहा" इति शिरोन्यासं कुर्यात् ।

(इ) द्वितीयाध्यायस्य अवशिष्टमन्त्रपाठः

शिखान्यासः

'अद्भ्यः सम्भृतः.' इत्यारभ्य श्रीश्चते., इति षण्मन्त्रान् पठित्वा- "ॐ शिखायै वषट्" इति शिखान्यासः ।

(ई) तृतीयाध्यायस्य पाठः

कवचन्यासः

आशुः शिशानः व इत्यारभ्य मर्माणिते व इति सप्तदशमन्त्रात्मकं तृतीयाध्यायं पठित्वा - "ॐ कवचाय हुम्" इति कवचन्यासं कुर्यात् ।

(उ) चतुर्थाध्यायस्य पाठः

नेत्रन्यासः

विभाइ बृहत् । इत्यारभ्य आकृष्णेन । इति सप्तदशमन्त्रात्मकं चतुर्थाध्यायं पठित्वा - "ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्" इति नेत्रन्यासं कुर्यात् ।

असाध्यरोगनाशाय मनोऽभीप्सितकर्मणि । अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्याय वै नमः॥

(इति रुद्रयामले, मेरुतन्त्रे)

(ऊ) पञ्चमाध्यायस्य षोडशमन्त्रपाठः

अस्त्रन्यासः

नमस्ते । इत्यारभ्य मानस्तोके । इति षोडश मन्त्रान् पठित्वा -"ॐ अस्त्राय फट्" इति अस्त्रन्यासं कुर्यात् ।

॥ इति षडङ्गन्यासक्रमः ॥

(ऋ) तत्र शतरुद्रीयमन्त्रपाठक्रमः

पञ्चमाध्यायस्य प्रथममन्त्रतः समग्राध्यायपाठः, पुनः (नमस्ते०) षोडशमन्त्र पाठः । समग्रषष्ठाध्याय पाठः० (एषते इति द्वौ मन्त्रौ, नमस्ते० इति द्वौ मन्त्रौ, नतम्बदाथ० इति द्वौ मन्त्रौ, मीढुष्टम इति चत्वारो मन्त्राः, वयिसोम इति अष्टौ मन्त्राणां पाठः) ॥ इति शतरुदीयमन्त्रपाठकमः ॥

(ऋ) अथ शान्तिपाठक्रमः

उग्रश्च, अग्नि **धहृदयेन**, उग्रँल्लोहितेन, वाजश्च मे, प्राणश्च मे, इमा मे, विश्वतश्चक्षुः इत्येकैकं मन्त्रं पठित्वा -

"ऋचं वाचम्०" इत्यस्य समग्राध्यायपाठः, अन्ते च -

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रः, विश्वानि देव इत्येतेषां मन्त्राणां पाठः।

॥ इति शान्तिपाठक्रमः ॥

(ग) अथ रुद्राभिषेकः

```
(अ) षडङ्गन्यासः
🤏 मनोजितिर्ज्ज्षतामाज्ज्यंस्यबृहस्प्पितिर्ध्वज्ञिममन्तंनोत्वरिष्टंब्यज्ञ धसिममन्दंधात् ॥
व्विश्श्वेदेवासंऽइहमादयन्तामों३ प्रतिष्ठ ॥
ॐ हृदयाय नमः ॥१॥
🕉 अबोद्ध्यग्नि? समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिनायतीम्षासम् ॥
यह्वाऽइंवप्रवयामुज्जिहांना श्प्रभानवं ÷ सिस्रतेनाकमच्छं ॥
ॐ शिरसे स्वाहा ॥२॥
🤏 मृद्र्ध्यानन्दिवोऽअरितम्पृथिव्व्याव्वैषश्वानरमृतऽआजातमग्निम् ॥
कवि धसम्म्राजमितिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवा ?॥
🕉 शिखायै वषट् ॥३॥
🤏 मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमंस्त्वाराजामृतेनानुंवस्ताम् ॥
उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु ॥
ॐ कवचाय हम् ॥४॥
🧬 व्विश्श्वतश्च्चक्ष्रतिव्विश्श्वतोम्खोव्विश्श्वतोबाह्रुतव्विश्श्वतंस्प्पात् ॥
सम्बाह्बभ्यान्धर्मातसम्पतत्रैर्चावाभूमीजनयन्देवऽएक'÷॥
🕉 नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥
🤏 मान'स्तोकेतनयमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषं ॥
मानो व्वीरान्त्रुंद्द्रभामिनो व्वधी हिवष्ण्मंन्तु दंसद्मित्त्वाहवामहे ॥
ॐ अस्त्राय फट् ॥६॥
ध्यानम् -
ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतिगरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ॥
पद्मासीनं समन्तात्स्त्तममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥
```

(आ) शतरुद्रीयमन्त्रपाठः

अथ रुद्रे प्रथमोऽध्यायः

श्रीगणेशाय नमः।

हरिः ॐ गणानान्त्वागणपति धहवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपति धहवामहे निधीनान्त्वानिधिपति ध हवामहेव्वसोमम ॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् ॥१॥ गायत्रीत्रिष्ट्टुब्ब्जगत्त्यनुष्ट्टुप्पङ्क्त्यासह ॥ बृहत्त्य्ष्णिणहां कक्प्स्चीभिं शम्मयन्त्त्वा ॥२॥ द्विप'दायाश्च्चत्ंष्पदास्त्रिप'दायाश्च्चषट्प'दाढ् ॥ विवच्छन्दायाश्च्चसच्छन्दा**ं** सुचीभि ÷शम्म्यन्त्त्वा ॥३॥ सहस्तोमा&सहच्छन्दसऽआवृत'÷सहप्प्रमाऽऋषय&सप्प्तदैळ्यां÷ ॥ पूर्व्वेषाम्पन्थामन्दृश्श्यधीराऽअन्न्वालेभिरेरत्थ्योनरशम्मीन् ॥४॥ यज्जाग्ग्र'तोदुरम्दैतिदैवन्तद्'सुप्प्तस्यतथैवैति'॥ दुरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्न्मेमनं ÷शिवसंङ्कल्प्पमस्त् ॥५॥ येनकर्माण्ण्यपसोमनीषिणोयज्ज्ञेकृण्ण्वन्तिव्विदथेषुधीरां ।। यदंपूर्व्वं ध्यक्क्षमन्त्र ? प्यजानान्तन्न्मेमनं ÷शिवसं ङ्वल्प्यमस्त् ॥६॥ यत्त्रज्ज्ञानंमृतचेतोधृति रच्चयज्ज्योति रन्तरमृत म्प्रजास् ॥ यस्म्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्मिकित्रयतेतन्न्मेमनं रशावसंङ्गल्पमस्तु ॥७॥ येनेदम्भूतम्भ्वंनम्भविष्यत्त्परिगृहीतममृतेनसर्व्वम् ॥ येनयज्ज्ञस्तायतेसप्प्तहोतातन्न्मेमनं शिवसङ्कल्पमस्तु ॥८॥ यस्मिमन्नृच सामयज् ७ विषयस्मिनन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवारा ।। यस्मिमेरिच्चत्त धसर्व्वमोर्तम्प्रजानान्तन्न्मेमनं रेशवसंङ्कल्प्यमस्त् ॥९॥ सुषारथिर ११ वानिवयन्नमं नुष्यान्ने नीयते भीशुंभिर्व्वाजिन / इव ॥ हृत्प्रतिष्ठिंयदंजिरञ्जिविष्ठन्तन्न्मेमनं शिवसंङ्गल्प्यमस्त् ॥१०॥ ॥ इति रुद्रे प्रथमोऽध्यायः ॥

अथ रुद्रे द्वितीयोऽध्यायः

हरिः ॐ सहस्रशीर्षापुरुष दंसहस्राक्क्ष ?सहस्रपात्॥ सभूमि धसर्वित स्पृत्त्वात्त्येतिष्ठदृशाङ्ग्लम् ॥१॥ प्रषऽएवेद&सर्व्वं स्यद्द्भृतं स्यच्च भाळ्यम् ॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहित ॥२॥ एतावीनस्यमहिमातोज्ज्यायाँ रच्चपूरुषढं ॥ पादोस्यव्विश्व्वीभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥३॥ त्रिपादृद्ध्वंऽउदैत्पुरुष**७** पादोस्येहाभवत्पुनं÷ ॥ ततोव्विष्व्वङ्व्यक्कामत्त्साशनानशनेऽअभि ॥४॥ ततोव्विराडंजायतव्विराजोऽअधिपुरुंषढं ॥ सजातोऽअत्त्यंरिच्च्यतप्रच्चाद्द्भूमिमधोपुर् ॥४॥ तस्म्माद्बज्ज्ञात्त्सर्व्वहुतु दसम्भृतम्पृषद्गुज्ज्यम् ॥ पश्रँस्ताँ श्च्यं क्के व्वायव्यानारण्याग्ग्राम्म्याश्च्यये ॥६॥ तस्म्माद्द्यज्ज्ञात्त्सर्व्वहुतऽऋच दंसामानिजज्ज्जिरे ॥ छन्दां ७ सिजिज्जिरेतसम्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥ तस्म्मादश्श्वीऽअजायन्तयेकेचोभयादति ॥ गावोहजिज्जरेतसम्मात्तस्माज्जाताऽअजावयं÷ ॥८॥ तंँयज्ज्ञम्बुर्हिषुप्प्रौक्क्षुन्न्पुरुषञ्जातम्ग्रुत?॥ तेनदेवाऽअयजन्तसाद्धचाऽऋषयश्च्चये ॥९॥ यत्तपुरुषं व्वयदेधु देकतिधा व्ययक ल्प्पयन् ॥ मुखिइमंस्यासीत्किम्बाह्विमुरूपादांऽउच्च्येते ॥१०॥ ब्राह्म्मणोऽस्यम्खमासीद्द्बाहूराजन्न्य्÷कृत्र ॥ ऊरूतद'स्युषद्द्रैश्श्यं÷पुद्भ्या७ंशूद्द्रोऽअंजायत ॥११॥ चन्द्रमामन'सोजातश्च्चक्क्षो&सुरुक्षेऽअजायत ॥ श्रोत्रोदद्वाय्श्च्चंप्प्राणश्च्चम्खादिग्निरंजायत ॥१२॥ नाबभ्योऽआसीदन्तरिक्क्ष ६ शीष्ट्योट्चौ ?समवर्त्तत ॥ पुद्द्भ्याम्भूमिर्द्विशुद्श्रोत्रात्तथालोकाँ २॥ऽअकल्प्पयन् ॥१३॥ यत्तप्रिषेणहिवषादेवायज्ज्ञमतन्न्वत ॥ व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यंङ्ग्रीष्म्मऽइद्ध्म?शरद्धवि? ॥१४॥ सप्प्तास्यांसन्न्परिधयस्त्रि?सप्प्तसमिधं÷कृता?॥ देवायद्द्यज्ज्ञन्तान्न्वानाऽअबद्ध्नन्न्प्रुषम्पशुम् ॥१५॥ यज्ज्ञेन'यज्ज्ञम'यजन्तदेवास्तानिधर्माणिप्प्रथमान्न्यांसन् ॥ तेहनाक ममिहमान सचन्तयत्रपूर्वे साद्ध्या ?सिन्तिदेवा ? ॥१६॥ अद्द्भ्य?सम्भृतंद्पृथिव्व्यैरसांच्चिव्विश्रवकंमर्मणद्समंवर्त्तताग्ग्रे ॥ तस्यत्त्वष्ट्टीव्विदधदूरुमोतितन्न्मत्तर्यस्यदेवत्त्वमाजानमग्ग्रे ॥१७॥ व्वेदाहमेतमपुरुषम्महान्तमादित्त्यवर्ण्णन्तमसंदंपरस्तात् ॥ तमेविव्विदित्त्वाति मृत्त्यु मेतिनान्न्य २ पन्थोव्विद् चतेर्यनाय ॥ १८॥ प्रजापितिश्च्चरतिगर्ब्भेऽअन्तरजायमानोबहुधाव्विजायते ॥ तस्ययोनिम्परिपश्शयन्तिधीरास्तिरिम्मन्न्हतस्त्थुर्ब्भवनानिविश्श्वा ॥१९॥ योदेवेब्भ्यंऽआतपंतियोदेवानामपुरोहितं ॥ पूर्व्वोयोदेवेब्भ्योजातोनमोरुचायब्ब्राह्म्मये ॥२०॥ रुचम्ब्राह्ममञ्जनयेन्तोदेवाऽअग्रेतदंब्ब्रुवन् ॥ यस्त्वैवम्ब्राह्ममणोव्विद्द्यात्तस्यदेवाऽअसन्न्वशे ॥२१॥ श्रीश्च्यंतेलक्ष्मीश्च्यपत्वन्यावहोरात्रेपाश्श्वेनक्क्षंत्राणिरूपम्श्श्वनौळ्यात्तंम् ॥ इष्णित्रिषाणाम्मम्। इषाणसर्व्वलोकम्म । इषाण ॥२२॥ ॥ इति श्रीरुद्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥

अथ रुद्रे तृतीयोऽध्यायः

हरिः ॐ आश् शिशानोव्वषभोनभीमोघनाघन शिभण श्चिषणीनाम् ॥ सङ्कन्दंनोनिमिषऽएंकवीर?शत ६ सेनांऽअजयत्त्साकमिन्द्रं ॥१॥ सङ्कन्दंनेनानिमिषेणेजिष्ण्नायुत्त्कारेणद्श्च्यवनेनधृष्ण्ना ॥ तदिन्द्रेणजयततत्त्सहद्भवंष्यधोनरऽइष्हस्तेनव्वष्णणा ॥२॥ सऽइष्हरतैदंसिनषिक्षिभिर्व्वशीस७ स्रष्ट्वासय्धऽइन्द्रोगणेन ॥ स ध सृष्ट्रजित्त्सो मपाबा हुशद्धर्च्ग्ग्रध न्न्वाप्प्रतिहिताभिरस्ता ॥३॥ बृहंस्प्पतेपरिदीयारथेनरक्क्षोहामित्रां २॥ऽअपबाधंमान ।। प्रभुञ्जन्त्सेनाढंप्प्रमृणोयुधाजयन्नरुम्माकंमेद्धचित्तारथानाम् ॥४॥ बलविज्ञायस्त्थविरंदंप्प्रवीरंदंसहंस्वान्न्वाजीसहंमानऽउग्ग्र?॥ अभिवीरोऽअभिसत्त्वासहोजाजैत्रीमन्द्ररथमातिष्टुगोवित् ॥५॥ गोत्रभिदं श्लोविदंव्वज्ज्रंबाह्ञ्जयंन्तमज्ज्मंप्प्रमृणन्तमोजंसा ॥ इम ७ स'जाताऽअनु'वीरयद्विमन्द्र'७ सखायोऽअनुस ७ र'भद्वम् ॥६॥ अभिगोत्राणिसह'सागाह'मानोदयोव्वीर?शतम'न्न्युरिन्द्र'÷ ॥ दुश्च्यवनश्पृतनाषाड्युद्धच्योस्ममाक्ष्ट्सेनाऽअवतुप्प्रयुत्तसु ॥७॥ इन्द्रं आसान्नेताबृहस्प्पतिई विक्षणायज्ञ २ प्रऽएत्सोमं 🛨 ॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्ग्रम् ॥८॥ इन्द्रंस्यव्वष्ण्णोव्वरुणस्यराज्ञंऽआदित्त्यानाम्मरुता ७ शर्द्धंऽउग्ग्रम् ॥ महामनसाम्भुवनच्च्यवानाङ्घोषोदेवानाञ्जयंतामुदंस्त्थात् ॥९॥ उद्धर्षयमघवन्नार्युधान्न्युत्त्सत्त्वनाम्मामकानाम्मनां ७ सि ॥ उद्दू त्रहन्न्व्वाजिनांव्वाजिनान्न्युद्द्रथानाञ्जयेताँग्यन्तु-घोषी । १०॥ अस्म्माक्षिन्द्र**ं**समृतिषुद्ध्वजेष्व्वस्म्माक्ंषाऽइक्षेवस्ताजयन्तु ॥ अस्म्माकंव्वीराऽउत्तरेभवन्त्वस्मां २॥ऽउदेवाऽअवताहवेषु ॥११॥ अमीक्षाञ्चित्तमप्रतिलोभयेन्तीगृहाणाङ्गान्न्यप्य्वेपरेहि ॥ अभिप्प्रेहिनिद्दर्हित्सुशोकैरन्धेनामित्रास्तमंसासचन्ताम् ॥१२॥

अवंसृष्ट्युपरापतुशरं व्यये व्यवहरम्मंस ६ शिते ॥
गच्छामित्रान्नप्रपद् चस्वमामीषाङ्ग व्यवनोच्छिष् । ॥
प्रेताजयंतानरऽइन्द्रोवं १ शम्मीयच्छत् ॥
उग्गावं ÷ सन्तु बाहवोनाधृष्य्यायथासंथ ॥ १४॥
असौयासेनां मरुतु १ परेषामु क्योतिनऽओजं सास्पर्द्धमाना ॥
ताङ्ग हतुतमुसापं व्यते नृयथामीऽअन्न्योऽअन्त्यन्न जानन् ॥ १५॥
यत्रं बाणा ३ सम्पर्तान्त कुमाराव्यिशिखाऽइव ॥
तन्नऽइन्द्रो बृहस्प्पतिरदिति १ शम्मीयच्छत् व्याश्माराज्याम् तेनानुं वस्ताम् ॥
उरोर्व्यरीयो व्यर्गणस्ते कृणोत् ज्यंन्तुन्त्वानु देवामंदन्तु ॥ १७॥
॥ इति श्रीरुद्रे तृतीयोऽध्यायः ॥

अथ रुद्रे चतुर्थोऽध्यायः

इममुपा ७ सङ्गमेसूर्व्यस्यशिशुन्नव्विप्प्रामृतिभौरिहन्ति ॥६॥ चित्रन्देवानामुद्रगादनीकञ्चक्षुंिम्मित्रस्यव्वरुणस्याग्ग्ने ।। आप्प्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षिधसुर्ध्यिऽआत्तमाजगतस्तस्त्थ्यं १०० ॥ ॥ आनऽइडाभिर्व्विदथेसुशस्तिव्विश्वानरहंसवितादेवऽएत्॥ अपियथायुवानोमत्त्संथानोव्विश्श्वञ्जगंदभिपित्त्वेमंनीषा ॥८॥ यद्द्चकच्चेव्वृत्रहत्रुदगारअभिसूर्य ॥ सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे ॥९॥ तरणिर्व्विश्श्वदर्शतोज्ज्योतिष्कदसिस्ध्र्य ॥ व्विश्श्वमाभासिरोचनम् ॥१०॥ तत्त्सुर्यस्यदेवत्त्वन्तन्नमेहित्त्वम्मद्ध्याकर्त्तोर्व्वितंतिधसञ्जभार ॥ यदेदय्क्तिहरित'÷सधस्त्थादाद्द्रात्रीव्वासंस्तन्तेसिमस्म्मै' ॥१९॥ तन्निमत्रस्यव्वरुणस्याभिचक्क्षेसूर्ब्योरूपङ्गणुतेद्द्यौरुपस्त्थे ॥ अनुन्तमुन्न्यद्दुशदस्यपाज'÷कृष्ण्णमुन्न्यद्धरित्र हसम्भरन्ति ॥१२॥ बण्णम्हाँ २॥ऽअसिसूर्ख्ञ्बडादित्त्यमुहाँ २॥ऽअसि ॥ मुहस्ते सुतो मेहिमापनस्यते द्धादेवमुहाँ २॥असि ॥१३॥ बद्दसूर्य्यश्यवसामुहाँ २॥ऽअसिस्त्रादेवमहाँ २॥ऽअसि ॥ मुह्नादेवानामस्रुर्य्÷पुरोहितोव्विभुज्ज्योतिरदाब्भ्यम् ॥१४॥ श्रायंन्तऽइवस्य्यंव्विश्श्वेदिन्द्रंस्यभक्क्षत ॥ व्वर्सनिजातेजनमान्ऽओज'साप्प्रतिभागन्नदीधिम ॥१५॥ अद्चादेवाऽउदितासूर्ब्यस्यनिरधहंसद्पिपृतानिरंवृद्चात् ॥ तन्नो मित्रोव्वरुणोमामहन्तामदितिद्सिन्धुं पृथिवीऽउतद्द्यौ । ॥१६॥ आकृष्ण्णेनरजसाव्वत्तीमानोनिवेशयेन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभ्वनानिपश्श्येन् ॥१७॥ ॥ इति रुद्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥

अथ रुद्रे पञ्चमोऽध्यायः

हरिः ॐ नमस्तेरुदुद्रमन्न्यवंऽउतोतऽइषेवेनमं÷॥ बाह्बभ्याम्ततेनमं÷ ॥१॥ यातेरद्द्रशिवातन्रघोरापीपकाशिनी ॥ तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥२॥ यामिष् िङ्गिरशन्तहस्ते बिभर्ष्यस्ति ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कृरमाहि ६ सी ६ प्रुषञ्जगत् ॥३॥ शिवेनव्वचंसात्त्वागिरिशाच्छांव्वदामसि ॥ यथान दंसर्व्वमिज्जगंदयक्ष्म ६ स्मनाऽअसंत् ॥४॥ अद्धयवोचदधिवक्काप्प्रथमोदैव्व्यीभिषक् ॥ अहीँ रच्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वार च्चयात्धान्न्योधराची दंपरास्व ॥५॥ असौयस्ताम्म्रोऽअंरुणऽउतबब्भ्र्?स्मङ्गलं÷ ॥ येचैन ७ रुद्राऽअभितोदिक्क्षु श्रिता ? संहस्रशोवैषा ७ हेड रईमहे ॥६॥ असौयोवसर्पीतनीलंग्ग्रीवोव्विलोहित । उतैन'ङ्गोपाऽअदुश्श्रन्नदृश्श्रन्नदहार्घ्य÷सदुष्ट्टोम्'डयातिन**ं** ॥७॥ नमोर्रस्त्नीलंग्ग्रीवायसहस्राक्क्षायंमीढ्षे ॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानोहन्तेब्भ्योकरन्नमं ॥८॥ प्रम् ञ्चधन्न्व नस्त्वम्भयोरात्क्न्योज्ज्याम् ॥ याश्च्चतिहस्तऽइषेवद्पराताभगवोव्वप ॥९॥ व्विज्ज्यन्धनुं÷कपर्द्दिनोव्विशंल्ल्योबाणवाँ २॥ऽउत ॥ अनेशन्नस्ययाऽइषेवऽआभ्रंस्यनिषङ्गधि ॥१०॥ यातेहितिम्मीढुष्ट्टमहस्ते बभूवतिधन् 🛨 ॥ तयास्म्मान्न्व्वश्र्वतस्त्वम्यक्मयापरिभुज ॥११॥ परितिधन्न्वनोहेतिरस्म्मान्न्वणक्क्क्विश्श्वतं ÷॥ अथोयऽइष्धिस्तवारेऽअस्म्मन्निधेहितम् ॥१२॥

अवतत्त्यधनुष्ट्ट्व ६ सहसाक्क्षशतेषुधे ॥

निशीर्ध्वशल्ल्यानाम्मुखाशिवोनं ÷सुमनाभव ॥१३॥

नमस्तऽआयुधायानाततायधृष्ण्णवे ॥

उभाक्न्यामुततेनमोबाहुक्म्यान्तव्धन्न्वने ॥१४॥

मानोमहान्त्रमुतमानोऽअर्ब्भकम्मानऽउक्क्षेन्तमुतमानऽउक्क्षितम् ॥

मानो व्वधी ६ पितरम्मोतमातरम्मान 🕆 प्रियास्तन्वो रुद्द्र रीरिष 🕹 ॥ १ ४॥

मानंस्तोकेतनयमानऽआय्षिमानोगोष्मानोऽअश्श्वेषुरीरिष्ट् ॥

मानो व्वीरान्त्रुंद्द्रभामिनो व्वधीर्ह्विष्म्मन्तु दंसद्मित्त्वाहवामहे ॥१६॥

नमोहिर'ण्यबाहवेसेनान्न्ये दिशाञ्चपत'येनमोनमो व्वृक्षेक्भ्योहिर'केशेक्भ्य ६पश्रूनाम्पत'येनमो नमं शुष्पिञ्ज'रायुत्त्विषीमतेपथीनाम्पतयेनमोनमोहिर'केशायोपवीतिनेपुष्टानाम्पतयेनमोनमो-बक्भ्लुशार्य ॥१७॥

नमोबक्क्लुशार्यव्व्याधिनेन्ना'नाम्पत'येनमोनमो'भवस्यहेत्त्यैजग'ताम्पत'येनमोनमो'रुद्द्रायाततायिनेक्षे त्राणाम्पतयेनमोनम'÷सूतायाह'न्त्यैव्वनानाम्पत'येनमोनमोरोहि'ताय ॥१८॥

नमोरोहि'तायस्त्थुपतेयेव्वृक्षाणाम्पत्येनमोनमो'भुवन्तये'व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पत्येनमोनमो 'मन्त्रिणे'व्वाणिजायकक्क्षाणाम्पत्येनमोनमोऽउच्चैग्र्यो'षायाकुकुन्दयंतेपत्तीनाम्पत्येनमोनम'÷ कृत्स्नायत्या ॥१९॥

नर्मः÷कृत्स्नायुतयाधावतिसत्त्व॑नाम्पतयेनमोनम्**६**सह॑मानायनिव्व्याधिनऽआव्याधिनी॑नाम्पतयेनमो नमोनिषुङ्गिणेकक्भाय॑स्तेनानाम्पतयेनमोनमोनिचेरवे॑परिचरायार॑ण्ण्यानाम्पतयेनमोनमोव्वञ्च॑ते ॥२०॥

नमो व्वञ्च'तेपिरवञ्च'तेस्तायूनाम्पत'येनमो नमो निषुङ्गिण'ऽइषु धिमतेतस्कक'राणाम्पत'येनमो नम'÷सृ कायिब्भ्योजिघा' से सद्द्भ्यो मुष्ण्णताम्पत'येनमो नमो सिमद्द्भ्यो नक्तुञ्चर'-द्द् भ्योव्विकृन्तानाम्पत'येनमं ÷ ॥२१॥

नम्'ऽउष्ण्णीषिणे'गिरिचारायंकुल् ञ्चानाम्पत्येनमोनम्'ऽइष् मद्भ्यो'धन्न्वायिब्भ्यंश्च्चवोनमो नम्'ऽआतन्न्वानेब्भ्यं ÷प्प्रतिदधानिब्भ्यश्च्चवोनमोनम्'ऽआयच्छुद्द्भ्योस्यद्द्भचश्च्च-वोनमोनमी व्विसृजद्द्भ्यं ÷ ॥२२॥

नमोव्यिसृजद्द्भ्योव्यिद्धचंद्द्भ्यश्च्यवोनमोनमं÷स्वुपद्द्भ्योजाग्ग्रंद्द्भ्यश्च्यवोनमोनमुढंशयाने ब्भ्यऽआसीनेब्भ्यश्च्यवोनमोनमुस्तिष्ठंद्द्भ्योधावंद्द्भ्यश्च्यवोनमो-नमं÷सुभाब्भ्यं÷ ॥२३॥ नमं ÷ सुभाब्भ्यां ÷ सुभापंतिब्भ्यश्च्चवो नमो नमो शश्वे ब्भ्यो शश्वं पतिब्भ्यश्च्चवो नमो नमो शब्द्यां नमो नमो शब्द्यां निम्दे आव्व्याधिनी ब्भ्योव्विविद्यं नित्राक्ष्यश्च्चवो नमो नमो पणेक्ष्यं ÷ ॥२४॥

नमो गुणे अन्यो गुणपति अन्यश्च्च वो नमो नमो व्वातं अन्यो व्वातं पति अन्यश्च्च वो नमो नमो गृत्त्से अन्यो गृत्त्सपति अन्यश्च्च वो नमो नमो व्विरूपि अन्यो व्विश्श्वरूपि अन्यश्च्च वो नमो नमु ढुंसे नौ अन्य ७ ॥२५॥

नमुढंसेनां क्यढंसेनानिकयं रच्चवोनमोनमोरिधक्यों अर्थेक्ये क्यं रच्चवोनमोनमं स्कृतृक्यं र सङ्ग्रहीतृक्यं रच्चवोनमोनमोमुहद्भ्योऽअर्ब्यकेक्यं रच्चवोनमं ॥२६॥

नमुस्तक्षंब्भ्योरथकारेक्भ्यंश्च्चवोनमोनमुढंकुलालेक्भ्यढंकुम्मरिक्भ्यश्च्चवोनमोनमोनिषादेक्भ्यः पुञ्जिष्टेक्भ्यश्च्चवोनमोनमं÷११वृतिक्भ्योमृगुयुक्भ्यंश्च्चवोनमोनमुढं११वक्भ्यं÷॥२७॥

नमुढं १ १ वक्त्य रे १ १ वर्षाति क्ष्य १ च्चवो नमो नमो भुवार्य चरुद्द्रार्य चुनम रेशुर्व्वार्य चपशुपत ये चुनमो नीलंग्गीवाय चशितिकण्ठाय चनम रेकपिर्दिने ॥२८॥

नम'÷कपुर्द्दिने'चुव्वयुप्प्तकेशायचुनम'÷सहस्राक्क्षायंचशुतध'न्न्वनेचुनमो'गिरिशुयायंच शिपिविष्टायंचनमोमीढुष्ट्रमायचेषुंमतेचनमोहुस्वायं ॥२९॥

नमो'हृस्वायंचव्वामुनायंचुनमो'बृहतेचुव्वर्षी'यसेचुनमो'व्वृद्द्धायंचसुवृधे'चुनमोग्ग्रचा'यचप्प्रथुमायं चनमंऽआशवे' ॥३०॥

नमऽआशवे'चाजिरायेचुनमु**ढंशीग्घ्रचा'यचुशीब्भ्य**'यचुनमुऽक्जम्म्या'यचावस्वुन्न्याृ्यचुनमो'नादे ुयायेचुद्द्वीप्प्यायच ॥३१॥

नमो'ज्ज्येष्ठायंचकनिष्ठायंचनमं÷पूर्व्यायचापरजायंचनमो'-मद्भचमायंचापगुल्क्भायंचनमो
जघुन्न्यायचबुद्ध्न्यायचनम्दंसोक्भ्याय ॥ ३२ ॥

नमुढंसोक्भ्यायचप्प्रतिसुर्ध्यायचनमोषाम्म्यायचक्क्षेम्म्यायचनमुढंश्र्रेलोक्क्यायचावसान्न्याय चनम्ऽउर्व्वर्ध्यायचखल्ल्यायचनमोव्वन्न्याय ॥३३॥

नमोव्वन्न्यायच्वकक्क्यायच्ननमं÷*श्रुवायचप्प्रति*श्रुवायच्ननमंऽआुशुषेणायचाशुर'थायचनमुद्धाराय चावभेदिनेंचनमोविल्म्मिने ॥३४॥

नमोबिल्मिनेचकवृचिनेचनमोव्वृम्मिणेचव्वरूषिनेचनमं रश्युतायेचश्युतसेनायेचनमोदुन्दुब्भ्या्य चाहनन्त्यायचनमोध्रष्णणवे ॥३५॥

नमो'धृष्ण्णवे'चप्प्रमृशायं चानमो'निषुङ्गिणे'चेषुधिमते'चानम'स्तीक्ष्णेषेवेचायुधिने'चानम'÷ स्वायुधायंचसुधन्न्वनेच ॥३६॥ नमुढंसुत्त्यायचुपत्थ्यायचुनमुढंकाट्ट्यायचुनीप्यायचुनमुढंकुल्यायचसरस्यायचुनमोनादेयायचव्वै शन्तायचनमढंकूप्याय ॥३७॥

नमुढंकूप्प्यायचाबृह्चा्यचनमोव्वीद्धचायचातुप्प्यायचनमोमेग्घ्यायचिवद्द्युत्यायचनमो व्वष्प्यायचाव्यष्प्यायचनमोव्यात्त्याय ॥३८॥

नमोव्वात्त्यायचरेष्म्म्यायचनमोव्वास्तुव्व्यायचव्वास्तुपायचनम्**ं**सोमायचरुद्द्रायचनमस्ताम्म्राय चारुणायचनमं÷शङ्गवे ॥३९॥

नमं÷शुङ्गवेचपशुपतंयेचुनमंऽउग्ग्रायंचभीमायंचुनमोंग्ग्रेवधायंचदूरेवधायंचुनमोहन्त्रेचहनीयसे चुनमोव्वृक्षेक्श्योहरिकेशेक्श्योनमंस्तारायं ॥४०॥

नमं÷शम्भुवायंचमयोभुवायंचनमं÷शङ्करायंचमयस्करायंचनमं÷शिवायंचिश्वतरायच ॥४१॥

नमुढंपाय्यांयचावाय्यांयचनमं÷प्प्रतरंणायचोत्तरंणायचनम्स्तीत्थ्यांयचकूल्ल्यायचनम्ढं शष्प्यायचफेन्न्यायचनमं÷सिकत्त्याय ॥४२॥

नमं ÷ सिकत्त्यायचप्रवाह्रवायचनमं ÷ कि छिशालायं चक्क्षयणायं चनमं ÷ कपुर्दिने चपुलस्तये चनमंऽ इरिण्ण्यायचप्प्रपत्थ्यायचनमोव्य्रज्ज्याय ॥४३॥

नमो व्याज्यायचा गोष्ठ्यायचा नम् स्तल्प्यायचा गेह्य्यायचा नमो हृद् स्यायचिन वेष्ण्यायचा नम् दं काष्ट्रयायचगह्व्यरेष्ठायचनमदंशुष्क्याय ॥४४॥

नम्। देशुष्कक्य'। यचहरित्त्यायचानमं ÷पा ७ साव्यायचरजास्यायचानम्। लो प्प्य'। यचो लप्प्यायचनम्ऽकव्यायचसूर्व्यायच-नमं ÷पुण्णीयं ॥४५॥

नमं ÷ णुण्णायं चपण्णंशुदायं चुनमं ऽउद्द्गुरमाणाय चाभिग्घनुते चु-नमं ऽआखिद्ते चंप्प्रखिद्ते चन्मं ऽइषुकृद्द्भ्योधनुष्कृद्द्भ्यं श्च्चवोनमो नमो व ढिकिरिके अध्योदिवाना ७ हृद्दं य अध्योनमो विविच - न्वुत्तके अध्योनमो विविक्षणुत्तके अध्योनमा ऽआनि हिते अधः ॥४६॥

द्रापुऽअन्धं सस्प्यतेद्रिरंद्द्रनीलंलोहित ॥

आसाम्प्रजानामुषाम्पश्रानाम्माभुम्मारोङ्मोचनुढंिकञ्चनाममत् ॥४७॥

इमारुद्द्रायतवसेकपर्दिनेक्क्षयद्द्वीरायप्प्रभरामहेमती?॥

यथाशमसदिद्वपदेचतुंष्पदेविवश्श्वमपुष्ट्रङ्ग्रामेऽअस्मिमन्न'नातुरम् ॥४८॥

याते रद्द्रशिवातन् शिश्वाव्विश्श्वाहां भेषजी ॥

शिवारुतस्यभेषुजीतयानोमृडजीवसे ॥४९॥

परि'नोरुद्द्रस्यहेतिव्वींणक्क् परि'त्त्वेषस्यद्म्मीतर'घायो? ॥ अवस्तिथरामघवद्भ्यस्तन्ष्वमीड्ढ्वस्तोकायतनयायम्ड ॥५०॥ मीढ्ष्ट्रमशिवंतमशिवोनं ÷समनाभव ॥ परमेव्वक्षऽआय्धिन्निधायकत्तिंव्वसानऽआचरिपनाकम्बिब्भदागंहि ॥५१॥ व्विकिरिद्द्रव्विलोहितनमंस्तेऽअस्तुभगवं ॥ यास्ते सहस्र ६ हेतयो न्न्यमस्म्मन्निव पन्तुता ? ॥५२॥ सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तवहेतयं÷॥ तासामीशानोभगव दंपराचीनाम्खाक्ध ॥५३॥ असंङ्वचातासहस्राणियेरुद्द्राऽअधिभूम्म्याम् ॥ तेषां ७ सहस्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥५४॥ अस्म्मिन्न्महत्त्युर्णावेन्तरि'क्क्षेभवाऽअधि'॥ तेषां ७ सहस्रयोजनेऽवधन्न्वांनितन्न्मसि ॥५५॥ नीलंग्ग्रीवाढंशितिकण्ठादिवं छरुद्द्राऽउपंरश्चिताढं ॥ तेषां ७ सहस्रयोजनेऽवधन्न्वांनितन्न्मसि ॥५६॥ नीलंग्ग्रीवाद्शितिकण्ठांद्शार्व्वाऽअध्रश्नमाचरारे ॥ तेषां ७ सहस्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥५७॥ येव्वक्षेष्शिष्पञ्जरानीलंग्ग्रीवाव्विलोहिता । तेषां ७ सहस्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥५८॥ येभुतानामधिपतयोव्विशिखासं ÷ कपुर्दिनं ÷ ॥ तेषां ७ सहस्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥५९॥ येपथाम्पथिरक्क्षयऽऐलबुदाऽआयुर्ब्य्ध'÷ ॥ तेषां ७ सहस्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥६०॥ येतीर्त्थानिप्प्रचरन्तिस्काहं स्तानिषङ्गिणं ÷॥ तेषां ७ सहस्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥६१॥ येन्नेष्विविद्धयन्तिपात्रेष्पिबतोजनान् ॥ तेषां असहस्रयोजनेऽवधन्न्वांनितन्न्मसि ॥६२॥

यऽण्तावंन्तश्च्चभूयां ७सश्च्चिदिशोरुद्राव्वितिस्थरे ॥
तेषां ७सहस्रयोजनेऽवधन्त्वानितन्त्मसि ॥६३॥
नमोस्तुरुद्देक्योयेदिवियेषांव्वर्षमिषवढं ॥
तेक्योदशुप्पाचीर्दश्विक्षणादश्वेष्पप्तीचीर्दशोदीचीर्दशोद्द्वां? ॥
तेक्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयिन्द्वष्मोयश्च्चनोद्द्वेष्टितमेषाञ्जमभेदद्धमढं ॥६४॥
नमोस्तुरुद्देक्योयेन्तिरिक्षेषेषुंव्वातुऽद्दषेवढं ॥
तेक्योदशुप्पाचीर्दश्विक्षणादशप्पृतीचीर्दशोदीचीर्दशोदद्वां? ॥
तेक्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयिन्द्वष्मोयश्च्चनोद्द्वेष्टितमेषाञ्जमभेदद्धमढं ॥६४॥
नमोस्तुरुद्देक्ययोयेपृथिव्व्याँग्येषामन्नुमिषवढं ॥
तेक्योदशुप्पाचीर्दश्विक्षणादशप्पृतीचीर्दशोदीचीर्दशोदद्वां? ॥
तेक्योदशुप्पाचीर्दश्विष्वणादशप्पृतीचीर्दशोदीचीर्दशोद्द्वां? ॥
तेक्योदशुप्पाचीर्दश्विष्वणादशप्पृतीचीर्दशोदीचीर्दशोद्द्वां? ॥
तेक्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयिन्द्वष्मोयश्च्चनोद्द्वेष्टितमेषाञ्जमभेदद्धमढं ॥६६॥
तेक्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयिन्द्वष्मोयश्च्चनोद्देष्टितमेषाञ्जमभेदद्धमढं ॥६६॥
॥ इति रुद्रे पञ्चमोऽध्यायः ॥

अथ रुद्रे षष्ठोऽध्यायः

(पुनर्नमस्ते षोडशकं पठित्वा ।)

एषतेरुद्द्रभागश्सुहस्वस्नामिबकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्द्रभागऽआुखुस्तेपुशुः ॥१॥

अवरुद्द्रमिदीमुह्यवदिवन्त्र्यम्बकम् ॥

यथानोव्वस्यसुस्करद्द्यथानुद्धश्लेयस्करद्द्यथानोव्व्यवसाययात् ॥२॥

नमस्तेरुद्द्रमुन्न्यवऽज्तोतुऽइषवेनमिः ॥

बाहुब्भ्यामुततेनमिः ॥३॥

यातेरुद्द्रशिवातुनूरघोरापापकाशिनी ॥

तयानस्तुन्न्नुशन्त्यमयुगिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥४॥

नतिव्यदाथ्यऽद्रमाजुजानान्त्यद्युष्ममाकुमन्तरम्बभूव ॥

नीहारेणुप्पावृताजल्प्याचासुतृपऽज्यक्थुशास्रश्च्यरित्त ॥४॥

व्विश्वक्र्यमर्माह्य्यजिनष्टदेवऽआदिद्द्गन्युव्वोऽअभवदिद्द्तीयः ॥

तृतीयंःपुत्राजिन्तौषधीनामुपाङ्गब्भुंव्व्युद्धात्त्पुरुज्ञा ॥६॥

कर्मकाण्डः, कक्षा ६

```
मीढ्ष्ट्रमशिवतमशिवोनं ÷स्मनाभव ॥
परमेव्वक्षऽआय्धन्निधायकृत्तिंव्वसानऽआचरपिनांकम्बिब्भदागहि ॥७॥
व्विकिरिदुद्रव्विलोहितनमंस्तेऽअस्तुभगवं ॥
यास्ते सहस्र ६ हेतयो न्त्यमस्म्मन्निव पन्तुता ? ॥८॥
सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तवहेतयं ÷॥
तासामीशानोभगवद्पराचीनामुखाक्षि ॥९॥
असंज्ञचातासहस्राणियेरुद्द्राऽअधिभूम्म्याम् ॥
तेषां ७ सहस्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥१०॥
व्वय ६ सो मव्वतेतवमन स्तनूषु बिब्भ्रत दं॥
प्रजावन्तदंसचेमहि ॥११॥
एषतेरुद्द्रभाग्रसहस्वसाम्बिकयातञ्ज्षस्वस्वाहैषतेरुद्द्रभाग्ऽआखुस्तेपश्रा ॥१२॥
अवरिद्द्रमंदीमह्यवदिवन्त्र्यम्बकम् ॥
यथानोव्वस्यसस्क्करद्द्यथानं ७१ श्रेयंसस्ककरद्द्यथानोव्व्यवसाययात् ॥१३॥
भेषजमसभेषजङ्गवेश्श्वायप्रंषायभेषजम् ॥
स्खम्मेषायमेष्यै ॥१४॥
त्र्यम्बकँ वजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवद्द्धीनम् ॥
उर्व्वारुकिमिवबन्धनान्न्मृत्त्योम्म्कीयमामृतात् ॥
त्र्यम्बकँ वजामहेस् गन्धिम्पतिवेदनम् ॥
उर्व्वारुकमिवबन्धनादितोम्'क्षीयमाम्त'÷ ॥१५॥
एतत्तेरुद्द्रावसन्तेनपरोम्जवतोतीहि ॥
अवंततधन्न्वापिनांकावसंकृत्तिंवासाऽअहिं धसन्न दृशावोतीहि ॥१६॥
त्र्यायुषञ्जमद्रीगने हं कश्यपस्य त्र्र्यायुषम् ॥
यद्देवेष्र्रत्रयाय्षन्तन्नोऽअस्त्रत्रयाय्षम् ॥१७॥
शिवोनामंसिस्वधितिस्तेपितानमंस्तेऽअस्तुमामंहि धसी 🕹 ॥
निवर्त्तयाम्म्याय्षेन्नाद्द्यायप्प्रजननायरायस्प्पोषायसुप्प्रजास्त्वायस्वीर्ध्वीय ॥१८॥
                                  ॥ इति रुद्रे षष्ठोऽध्यायः ॥
```

अथ रुद्रे सप्तमोऽध्यायः

हरिः ॐ उग्ग्रश्च्चंभीम्रश्च्युद्वाृन्तश्च्युधुनिश्च्य ॥
सासह्वाँश्च्यंभियुग्ग्वाचिव्विक्कषपुढ्स्वाहां ॥१॥
अगिगिछहृदयेनाशिनिछहृदयाग्ग्रेणंपश्पृपितिङ्कृत्त्स्नृहृदयेनभ्वंष्युक्क्ना ॥
शाक्वंम्मतांस्त्राक्ष्यामीशानम्मुन्न्युनांमहादेवमान्तढ्पर्शृक्योनोग्ग्रन्देवंव्विनिष्ठुनांव्विसष्ठृहन्ढंशिङ्गीनि कोष्ठश्याक्ष्याम् ॥२॥
उग्ग्रंल्लोहितेनिम्त्रिछसौव्वत्त्येनरुद्द्रन्दौर्व्वत्त्येनन्द्रम्प्रक्तिडेनंमुरुतोबलेनसाद्ध्यान्न्प्रमुदां ॥
भवस्यकण्ठचछिरुद्द्रस्यान्तढंपाःश्व्यम्महादेवस्ययकृष्ठ्व्वस्यव्विनुष्ठुन्पश्पृपतेढंपुरीतत् ॥३॥
व्वाजंश्च्यमेण्यसवश्च्चंमेण्ययितश्च्यमेण्यसितश्च्यमेधीतिश्च्चंमेक्तत्तुंश्च्यमेस्वरंश्च्यमेश्वरं

पुणिश्च्च'मेपानश्च्च'मेव्व्यानश्च्चमेस्'श्च्चमेचित्तञ्च'म्ऽआधी'तञ्चमेव्वाक्क्च'मेमन'श्च्चमे चक्क्ष'श्च्चमेश्श्रोत्र'ञ्चमेदक्क्षंश्च्चमेबल'ञ्चमेयज्ञेन'कल्पन्ताम् ॥५॥

व्विश्यवतंश्च्चक्क्षुरुतिव्विश्यवतोमुखोव्विश्यवतोबाहुरुतिव्विश्यवतंस्पात् ॥ सम्बाहुब्भ्यान्धर्मतिसम्पतंत्रैदुर्चावाभूमीजनयन्देवऽएकं÷॥७॥

कं रच्चमेरश्रवरच्चमेरश्रुतिरं च्चमेज्ज्योतिरं च्चमेस्वरं च्चमेयज्ञेनंकल्प्पन्ताम् ॥४॥

इति रुद्रे सप्तमोऽध्यायः।

अथ रुद्रे अष्टमोऽध्यायः

हरिः ॐ ऋचंव्वाचम्प्रपद्दोमनोयज््ष्पपद्दो-साम्प्राणम्प्रपद्दोचक्क्ष्ट् श्रोत्रम्प्रपद्दो ॥ व्वागोज'÷सहौजोमियप्राणापानौ ॥१॥ यन्नमेच्छिद्द्रव्चक्क्ष्र्षोहृद्द्यस्यमनंसोव्वातितृण्णुम्बृहस्प्पतिमर्मेतद्द्यातु ॥ शन्नोभवत्भुवनस्ययस्पति ॥ ॥ भूक्ष्र्वृद्धस्व्नक्ष्रिवत्वरीण्ण्यमभर्गोदेवस्यधीमिह ॥ भूक्ष्र्वृद्धस्व्नेतत्त्सवितुव्वरीण्ण्यमभर्गोदेवस्यधीमिह ॥ धियोयोन'÷प्प्रचोदयात् ॥३॥

कर्यानिश्च्यत्रऽआभ्वद्तीसदाव्धं सर्खा ॥ कयाशचिष्ट्रयाव्वृता ॥४॥ कस्त्वांसत्त्योमदानाम्म ६ हिष्होमत्तसुदन्धंस 🕹 ॥ दृढाचिदारुजेव्वस् ॥५॥ अभीष्ण दंसखींनामविताजरितृणाम् ॥ शुतम्भवास्यूतिभि : ॥६॥ कयात्त्वन्नर्रकत्याभिष्यमन्दसेव्वृषन् ॥ कर्यास्तोतुब्भ्यऽआभर ॥७॥ इन्द्रोव्विश्श्वंस्यराजित ॥ शन्नोऽअस्तुद्द्रपदेशञ्चतुष्यदे ॥८॥ शन्नोमित्र २ शंव्वरुण ७ शन्नो भवत्त्वरुषमा ॥ शन्नऽइन्द्रोबृहस्प्पतिदंशन्नोविवष्णपुरुरुक्तुम् ॥९॥ शन्नोव्वात'÷पवता७ंशन्न'स्तपत्सुर्ख्यं÷॥ शन्नदंकनिक्त्रदद्देव ?पर्ज्जन्न्योऽअभिवर्षत् ॥१०॥ अहानिशम्भवन्त्न ७ शिं रात्री ७ प्यति धीयताम् ॥ शन्नेऽइन्द्राग्ग्नीभवतामवोभिदंशन्नऽइन्द्रावरुणारातहंळ्या ॥ शन्ने (इन्द्रापूषणाव्वाजसातौशिमन्द्रासोमास्वितायशँ व्यो । ॥११॥ शन्नोदिवीरभिष्ट्रियऽआपोभवन्त्पीतये ॥ शाँ योर्भिस्रवन्तुन ७ ॥१२॥ स्योनापृथिविनोभवानृक्क्षुरानिवेशनी ॥ यच्छान्दंशम्मीसप्प्रथांदं ॥१३॥ आपोहिष्ट्वामंयोभुवस्तानंऽऊर्ज्जेदंधातन ॥ महेरणायचक्क्षसे ॥१४॥ योव'÷शिवत'मोरसस्तस्यभाजयतेहन'÷॥ उशतीरि'वमातर'÷ ॥१५॥

तस्म्माऽअरंङ्गमामवोषस्यक्क्षयायजिन्न्वंथ ॥ आपोजनयंथाचन ७ ॥१६॥ द्यौ?शान्तिरन्तरिक्क्ष ६ शान्ति ÷ प्पृथिवीशान्तिराप् ६ शान्तिरोषेधय ६ शान्ति ÷ ॥ व्वनास्प्पतंयदंशान्तिविवंश्श्वे'देवाञ्शान्तिब्बंह्ममाशान्तिदंसर्व्वं धंशान्तिदंशान्तिरं वशान्तिहं सामाशान्तिरेधि ॥१७॥ दृतेदृ&हंमामित्रस्यमाचकक्षुषासव्वाणिभूतानिसमीकक्षन्ताम्॥ मित्रस्याहञ्चक्क्ष्षासर्व्वाणिभृतानिसमीक्क्षे ॥ मित्रस्यचक्क्ष्षासमीक्क्षामहे ॥१८॥ दृतेदृष्टिहं माज्योक्ते सुन्दृशि जीव्यासुञ्ज्योक्ते सुन्दृशि जीव्यासम् ॥१९॥ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्चिषे ॥ अन्न्याँस्ते'ऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयं÷पावकोऽअस्म्मब्भ्यं ६ शिवोभव ॥२०॥ नमस्तेऽअस्त्विद्च्तेनमस्तेस्तनयित्क्नवे ॥ नमस्तेभगवन्नस्तुयत ¿स्व्÷समीहंसे ॥२१॥ यतोयतदंसमीहंसेततोनोऽअभयङ्क्र ॥ शन्न'÷क्रपप्रजाब्भ्योभ'यन्न&पश्बभ्यं÷ ॥२२॥ स्मित्रियानऽआपऽओषेधयदंसन्तुद्रिमित्रियास्तस्ममैसन्त्योस्म्मान्द्रेष्ट्रियञ्च व्वयन्द्रिष्मग् ॥२३॥ तच्चक्क्षेर्द्देवहितम्प्रस्ताच्छक्क्रम्च्चरत् ॥ पश्श्येमशारद'÷शातञ्जीवेमशारद'÷शात ६ शृण्यामशारद'÷ शतम्प्रब्ब्र'वामशरद'÷शतमदी'ना&स्यामशरद'÷शतम्भूयंश्च्चशरद'÷शतात् ॥२४॥ ॥ इति रुद्रे अष्टमोऽध्यायः ॥ हरिः ॐ स्वुस्तिनुऽइन्द्रोव्वृद्धश्रश्रवादंस्वुस्तिनं÷पूषाव्विशश्ववेदादं ॥ स्वस्तिनस्ताक्क्योऽअरिष्ट्टनेमिद्धस्वस्तिनोबृहस्प्पतिद्र्धात् ॥१॥ विश्श्वानिदेवसवितद्र्रितानिपरासुव ॥ यद्भुद्द्रन्तन्नुऽआसुव ॥२॥ नमं÷शम्भवायंचमयोभवायंचनमं÷शङ्करायंचमयस्क्करायंचनमं÷शिवायंचशिवतरायच ॥३॥

ॐ शान्तिः । ॐ शान्तिः । ॐ शान्तिः ॥

```
(इ) सद्योजातादिमन्त्रपाठः
```

```
ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवेनाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥१॥
वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः
कालाय नमः कलिकरणाय नमो बलिकरणाय नमो
बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः
सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥२॥
अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥३॥
तत्पुरुषाय विद्यहे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥४॥
ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽअस्तु सदाशिवोम् ॥५॥
शिवोनामीसुस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामीहिधसीढं॥
निवर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्द्यायप्पुजनीनायरायस्प्पोषीयसुप्पजास्त्वायसुवीव्यीय ॥६॥
ॐ हरहरहर महादेव। महादेव ॥ महादेव ॥ गहादेव ॥ ॐ साम्बसदाशिवाय नमः॥
```

(घ) शिवस्य विशेषपूजा

पूर्वोक्तविधिना पुनः सङ्क्षेपेण पञ्चामृतस्नानं विधाय वस्त्रम् -

ॐ असौ योऽवसपित नीलग्रीवो विलोहितः । उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्रन्नदृहार्यः सदृष्टो मृडयाति नः ॥ ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे । मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृहचताम् ॥ वस्त्रं समर्पयामि श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः । यज्ञोपवीतम -

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे । अथोयेऽअस्य सत्वानोऽ हन्तेभ्यो करन्नमः ॥ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् । उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ यज्ञोपवीतं सम०।

```
चन्दनम् -
```

```
ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रात्न्योर्ज्याम् ।
याश्च ते हस्तऽइषवः पराता भगवो वप ॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढचं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृहचताम् ॥ चन्दनं सम०।
```

अक्षताः

```
ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यविष्प्रयाऽअधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विष्प्रा निवष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी ॥
अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्तान् सुशोभनान् ।
मया निवेदितान् भक्त्या गृहाण परमेश्वर । अक्षतान् सम0।
```

पुष्पाणि

ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँऽउत अनेशन्नस्य याऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयाऽनीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ पुष्पाणि सम०।

बिल्वपत्राणि

ॐ शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमिङ्गरः।
मा चावापृथिवीऽअभिशोचीम्मान्तिरक्षं मा वनस्पतीन्॥
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारमेकिबल्वं शिवार्पणम्॥ बिल्वपत्रं सम्।

धूपः

ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥ वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढचो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृहचताम् ॥ धूपं सम0।

दीपः

```
ॐ परिते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः ।
अथोयऽइषुधिस्तवारेऽअस्म्मिन्नधेहि तम् ॥
आज्यं च वर्तिसंयुक्तं विह्नना योजितं मया ।
दीपं गहाण देवेश त्रैलोक्यं तिमिरापहम ॥ दीपं दर्शयामि ।।
```

नैवेद्यम्

```
ॐ अवतत्य धनुष्ट्व ६ सहस्राक्ष शतेषुधे ।

निशीर्य शल्ल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव ॥

शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् ।

उपहारं समानीतं नैवेद्यं प्रतिगह्यताम् ॥ नैवेद्यं सम् ।।
```

आचमनीयम्

```
एलोशीरलवङ्गादिकर्पूरादिसुवासितम् ।
प्राशनायाऽऽहृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥ आचमनीयं सम०।
```

ताम्बूलम्

```
ॐ नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामृत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ॥
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ताम्बूलं सम०।
```

दक्षिणा

```
ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ दक्षिणां सम्।
```

नीराजनम्

```
ॐ आ रात्रि पार्थिवधरजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदा ७ सि बृहती वितिष्ठसऽआ त्वेषं वर्तते तमः॥
```

```
🧇 चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्यदग्निस्तथैव च ।
      त्वमेव सर्वज्योतींषि तेन नीराजयाम्यहम् ॥ नीराजनं सम्।
कर्पुरारार्तिक्यम्
      🧇 इद&हविः प्रजननम्मेऽअस्त् दशवीर&सर्वगण७स्वस्तये ।
      आत्मसनि प्रजासनि पश्सनि लोकसन्यभयसनि ।
      अग्निः प्रजां बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयो रेतोऽअस्मास् धत्त ॥
      कदलीगर्भसंभूतं घनसारं मनोहरम्।
      आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥ [कर्पूरारार्तिक्यं सम्। साम्बसदाशिवाय नमः]
पदक्षिणा
      🤏 मानो महान्तम्त मानोऽअर्भकम्मानऽउक्षन्तम्तमानऽउक्षितम् ।
      मा नो वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्रियास्तन्वो रुदरीरिषः ॥
      यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकतानि च।
      तानि सर्वाणि नश्यन्त प्रदक्षिणपदे पदे ॥ [प्रदक्षिणां सम् । साम्बसदाशिवाय नमः]
      इत्यूपचारान्समर्प्य ।
      पुष्पाण्यादाय बद्धाञ्जलिः प्रार्थयेत् -
      🕉 मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
      मा नो वीरानुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ।
      नानास्गन्धिपुष्पाणि देशकालोद्भवानि च ॥
      पृष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥
      आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
      पूजां चैव न जानामि प्रसीद परमेश्वर ॥
      विधिच्यतं भक्तिहीनम्पचारविवर्जितम् ।
      यत्पूजितोऽसि भगवंस्तेनापीश प्रसीदसि ॥
      ग्रहपीडाः प्रशाम्यन्त् भृतबाधा विनश्यत् ।
      ज्वरादीनखिलान् रोगान् विनश्यन्त् त्वदीक्षया ॥
      शिवशंकर विश्वात्मन् भूतेश्वर दयामय ।
```

```
भवत्स्मरणमात्रेण रक्ष नः पक्षवर्जितान् ॥
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारिवन्दे भवं भवानीसिहतं नमािम ।
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमिविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे । श्री महादेव । शम्भो । ॥
इति क्षमापयेत् ।
क्षमाप्रार्थनापुरःसरं मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयेत् ।
॥ इति ॥
```

- (ङ) उत्तराङ्गकर्म
- (अ) अर्घ्यनिवेदनम्

```
ॐ रक्ष रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्यरक्षक ।
भक्तानामभयंकर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्त् सदा मम ॥
```

[अर्घ्यं निवेदयामि० साम्बसदाशिवाय नमः।]

(आ) पूर्णपात्रम्

रौप्यं ताम्रं मृण्मयं ता यत्संभवं पात्रं फलवस्त्रद्रव्यसितं षट्पञ्चाशदिधकद्विशतमुष्टि (२५६) परिमितं बहुभोक्तृपुरुषाहारपरिमितं वा तण्डुलयुतं पूर्णपात्रमादाय पूर्णादवीति पूर्णपात्रं ब्राह्मणं च त्रिः सम्पूज्य -

```
पूर्णादिवि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जिशतक्रतो ॥
```

ॐ अद्येहेत्यादि पूर्वसङ्कल्पसिद्धिरस्तु श्रीपरमेश्वरसाम्बसदाशिवप्रीतये कृतस्य दीपगणे श-कलशपूजनपूर्वकं श्रीसाम्बसदाशिवोपरि अविच्छिन्नजलधारया (दुग्धादिधारया वा) (अमुक) सङ्ख्याकब्राहमणद्वारा कृतस्य (अमुक) रुद्राभिषेककर्मणः ब्राहमणद्वारा कृतस्य

शप्तशतीपाठकर्मणश्च अपूर्णस्य पूरणार्थम् इदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतं यथानामगोत्राय यथानामशर्मणे ब्राह्मणाय पूर्णपात्रत्वेन तुभ्यमहं संप्रददे । इति सङ्कल्प्य पूर्णपात्रं ब्राह्मणाय दद्यात् ।

(इ) दक्षिणासङ्कल्पः

ॐ अद्येह पूर्वसङ्कल्पसिद्धिरस्तु ... मम श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतिद्वारा सर्वाभ्युदयावाप्तये (अमुक) कामनासिद्धये कृतस्य (अमुक) रुद्राभिषेककर्मणः साङ्गतायै (सप्तशतीपाठकर्मणश्च साङ्गतायै) इमां दक्षिणां यथानामदैवतां नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाभागं विभज्य यथाकाले दातुमहं जले उत्सृजे ।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् । त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥

(ई) विसर्जनम्

गन्धपुष्पाक्षतादिभिर्देवान् विसर्जयेत् -

ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय पार्थिवीम् । इष्टकामप्रसिद्धचर्थं पुनरागमनाय च ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ सुरेश्वर ॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । मन्त्रपूजां न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ इति कर्मेश्वरार्पणम् - ॐ कायेन वाचा० ॥

अभिषेक:

हरिः ॐ द्यौः शान्तिरन्तिरक्ष ७ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्व्रहमशान्तिः सर्व ७ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा माशान्तिरेधि ॥

```
तच्चक्षर्देव हितम्परस्ताच्छक्रमच्चरत । पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतिध्शणयाम शरदः
शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भ्यश्च शरदः शतात् ॥
      स्वस्तिनऽइन्द्रो वद्धश्रवाः स्वस्तिनः पृषा विश्ववेदाः ।
      स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द्दधात्॥
      विश्वानि देवसवितर्द्रितानि परास्व । यद्भद्रं तन्नऽआस्व ॥
                                        ॥ इति ॥
आशिषमन्त्रपातः
गन्धपुष्पप्रसादादिकं हस्तेन गृहीत्वा -
हरिः 💞 आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शुरऽइषव्योतिव्व्याधी महारथो
जायतान्दोग्धीधेनुर्व्वोढानड्वानाशः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य
वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षत् फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः
कल्पताम् ॥
      दीर्घायुस्तऽओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्।
      अथो त्वन्दीर्घायुर्भृत्वा शतवल्शा विरोहतात् ॥
      पुनस्त्वादित्या रुद्रावसवः सिमन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वस्नीथ यज्ञैः।
      घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्त् यजमानस्य कामाः ॥
      मनसः काममा कृतिं वाचः सत्यमशीय।
      पशुना ७ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयताम् ॥
इत्याशिषमन्त्रान्पितवा यजमानाय प्रसादादिकं दद्यात -
      🕉 श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते ।
      धनं धान्यं पश्ं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायः॥
      ॐ स्वस्त्यस्त् ते कृशलमस्त् चिराय्रस्त्
      गोवाजिहस्तिधनधान्यसमृद्धिरस्त्
```

॥ इति ॥

ऐश्वर्यमस्त् विजयोऽस्त् रिप्क्षयोऽस्त्

सन्तानवृद्धिसहिता हरिभक्तिरस्त् ॥

प्रसादवितरणम्

ततो यजमानहस्ते रक्षासूत्रं बध्नीयात् -

येन बद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
 तेन त्वामि बध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥
 त्वं यिवष्ठ दाशुषो नृंः पाहि शृणुधी गिरः ।
 रक्षा तोकम्तत्मना ॥

॥ इति रुद्राभिषेकविधिः ॥

शब्दार्थाः

स्वासनम् = आफ्नो आसन

वरणम् = यान्निक कार्य गर्ने ब्राहमण नियुक्त गर्नु

पुण्याहवाचनम् = चार वा पाँच ब्राहमणद्वारा "शुभ होस्" भनी यजमानलाई मन्त्र पढेर

आशीर्वाद दिनु

दीपः = कुनै पनि कर्मको साक्षीका रूपमा बालिने बत्ती

सर्वोषधः = कूट, बेसार, जटामसी, चुत्रो, मुरा, श्रीखण्ड, शिलाजीत, बोभ्हो, चाँप

मोथे मिलारको औषधीको धुलो

पञ्चरत्नानि = सून, हिरा, मूगा, पूँवालो र मोती

सप्तमृत्तिका = घोडाको टापको, हात्तीको पाइलाको, धिमराको गोलाको, चौबाटाको,

दहको पिँधको, राजाको ढोकाको र गाईको गोठको माटोहरू

पञ्चपल्लवानि = वर, पिपल, आँप, डुम्री र पाखरीका पातहरू

वस्त्रयुग्मेन = जोडा कपडाले (रातो र सेतो कपडाले)

रक्षाबन्धनम् = जौ, दुबो, सर्स्यूं, चन्दन, गोबर र दही मिसार्गर पूजा गरी मन्त्रिरको

तीन डोरा भरको काँचो धागो

कलशस्कन्धप्रदेशे = कलशको घाँटीमा

प्रधानदेवता = मुख्य देवता

उत्तराङ्गकर्म = प्रधान कर्म सकेपिछ गरिने अङ्ग कर्म

अभ्यासः

१. अधःप्रदत्तान् प्रश्नान् समुत्तरयत

- १. पुण्याहवाचनसङ्कल्पवाक्यं लिखत् ।
- २. पुण्याहवाचनमन्त्रप्रतीकानि कानि ? सर्वाणि लेख्यानि ।
- ३. दीपपूजनमन्त्रं लिखत ।
- ८. गणेशप्रार्थनामन्त्रं पूरयत ।
- ध. कलशस्कन्धप्रदेशे सम्पूजनीया देवताः काः ?
- ६. शिवस्य ध्यानमन्त्रः कः ?
- ७. गणानान्त्वा । सुषारिधः । नमस्ते । त्र्यायुषम् । रुषु त्रयो मन्त्राः सस्वरं प्रपूरणीयाः ।
- ट. पूर्णपात्रपूजनमन्त्रः कः ?
- ९. प्रसादग्रहणमन्त्रं लिखत ।
- १०. पुण्याहवाचने कैः कैराशीर्वचोभिर्यजमानस्य कल्याणकामना क्रियते ?
- ११. पुण्याहवाचने कति कीदृशान् ब्राहमणान् वृणुयात् ?
- १२. पुण्याहवाचनान्ते ब्राहमणाः किं कुर्वन्ति ?
- १३. दीपपूजनविधिं लिखत ।
- १४. दीपप्रार्थनाश्लोकान् यथाग्रन्थं लिखत ।
- १५. गणेशपूजनसङ्कल्पवाक्यं लिखत ।
- १६. गणेशपूजने ९६र्यसहितं फलादिकमादाय पठनीयान् मन्त्रान् लिखत ।
- १७. गणेशपूजने प्रयुक्तानि वस्तुनि कानि ?
- १८. गणेशावाहनवाक्यं सम्बोधनपर्दैर्लेखनीयम् ।
- १९. गणेशप्रार्थनाश्लोकान लिखत ।
- २०. कलशस्वरूपं विलिख्य स्थापनदिग्भागः पुदर्शनीयः ।
- २१. कलशे तीर्थजलप्रक्षेपण-पञ्चरत्न-सप्तमृत्तिकाप्रक्षेषणमन्त्रान् लिखत ।
- २२. कलशस्कन्धप्रदेशे पूजनीयाः देवाः के ?
- २३. रक्षासूत्रे स्थापनीयानि वस्तुनि कानि ?

- २४. पोटलिकायां स्थापनीयानि वस्तुति कानि ?
- २५. नारायणकवचे पठिताः श्लोकाः के ?
- २६. नारायणकवचपठनान्ते पोटलिकाया उपयोगिता का ?
- २७. रक्षासुत्रपूजनमन्त्रान् लिखत ।
- २८. कलशस्कन्धप्रदेशे के के देवाः पूज्यन्ते ?
- २९. शिवस्य पञ्चामृतस्नानविधिं लिखत ।
- ३०. शिवस्य पञ्चमुखनामानि कानि ?
- ३१. मधुरनानमन्त्रः कः ?

२. अशुद्धीर्निराकुरुत

- (क) क्षीरस्नानस्य मन्त्रो घृतं मिमिक्षे अस्ति ।
- (ख) दिधरनानस्य मन्त्र अपा**७ं**रसम् अस्ति ।
- (ग) घृतस्नानस्य मन्त्र आप्यायस्व अस्ति ।
- (घ) शर्करास्नानस्य मन्त्रो दधिक्राब्गः अस्ति ।

३. शब्दान् पृथक्कुरुत

(क) सर्वोषधः -

(ख) साम्बसदाशिवः -

(ग) याऽओषधीरिति -

(घ) स्पृशन्नारायणकवचम् -

(ङ) अधोलिखितम् -

(च) शुद्धोदकम् -

(छ) कर्पूरारार्तिक्यम् -

रुद्रीपूजाका लागि आवश्यक सामग्री

पूजाको सामग्री - तामाको घल्चा, चोखो जल, जौ, तिल, चन्दन, अबिर, केसरी, सिन्दूर, अक्षता, कुमकुम, फूलमाला, बेलपत्र, तुलसीपत्र, धूप, दीप, नैवेद्य, वस्त्र, जनै, सुपारी, पान, भेटी, निरवल, पञ्चमेवा (खाने मसला) कपूर, पञ्चामृत (छुट्टाछुट्टै), अष्टसुगन्ध, कुश, पञ्चपल्लव, दुबो, काँचो धागो आदि ।

पूजाको भाँडा, गणेशपूजाको सरजाम, रक्षाबन्धनको सरजाम, रेखी हाल्ने पिठो, धान, चामल, बाटा, जलहरी, त्रिकुटी, थाली, कलश, देवता, पूर्णपात्र, गोदान, भेटी, ब्राह्मणवरणको सामान, पार्वतीलाई सौभाग्यको सामान, ब्राह्मणभोजन, दिक्षणा, शिवलिङ्ग, बृहज्जलाधारपात्र आदि ।